₹ 20
www.kewalsach.com
निर्भीकता हमारी पहचान
दिसम्बर 2025

केवल सच

हिन्दी मासिक पत्रिका

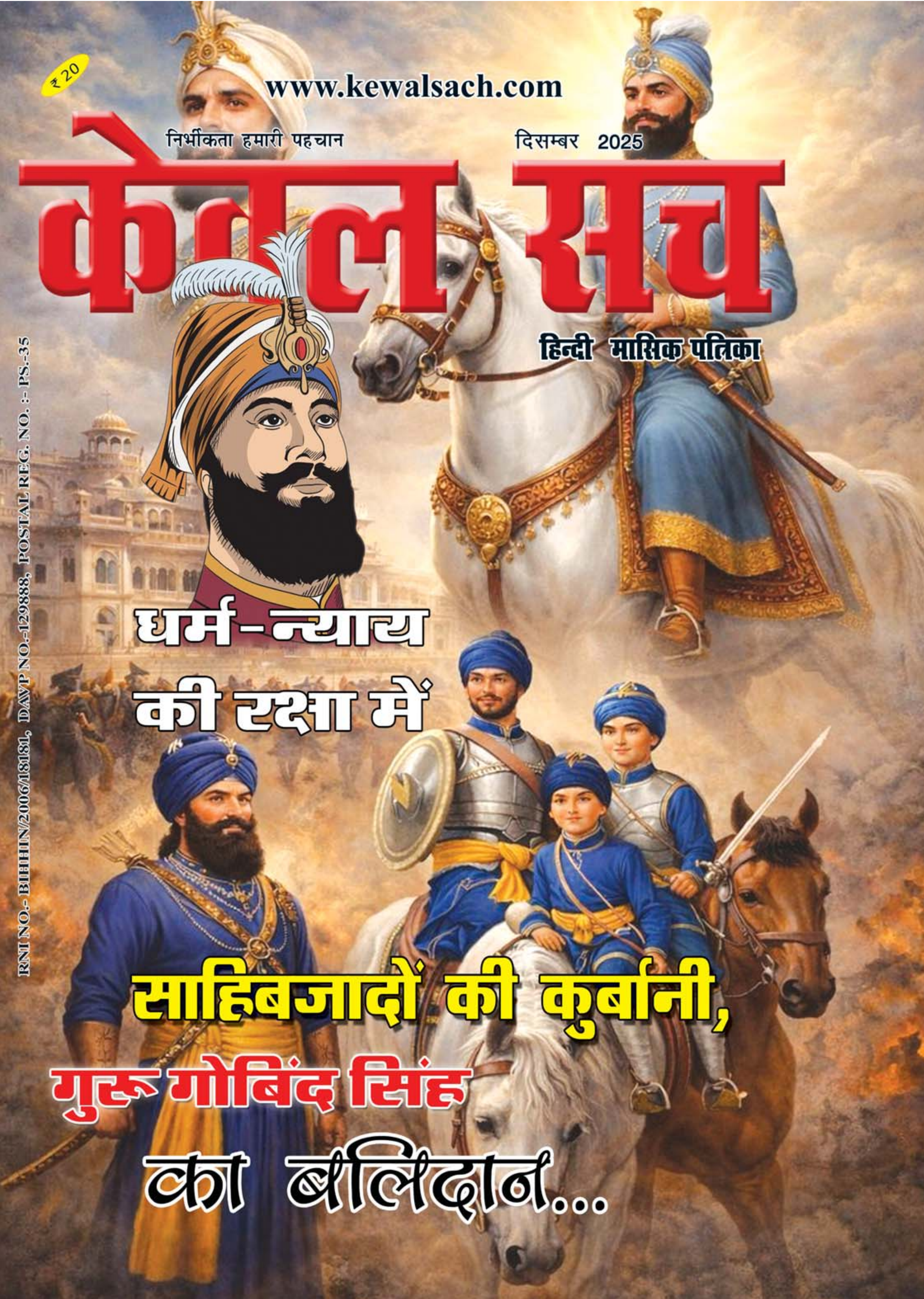

धर्म-न्याय की रक्षा में

साहिबजादों की कुर्बानी, गुरू गोबिंद सिंह का बलिदान...

RNI NO.- BIHHIN/2006/18181, DAVP NO.-129888, POSTAL REG. NO. :- PS.-35

एस. के. मंडल ग्रुप ऑफ इंस्टीच्यूशन्स

प्रधान कार्यालय: रोड न.-3, पूर्वी पटेल नगर (गांधी मूर्ति के नजदीक), पोस्ट+थाना- शास्त्रीनगर, पटना-800023
फोन: 0612-2283169, मो. 8757563221, 810233966, ईमेल: krishna54002@gmail.com , वेबसाइट: www.skmgi.in

यहाँ है हर करियर की राह –
नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी, आईटी, मैनेजमेंट और इंजीनियरिंग।

OUR GROUP OF COLLEGES

KRISHNA INSTITUTE OF IT & MANAGEMENT
Recognized By All India Council for Technical Education (AICTE), New Delhi & Aryabhatta Knowledge University, Patna
उपलब्ध कोर्स
BCA | BBA | BA-JMC
ग्राम+पोस्ट- सिंघिया खुर्द, थाना- कर्पूरीग्राम, जिला- समस्तीपुर, पिन- 848113
मो. : 9031074586, 9031074587, 9031074588, 9031074589

KRISHNA INSTITUTE OF TECHNOLOGY
Approved by All India Council for Technical Education (AICTE), New Delhi & Affiliated to State Board of Technical Education (SBTE), Patna & Aryabhatta Knowledge University, Patna
उपलब्ध कोर्स
CIVIL ENGINEERING | ELECTRONIC ENGINEERING | MECHANICAL ENGINEERING | ARTIFICIAL INTELLIGENCE (AI) | COMPUTER SCIENCE AND ENGINEERING | BCA | MCA | BBA | MBA | MBA (FINANCE) | MBA (MARKETING MANAGEMENT)
ग्राम+पोस्ट- सिंघिया खुर्द, थाना- कर्पूरीग्राम, जिला- समस्तीपुर, पिन- 848113
मो. : 9693712377, 9031074581

KRISHNA INSTITUTE OF NURSING AND PARAMEDICAL SCIENCES
Recognised by Health Department Govt. of Bihar, Patna & Pharmacy Council of India, New Delhi & Affiliated to Bihar Nurses Registration Council, Patna, Aryabhatta Knowledge University, Patna & Bihar University of Health Sciences, Patna
उपलब्ध कोर्स
A.N.M | G.N.M | Post Basic B.Sc Nursing | B.Sc Nursing | B.P.T. | B.O.T. | O.T.ASSISTANT | B.H.M. | C.M.D. | D.M.L.T. | D.Pharm | B.Pharm
ग्राम+पोस्ट- सिंघिया खुर्द, थाना- कर्पूरीग्राम, जिला- समस्तीपुर, पिन- 848113
मो. : 9031074581, 9031074582, 9031074584, 9031074585

VIDYAPATI INSTITUTE OF HIGHER EDUCATION
Recognised by Health Department Govt. of Bihar, Patna, Affiliated to Bihar Nurses Registration Council, Patna, Aryabhatta Knowledge University, Patna & Bihar University of Health Sciences, Patna
उपलब्ध कोर्स
A.N.M | G.N.M | Ophthalmic Assistant | B.M.L.T. | B.P.T. | B.O.T. | O.T.ASSISTANT | B.H.M. | D.M.L.T. | D.ECG | C.M.D.
ग्राम+पो.- कामरांव, थाना- दलसिंहसराय, जिला-समस्तीपुर -848114
मो. : 7859073609, 9031800471

KRISHNA INSTITUTE OF HIGHER EDUCATION
Recognized by Health Department Govt. of Bihar, Patna, Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna & Bihar University of Health Sciences, Patna
उपलब्ध कोर्स
B.P.T. | B.H.M. | B.O.T. | B.M.L.T. | D.M.L.T. | C.M.D. | O.T.ASSISTANT
आदर्श कॉलोनी, प० पटेल नगर, बाबा चॉक के नजदीक, पटना- 800024
मो. : 6299848344, 9771113038, 8709323736, 9931223196

KRISHNA INSTITUTE OF HIGHER EDUCATION
Recognised By: Health Department Govt. of Bihar, Patna and Affiliated to Bihar Nurses Registration Council, Patna, Aryabhatta Knowledge University, Patna & Bihar University of Health Sciences, Patna
उपलब्ध कोर्स
A.N.M | G.N.M | B.Sc Nursing | B.P.T | B.H.M | D.M.L.T | C.M.D
ग्राम + पोस्ट – मुरलीगंज, जिला- मधेपुरा- 842122
मो. : 7644085206 , 6206095356 , 7979974939

KRISHNA INSTITUTE OF PARAMEDICAL SCIENCES
Recognized By Health Department Govt. of Bihar, Patna, Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna & Bihar University of Health Sciences, Patna
उपलब्ध कोर्स
BPT | BHM
प्रोफेसर कॉलोनी, रामबाग, पो.- पूर्णिया, थाना- सदर, जिला- पूर्णिया- 854301
मो. : 92414 06623, 8292306454, 6205999576

SOUMYA KRISHNA ANM TRAINING SCHOOL
Recognised By: Health Department Govt. of Bihar, Patna, Affiliated to Bihar Nurses Registration Council, Patna & Bihar University of Health Sciences, Patna
उपलब्ध कोर्स
A.N.M. (Auxiliary Nurse Midwife)
आदर्श कॉलोनी, प० पटेल नगर, बाबा चॉक के नजदीक, पटना- 800024
मो. : 6299848344, 8709323736, 9771113038

- अनुभवी एवं योग्य फैकल्टी
- आधुनिक लैब्स एवं सुविधाएँ
- 100% प्लेसमेंट सहायता
- छात्रवृत्ति परीक्षा की सुविधा
- स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड की सुविधा
- रैगिंग-फ्री कैंपस

90% क्लास करने वाले छात्र-छात्राओं को 100% कैम्पस प्लेसमेंट की गारंटी

शाखा कार्यालय: मोहनपुर, (मुसरीघरारी-समस्तीपुर मेन रोड) समस्तीपुर-848101
7739662412, 7646042412, 9031074586, 9031074587, 9031074588, 9031074589
krishna54002@gmail.com www.skmgi.in

B.Sc नर्सिंग (Bachelor of Science in Nursing) 4 साल का एक नर्सिंग कोर्स है। B.Sc नर्सिंग स्टाप नर्स का काम है डॉक्टर के सहायक के रूप में काम करते हुए मरीजों की देखभाल करना, उनकी दवाइयों का ख्याल रखना। B.Sc नर्सिंग करने के बाद आप को बहुत आसानी से हेल्थ सेक्टर में नौकरी मिल जाएगी। इस कोर्स को करने के बाद आपको गवर्नमेंट और प्राइवेट दोनों सेक्टर में बहुत आसानी से जॉब मिलती है। नर्सिंग में ग्रेजुएशन करने के बाद आप साइकोलॉजी, हॉस्पिटल मैनेजमेंट, पब्लिक हेल्थ और सोशल वर्क जैसे क्षेत्रों में अपना करियर बना सकते हैं।

योग्यता	उम्र	कोर्स की अवधि
इंटर उत्तीर्ण (Scince with Bio.)	न्यूनतम 17 वर्ष	4 वर्ष

जी.एन.एम. कोर्स एक ऐसा कोर्स है जो आपको शहर के अस्पतालों, सदर अस्पतालों और अच्छे निजी अस्पतालों में उच्च सम्मान और वेतन के साथ सक्षम नर्सिंग पेशेवर बनाता है। यह कोर्स ए.एन.एम. से बेहतर पद है और यहां आप ऑपरेशन थिएटर और अस्पताल से जुड़े अन्य कार्यों के प्रभारी बन सकते हैं। इस पाठ्यक्रम की मांग बहुत अधिक है।
सरकारी जिला स्तरीय अस्पताल, सदर अस्पताल, अनुमंडल एवं रेफरल अस्पताल में यह प्रमाण पत्र मिलने के बाद नौकरी मिल सकती है।

योग्यता	उम्र	कोर्स की अवधि
इंटर उत्तीर्ण	न्यूनतम 17 वर्ष	3 वर्ष

यह कोर्स केवल छात्राओं के लिए है। आप अपने शहर या ब्लॉक में एक अच्छी नौकरी चाहते हैं, तो यह कोर्स आपके लिये है जो आपको अस्पतालो में नर्सिंग स्टाफ के रूप में काम करने का सम्मान देता है। इस कोर्स में अधिकतम रोजगार क्षमता है और यह आपको कही सिघ्र ही सरकारी नौकरी दिला सकता है। आप किसी भी नर्सिंग होम और क्लिनिक में भी नौकरी पा सकते हैं, एएनएम कोर्स सर्टिफिकेट धारक को नौकरी के लिए इंतजार नहीं करना पड़ेगा क्योंकि इसमें बहुत ज्यादा वैकेंसी है।

योग्यता	उम्र	कोर्स की अवधि
इंटर उत्तीर्ण	न्यूनतम 17 वर्ष	2 वर्ष

ग्राम–रहीमपुर रूदौली, पो0– हरपुर एलौथ, थाना– मुफस्सिल, जिला– समस्तीपुर, बिहार–848101

मो. : 7296019834, 6201114906, 8709952310, 9065601872

info@moniranigroup.com www.moniranigroup.com

CLEANING SERVICES

INFECTION CONTROL: THE PRIMARY GOAL IS TO ELIMINATE PATHOGENS, ESPECIALLY IN HIGH-RISK AREAS LIKE ICUs, ORs, AND PATIENT ROOMS.

SPECIALIZED TRAINING: STAFF USE SPECIFIC TECHNIQUES (LIKE TERMINAL CLEANING) FOR DIFFERENT ZONES (E.G., LOW-TOUCH VS. HIGH-TOUCH SURFACES).

WASTE MANAGEMENT: PROPER HANDLING AND DISPOSAL OF MEDICAL WASTE (BIOHAZARDS).

SCOPE: COVERS ALL AREAS–CLINICAL (PATIENT WARDS, LABS) AND PUBLIC (LOBBIES, RESTROOMS).

GARDENING AND BEUTIFICATION

LAUNDARY SERVICES

PROCESSING TEXTILES: BEDDING, TOWELS, BLANKETS, PATIENT GOWNS, STAFF UNIFORMS (SCRUBS, COATS), CURTAINS, KITCHEN LINENS, AND SOMETIMES SURGICAL GOWNS.

CORE TASKS: COLLECTION, SORTING (BY CONTAMINATION LEVEL), WASHING, DRYING, IRONING, FOLDING, MENDING, AND DELIVERY

HYGIENE FOCUS: DISINFECTION AND SANITIZATION ARE PARAMOUNT TO CONTROL MICROBIAL CONTAMINATION AND PREVENT HEALTHCARE-ASSOCIATED INFECTIONS (HAIs).

Chandmari Road, Kankarbagh, Patna – 800020
Mob. No. - 7564027857
Email Id – rsoutsourcing591@gmail.com

R.S. OUTSOURCING.

HIMALAYA GROUP OF INSTITUTION
PATNA
HIMALAYA GROUP OF INSTITUTIONS
Affiliated To :- Aryabhatta Knowledge University, Patliputra University, M.M.H.A & P.University,
Bihar University of Health Science
Approved By :- N.M.C., B.C.I., P.C.I., I.N.C., N.C.I.S.M., A.I.C.T.E., N.C.T.E., N.C.V.T., (Govt. of India),
SBTE, BSEB, BNRC, Health Department (Govt. of Bihar)
MIG-44, Opp-Bata Show Room, Near Salimar Sweets, Kankarbagh, Patna-20
"अपनी क्षमताओं पर विश्वास करो, और दुनिया को अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाओ।"
Course Offered :
Medical Course
M.B.B.S. | B.A.M.S
Educational Courses
B.Ed.
D.El.Ed
Pharmacy Courses
M.Pharm | B. Pharm
D.Pharm
Professional Courses
M.B.A. | M.C. A.
B.B.A. | B.C. A.
Dip. In Engg. Courses
Dip. in Civil Engineering
Dip. in Electrical Engineering
Dip. in Mechanical Engineering
Dip. in Computer Science Engineering
100% Placement Assistance
Law Courses
LL.M | LL.B | B.A. LL.B
B.B.A. LL.B
ITI Courses
Electrician | Fitter
Electronics | Mech. Disels
Nursing Course
ANM | GNM
B.Sc. Nursing
P.B. B.Sc. Nursing
M.Sc. Nursing
Paramedical Course
Diploma | Degree
Master Degree
Lateral Entry
बिहार स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड की सुविधा उपलब्ध
2025 SESSION
ADMISSION
OPEN
Take Admission Now Or Get more Information At -
Cont. : 9031624635, 0612-2355110
Website : www.himalayagroupofinstitutions.com

शाही Swad Ka...
शाही Andaz...!
Sudha ICE-CREAM
सुधा
वादा शुद्धता का
COMFED
पटना डेयरी प्रोजेक्ट
हेल्पलाईन नं. :- 06204381026
फोन : 0612-2253316
E-mail : vpmu.mkt@gmail.com, vpmunin@gmail.com | Ph : 0612-2252553, 2252542

निर्भीकता हमारी पहचान
केवल सच
हिन्दी मासिक पत्रिका

अपराध की प्रमुख जड़ है
जमीन

भारत की भूमि देव भूमि के रूप में पहचान रखती है लेकिन जब यही भूमि किसी की जान लेने लगे तो लोग भूमिहीन रहकर अपनी जान बचाना ही हितकर साबित होता है। कम पूंजी और 100 गुणा लाभ वाला व्यवसाय जमीन की खरीद-बिक्री का हो चुका है। अपराध करने वाले भी विवादस्पद जमीन का एग्रीमेंट कराकर अपनी औकात के दम पर जमीन बेचने में कामयाब हो जाते हैं और नीरिह किसान या जमीन मालिक कानूनी विवशता एवं पुलिस का सहयोग नहीं मिलने की वजह से अपराधियों के सामने घुटने टेक देता है। आज अधिवक्ता और पुलिस ही अपराधियों के साथ मिलकर कमजोर व्यक्ति को न्याय दिलाने के नाम पर अपराधियों के सामने सेरेंडर करने पर मजबूर कर देते हैं। आज बढ़ते हत्या का प्रमुख कारण पर समीक्षा करने पर यह ज्ञात होगा कि मामला जमीन से जुड़ा हुआ था। वहीं भूमि एवं राजस्व विभाग के कर्मचारी, आर. ओ. और सी.ओ. की अवैध कमाई किसी भी जिला के डीएम और एसपी से कई गुणा अधिक होती है। जमीन का दाखिल - खारिज के नाम पर जिस प्रकार का डिमांड इन तीनों के द्वारा किया जाता है उससे भी अपराध में इजाफा हो रहा है। निबंधन एवं भूमि राजस्व विभाग के पदाधिकारी एवं कर्मचारी का तबादला के लिए लोग करोड़ों रूपये देने को तैयार हैं जैसी खबरें अखबार की सुर्खिओं में प्रकाशित हो चुकी है और हत्या का दौर भी जारी है ।

ब्रजेश मिश्र, संपादक
8340360961, 9431073769

जर-जोरू और जमीन जोड़ के, नहीं तो कोई और के वाली कहावत 21वीं सदी के डीजीटल युग में भी चरितार्थ हो रही है। भारत देश में बढ़ते अपराध का सबसे प्रमुख कारण जमीन है। एक तरफ शिक्षित बढ़ती बेरोजगारी और दूसरी तरफ बढ़ती जमीन की किमत आसमान छू रही है जिसकी वजह से पॉकेटमार भी जमीन की दलाली करने लगता है और कमजोर लोगों से औने'-पौने भाव में रंगदारी करके जमीन बेचने का एग्रीमेंट करा लेता है। चोर-डकैत, ठग-रंगदार के साथ हत्यारा ऐसी हरकत करता है तो आश्चर्य नहीं होता लेकिन जब सरकार के कर्मचारी, अधिकारी और राजनेता ऐसी हरकत को अंजाम देने लगे तो बढ़ते अपराध से सरकार एवं कानून भी नहीं बचा सकता। यह कहना गलत नहीं है कि बिहार जैसे राज्यों में जमीन विवाद अपराध की एक प्रमुख जड़ है, क्योंकि जमीन और संपत्ति से जुड़े मामलों की संख्या बहुत अधिक है, और इनमें से कई विवादों में हत्याएं भी होती हैं। भूमि विवादों से जुड़े मामलों के बढ़ने का कारण विभिन्न भूमि संबंधी कानूनी जटिलताएँ, अवैध कब्जा और संपत्ति को लेकर बढ़ती मांग है। सबके अलग-अलग विचार हैं पर यह तो सत्य है कि निर्धनता ही अपराध का मूल कारण है। बेरोजगार व्यक्ति भिक्षावृति, आवारागर्दी, चोरी, लूट और डकैती जैसे अपराध करता है। कुछ भी लिखा जा सकता है। जन्म से वह निरपराधी पैदा होता है पर सामाजिक परिस्थितियां उसे अपराध करने की ओर प्रवृत्त करती हैं। पहले, जमीन विवादों को दंड प्रक्रिया संहिता (CRPC) की धारा 145 के तहत निपटाया जाता था। अब यह प्रावधान BNS की धारा 164 में शामिल है। प्रॉपर्टी और पैसों का विवाद दीवानी (civil) मामला है, जिसका निपटारा अदालत के माध्यम से ही हो सकता है। पुलिस को ऐसे मामलों में मध्यस्थता करने या समझौता करवाने का अधिकार नहीं है। पुलिस का ऐसा हस्तक्षेप कानून की अवहेलना माना जाएगा। भारत में लिमिटेशन एक्ट 1963 के तहत, अगर कोई व्यक्ति आपकी निजी प्रॉपर्टी (जमीन, मकान, या दुकान) पर लगातार 12 साल तक कब्जा रखता है और आप, यानी असली मालिक, इस दौरान कोई विरोध या कानूनी कदम नहीं उठाते, तो वो व्यक्ति उस प्रॉपर्टी का कानूनी मालिक बन सकता है। जमीन विवादों का अपराध से गहरा संबंध होता है, जहाँ अवैध कब्जे, धोखाधड़ी, मारपीट और हत्याएँ आम हैं। इन विवादों के समाधान के लिए एक अनुभवी वकील की सलाह लेकर दीवानी कोर्ट में केस दायर करना चाहिए या पुलिस में FIR दर्ज करवानी चाहिए। बिहार जैसे राज्यों में भूमि सर्वे और ऑनलाइन शिकायत पोर्टल के माध्यम से भी विवादों को हल करने के प्रयास किए जा रहे हैं। सरकार की तमाम प्रयास के बावजूद भूमि राजस्व विभाग के कर्मचारी, सीआई, आरओ और सीओ के लालची रवैय्ये की वजह से आमजनता में विभाग के प्रति रोष बढ़ता जा रहा है। जायज जमीन के दाखिल खारिज में भी यह लोग बिना किसी नजराने के रसीद नहीं काटते तथा बढ़ती महंगाई की वजह से सीओ और कर्मचारी वर्त्तमान समय में जमीन का मॉर्केट रेट क्या चल रहा है उस हिसाब से पैसे की मांग करते हैं। इस प्रकार के कई मामले सार्वजनिक हो चुके हैं तथा निगरानी विभाग ने कई पदाधिकारी एवं कर्मचारी को घूंस लेते रंगे हांथ दबोचा है। बिहार में बढ़ते अपराध का सबसे बड़ा कारण भूमि एवं राजस्व विभाग में फैले भ्रष्टाचार के कारण है और इसपर कंट्रोल नहीं होगा तो यही समस्या प्रदेश के लिए नासूर बन जायेगा। विभिन्न शहरों में जमीन की कीमत बढ़ती जा रही है और कर्मचारियों को इसका लाभ मिल रहा है। जमीन के दलाल भी इस मामले को लेकर काफी अच्छी रकम वसूलते हैं। जमीन की रजिस्ट्री से लेकर जमीन के मोटेशन तक घूंस देते-देते खरीददार के मन में सरकार एवं विभाग की लापरवाही को लेकर चिंतित है। रकवा चढ़ाने के नाम पर, परिमार्जन के नाम पर, मोटेशन के नाम पर, एलपीसी के नाम पर कर्मचारियों का वसूली के कारण सही जमीन को भी विवादस्पद बनाकर उसको ठीक करने के नाम पर जमकर उगाही का खेल जारी है। एक ही जमीन का कई लोगों के नाम पर रसीद काटा गया है जिसकी वजह से भी विवाद है और इन्हीं कारणों की वजह से हत्या का भी मामला सामने आने लगता है। अगर निगरानी विभाग कर्मचारी एवं सीओ की संपत्ति की जांच करेगी तो उसके सामने कई तथ्य आयेंगे जिससे यह स्पष्ट हो जायेगा कि भूमि एवं राजस्व विभाग में किस स्तर का भ्रष्टाचार व्याप्त है। जमीन की नापी भी बड़ी समस्या है और इस खेल में भी अमीन और स्थानीय की लापरवाही के कारण कई स्थलों पर हिंसक की घटनाएं घटित होती रही है। जमीन विवाद की समस्या के कारण असली जमीन मालिक औने-पौने दाम पर जमीन बेचने पर विवश है। सरकार एवं विभाग को इस गंभीर समस्या से निजात दिलानें के लिए ठोस एवं त्वरित कार्रवाई करने लगे तो निश्चित ही इसपर नियंत्रण पाया जा सकता है।

निर्भीकता हमारी पहचान
केवल सच
हिन्दी मासिक पत्रिका

नवम्बर 2025

आपको केवल सच पत्रिका कैसी लगी तथा इसमें कौन-कौन सी खामियाँ हैं, अपने सुझाव के साथ हमारा मार्गदर्शन करें। आपका पत्र ही हमारा बल है। हम आपके सलाह को संजीवनी बूटी समझेंगे।

केवल सच

हमारा पता है :-

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका
द्वारा:- ब्रजेश मिश्र
पूर्वी अशोक नगर, रोड् नं.- 14, मकान संख्या- 14/28
कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)
फोन:- 9431073769/ 8340360961/ 9955077308

हमारा ई-मेल
kewalsach@gmail.com, editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

बिहार

ब्रजेश जी,

आपका संपादकीय भीड़ से अलग और गंभीर मुद्दे पर आधारित होती है। नवम्बर 2025 अंक में आपका संपादकीय ''**जातिवाद या विकास से बढ़ेगा बिहार**'' में आपने बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में किस प्रकार का जातिय गणित का राजनीतिक खेल हुआ है को बहुत ही बारिकी से लिखा है। बिहार की राजनीति में जातिय खेल को समझना एवं वोटरों का मिजाज कैसे अपने पक्ष में करना है यह तो पीएम मोदी भी अपने उद्बोधन में जाति को अपना परिवार बता कर अपना हित साध चुके हैं। सटीक संपादकीय।

✦ दीपक उपाध्याय, रेल क्वाटर 121, बनारस

10वीं बार नीतीश

मिश्रा जी,

नवंबर 2025 अंक में अमित कुमार की आवरण कथा ''**मुकद्दर का सिकन्दर : 10वीं बार नीतीश**'' को समीक्षात्मक ढ़ंग से लिखा है। महागठबंधन की बुरी हार के साथ बिहार में भाजपा का नंबर एक पर आने से भविष्य में भाजपा सरकार चलायेगी, लगता है। फिलहाल, नीतीश कुमार को पुनः मुख्यमंत्री बनाया गया है। सचमुच 'मुकद्दर के सिकन्दर' नीतीश कुमार को कहा जा सकता है। आपकी पत्रिका केवल सच, सच को महत्व देती है।

✦ कुणाल पाण्डेय, गौरक्षणी, सासाराम

संविधान

मिश्रा जी,

केवल सच, पत्रिका के नवम्बर 2025 अंक में राजनीति एवं संवैधानिक दृष्टिकोण से कई महत्वपूर्ण खबरों को उचित स्थान दिया गया है। पत्रकार संजय सक्सेना ने अपनी खबर ''**अक्रामक साजिशों के बीच संविधान की असली ताकत**'' में उन तमाम पहलुओं को प्राथमिकता के साथ रखा है जिससे संविधान की आत्मा पर कोई चोट नहीं हो। वहीं दूसरी खबर पत्रकार अजय कुमार ने ''**रोटेशन फॉर्मूला अब बना संकट**'' में कांग्रेस की अंदरूनी खबरों को पूरे विस्तार से समझाते हुए लिखा है। इस प्रकार की खबरों से केवल सच, पत्रिका की साख मजबूत होती है। 20 साल से मैं इस पत्रिका को पढ़ रहा हूं।

✦ कैलाश पाठक, जी बी रोड, गया, बिहार

आतंकी डॉक्टर

मिश्रा जी,

''**आतंकी डॉक्टरों ने दहलायी दिल्ली**'' नवम्बर 2025 अंक में पत्रकार संजय कुमार सिन्हा ने दिल्ली बम ब्लास्ट की खबर को पूरी गंभीरता के साथ लिखा है कि किस प्रकार एक शिक्षण संस्थान में लोगों की स्वास्थ्य व्यवस्था को कैसे जनहित के लिए सुदृढ़ किया जाये उसके बदले देश के भीतर कैसे अशांति फैलाया जाये और मौत का तांडव किया जाये उसका प्रशिक्षण का खेल चल रहा था। यह खबर वास्तव में मुस्लिम समुदाय के विरूद्ध सोचने पर मजबूर होना पड़ता है। 10 नवम्बर की काली रात को दिल्ली वाले सदैव याद रखेंगे की कैसे एक डॉक्टर भी खूनी खेल को खेलने के लिए तैयार बैठा है। चिंता वाली खबर।

✦ त्रिलोकी सिंह, करोल बाग ओपी, नई दिल्ली

भ्रष्टाचार

संपादक जी,

आपकी पत्रिका केवल सच, बेबाक खबरों के लिए अलग पहचान रखती है तथा बिहार सरकार के सभी विभागों में पढ़ी जाने वाली पत्रिका बन चुकी है। नवम्बर 2025 अंक में बिहार की स्वास्थ्य व्यवस्था पर गहरी चोट करते हुए पत्रकार शशि रंजन यिंह एवं राजीव शुक्ला ने संयुक्त रूप से प्रमाण के साथ खबर को लिखकर विभाग में फैले भ्रष्टाचार को उजागर किया है। सरकार दावा करती है कि बिहार सरकार भ्रष्टाचारमुक्त शासन चला रही है लेकिन स्वास्थ्य विभाग की करतूत से पूरा प्रदेश परिचित है। यह खबर वास्तव में केवल सच की साख को मजबूत करता है।

✦कैलाश शर्मा, पाया नं 71, राजा बाजार, पटना

25वीं वर्षगांठ

संपादक जी,

झारखंड प्रदेश बने 25 वर्ष पूरे हो गये हैं और इसी उपलक्ष्य में सरकार ने कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम के माध्यम से सरकार ने प्रदेश के लोगों का दिल जीता है। गुड्डी साव की यह खबर काफी संतोषजनक लगी वहीं ओम प्रकाश की अपराध एवं पुलिस की खबर भी जानकारीप्रद है। झारखंड सरकार में फैले भ्रष्टाचार की खबरों को पूरे प्रमाण के साथ पाठकों के बीच लाना चाहिए जिस प्रकार बिहार में लाया जाता है। यह अंक काफी रोचक एवं राजनीति से जुड़ी एक से बढ़कर एक खबरों की वजह से खास बन गया है। केवल सच को अब रंगीन पृष्ठों में आना चाहिए।

✦ मनोज उरांव, कचहरी रोड, राँची, झारखंड

अन्दर के पन्नों में

75

81

87

141

RNI No.- BIHHIN/2006/18181, **DAVP No.- 129888**

समृद्ध भारत खुशहाल भारत

निर्भीकता हमारी पहचान

केवल सच

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्षः- 20	अंकः- 235	माहः- दिसम्बर 2025	मूल्यः- 20/- रू

फाउंडर

श्रद्धेय गोपाल मिश्र
श्रद्धेय सुषमा मिश्र

संपादक

ब्रजेश मिश्र

9431073769 8340360961

editor.kstimes@rediffmail.com

kewalsach@gmail.com

प्रधान संपादक

अरूण कुमार बंका (एडमिन)	7782053204
सुरजीत तिवारी	9431222619
निलेन्दु कुमार झा	9431810505, 8210878854
सच्चिदानन्द मिश्र	9934899917
डॉ० शशि कुमार	9507773579

संपादकीय सलाहकार

अमिताभ रंजन मिश्र	9430888060, 8873004350
अमोद कुमार	9431075402

महाप्रबंधक

त्रिलोकी नाथ प्रसाद	9308815605, 9122003000

triloki.kewalsach@gmail.com

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

पूनम जयसवाल	9430000482, 9798874154
मनीष कुमार कमलिया	9934964551, 8809888819

उप-संपादक

प्रसुन्न पुष्कर	9430826922, 7004808186
ब्रजेश सहाय	7488696914
ललन कुमार	7979909054, 9334813587

राजनीतिक संपादक

सुमित रंजन पाण्डेय	7992210078
संतोष कुमार यादव	8210487516

संयुक्त संपादक

अमित कुमार 'गुड्डू'	9905244479, 7979075212
राजीव कुमार शुक्ला	9430049782, 7488290565
काशीनाथ गिरी	9905048751, 9431644829
कुमार अनिकेत	9431914317

सहायक संपादक

शशि रंजन सिंह	8210772610, 9431253179
मिथिलेश कुमार	9934021022, 9431410833
नवेन्दु कुमार मिश्र	9570029800, 9199732994

समाचार प्रबंधक

सुधीर कुमार मिश्र	9608010907

ब्यूरो-इन-चीफ

संकेत कुमार झा	9386901616, 7762089203

विधि सलाहकार

शिवानन्द गिरि	9308454485

चीफ क्राइम ब्यूरो

सैयद मो० अकील	9905101976, 8521711976

साज-सज्जा प्रबंधक

अमित कुमार	9905244479

amit.kewalsach@gmail.com

कार्यालय संवाददाता

सोनू यादव	8002647553, 9060359115

प्रसार प्रतिनिधि

कुणाल कुमार	9905203164

बिहार प्रदेश जिला ब्यूरो

पटना (श०)	:-	श्रीधर पाण्डेय	9470709185
(म०)	:-		
(ग्रा०)	:-	मुकेश कुमार	9473038020
बाढ़	:-		
भोजपुर	:-	गुड्डू कुमार सिंह	8789291547
बक्सर	:-	बिन्ध्याचल सिंह	8935909034
कैमूर	:-		
रोहतास	:-		
	:-		
गया (श०)	:-		
(ग्रा०)	:-		
औरंगाबाद	:-		
जहानाबाद	:-	नवीन कुमार रौशन	9934039939
अरवल	:-	संतोष कुमार मिश्रा	9934248543
नालन्दा	:-		
	:-		
नवादा	:-	अमित कुमार	9162664468
	:-		
मुंगेर	:-		
लखीसराय	:-		
शेखपुरा	:-		
बेगूसराय	:-		
	:-		
खगड़िया	:-		
समस्तीपुर	:-		
जमुई	:-	अजय कुमार	09430030594
वैशाली	:-		
	:-		
छपरा	:-		
सिवान	:-		
	:-		
गोपालगंज	:-		
	:-		
मुजफ्फरपुर	:- .		
	:-		
सीतामढ़ी	:-		
शिवहर	:-		
बेतिया	:-	रवि रंजन मिश्रा	9801447649
बगहा	:-		
मोतिहारी	:-	संजीव रंजन तिवारी	9430915909
दरभंगा	:-		
	:-		
मधुबनी	:-		
	:-	प्रशांत कुमार गुप्ता	6299028442
सहरसा	:-		
मधेपुरा	:-		
सुपौल	:-		
किशनगंज	:-		
	:-		
अररिया	:-	अब्दुल कय्यूम	9934276870
पूर्णिया	:-		
कटिहार	:-		
भागलपुर,	:-		
(ग्रा०)	:-	रवि पाण्डेय	7033040570
नवगछिया	:-		

दिल्ली कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- संजय कुमार सिन्हा
A-68, 1st Floor,
नागेश्वर तल्ला, शास्त्रीनगर,
नई दिल्ली-110052
संजय कुमार सिन्हा, स्टेट हेड
मो०- 9868700991, 9431073769

उत्तरप्रदेश कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
................................., **स्टेट हेड**

सम्पर्क करें
9308815605

पश्चिम बंगाल कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- अजीत कुमार दुबे
131 चितरंजन एवेन्यू,
कोलकात्ता, पश्चिम बंगाल- 700073
अजीत कुमार दुबे, स्टेट हेड
मो०- 9433567880, 9308815605

मध्य प्रदेश कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
हाउस नं.-28, हरसिद्धि कैम्पस
खुशीपुर, चांबड़
भोपाल, मध्य प्रदेश- 462010
अभिषेक कुमार पाठक, स्टेट हेड
मो०- 8109932505,

झारखंड कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
वैष्णवी इंक्लेव,
द्वितीय तल, फ्लैट नं- 2बी
नियर- फायरिंग रेंज
बरियातु रोड, राँची- 834001
मो०- 7903856569, 6203723995

छत्तीसगढ़ कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
................................., **स्टेट हेड**
सम्पर्क करें
8340360961

संपादकीय व प्रधान कार्यालयः-

☞ पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान संख्या.- 14/28, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार) मो०- 9431073769, 9955077308

☞ e-mail:- kewalsach@gmail.com, editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

☞ स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक ब्रजेश मिश्र द्वारा सांध्य प्रवक्ता खबर वर्क्स, ए- 17, वाटिका विहार (आनन्द विहार), अम्बेडकर पथ, पटना 8000 14(बिहार) एवं पूर्वी अशोक नगर, रोड नं. 14, कंकड़बाग पटना-800020 से प्रकाशित, संपादक- ब्रजेश मिश्र। RNI NO.-BIHHIN/2006/18181

☞ पत्रिका में प्रकाशित समाचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

☞ सभी प्रकार के वाद-विवादों का निपटारा पटना न्यायालय के अधीन होगा।

☞ आलेख पर कोई आपत्ति हो तो एक महीने के भीतर खंडन करें।

☞ किसी भी लेख के लिए रचनाकार/लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे।

☞ **सभी पद अवैतनिक हैं।**

☞ फोटो-समाचार साभार भी (माध्यम- इंटरनेट एवं अन्य स्त्रोत)

☞ कोई भी शिकायत हमारे पते पर लिखकर भेजें।

☞ **विज्ञापन का भुगतान चेक या ड्राफ्ट एवं RTGS से ही मान्य होगा।**

☞ भुगतान Kewal Sach को ही करें। प्रतिनिधियों को नगद न दें।

☞ A/C No. :- 0600050004768
BANK :- Punjab National Bank
IFSC Code :- PUNB0060020
PAN No. :- AAJFK0065A

☞ A/C No. :- 0600050004768
BANK :- State Bank of India
IFSC Code :- SBIN0003564
PAN No. :- AAJFK0065A

प्रधान संपादक

....

....

झारखण्ड स्टेट ब्यूरो

....

झारखण्ड सहायक संपादक

अभिजीत दीप	7004274675, 9430192929
ब्रजेश मिश्र	7654122344, 7979769647
अनंत मोहन यादव	9546624444, 7909076894

उप संपादक

अजय कुमार 6203723995, 8409103023

....

संयुक्त संपादक

....

विशेष प्रतिनिधि

भारती मिश्रा 8210023343, 8863893672

....

....

झारखण्ड प्रदेश जिला ब्यूरो

राँची	:-	अभिषेक मिश्र	7903856569
	:-	ओम प्रकाश	9708005900
साहेबगंज	:-		
खूँटी	:-		
जमशेदपुर	:-	तारकेश्वर प्रसाद गुप्ता	9304824724
हजारीबाग	:-		
जामताड़ा	:-		
दुमका	:-		
देवघर	:-		
धनबाद	:-		
बोकारो	:-		
रामगढ़	:-		
चाईबासा	:-		
कोडरमा	:-		
गिरीडीह	:-		
चतरा	:-	धीरज कुमार	9939149331
लातेहार	:-		
गोड्डा	:-		
गुमला	:-		
पलामू	:-		
गढ़वा	:-		
पाकुड़	:-		
सरायकेला	:-		
सिमडेगा	:-		
लोहरदगा	:-		

श्री चन्द्र प्रकाश सिंह

प्रधान संरक्षक सह प्रबंध संपादक

'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**

राष्ट्रीय संगठन मंत्री, राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक)

पूर्व निदेशक सदस्य, ओरियेंटल बैंक ऑफ कॉमर्स

डॉ. सुनील कुमार

शिशु रोग विशेषज्ञ सह मुख्य संरक्षक

'केवल सच' पत्रिका

एवं 'केवल सच टाइम्स'

एन.सी.- 115, एसबीआई ऑफिसर्स कॉलोनी,

लोहिया नगर, कंकड़बाग, पटना-800020

फोन- 0612/3504251

सुधीर कुमार

मुख्य संरक्षक सह निदेशक **"मगध इंटरनेशनल स्कूल"** टेकारी

" केवल सच " पत्रिका **एवं " केवल सच टाइम्स "**

9060148110

sudhir4s14@gmail.com

कैलाश कुमार मौर्य

मुख्य संरक्षक

'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**

व्यवसायी

पटना, बिहार

7360955555

बिहार राज्य प्रमंडल ब्यूरो

पटना		
मगध		
सारण		
तिरहुत		
पूर्णिया	**धर्मेन्द्र सिंह**	9430230000, 7004119966
भागलपुर		
मुंगेर		
दरभंगा		
कोशी		

विशेष प्रतिनिधि

आशुतोष कुमार	9430202335, 9304441800
सूमन सौरभ	9471492480, 7004952447
बेंकटेश कुमार	8521308428, 9572796847
दीपनारायण सिंह	9934292882
आनन्द प्रकाश पाण्डेय	9931202352, 7808496247
रामजीवन साहू	9430279411, 7250065417
रजनीश कांत झा	9430962922, 7488204140

छायाकार

त्रिलोकी नाथ प्रसाद	9122003000, 9431096964
मुकेश कुमार	9835054762, 9304377779
जय प्रसाद	9386899670

झारखंड राज्य प्रमंडल ब्यूरो

राँची	गुड्डी साव	6299470142
हजारीबाग		
पलामू		
दुमका		
चाईबासा		

संतोष कुमार गंगवार
राज्यपाल, झारखण्ड

सत्यमेव जयते

राज भवन, रांची–८३४००१
झारखण्ड
दूरभाष : 0651-2283465

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि केवल सच पत्रिका अपने 20वें स्थापना वर्ष के उपलक्ष्य में नई दिल्ली स्थित कॉन्स्टिट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया में दसवें सिख गुरु श्री गुरु गोविन्द सिंह जी के जीवन एवं कृतित्व पर आधारित एक विशेषांक का प्रकाशन कर रही है।

गुरु गोविन्द सिंह जी न केवल सिख धर्म के महान गुरु थे, बल्कि वे एक अप्रतिम योद्धा, दूरदर्शी दार्शनिक, करुणामय संत, अद्वितीय कवि एवं राष्ट्रसम्मान के लिए सर्वस्व न्योछावर करने वाले महापुरुष थे। उन्होंने भारत की संस्कृति, अध्यात्म और शौर्य की परंपरा को अमर ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। उनकी वाणी— "सवा लाख से एक लड़ाऊँ, चिड़ियन ते मैं बाज तुड़ाऊँ" भारत की वीर परंपरा, आत्मविश्वास और नैतिक शक्ति का शाश्वत घोष है।

गुरु गोविन्द सिंह जी अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध साहस, समर्पण और सत्य के साथ डटकर संघर्ष किया। उनके जीवन का प्रत्येक अध्याय सभी को प्रेरित करता है कि धर्म, मानवता, न्याय और राष्ट्रहित के लिए अनवरत कार्य करते रहें।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह विशेषांक गुरु गोविन्द सिंह जी के जीवन, दर्शन और आदर्शों के प्रति जनसमुदाय में नई प्रेरणा का संचार करेगा तथा समाज में सत्य, साहस, त्याग और राष्ट्रप्रेम के भाव को और प्रबल करेगा।

मैं केवल सच पत्रिका के इस प्रयास की सराहना करता हूँ और इस विशेषांक के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(संतोष कुमार गंगवार)

Hemant Soren
Chief Minister

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि पटना से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका **''केवल सच''** के 20 वर्ष पूरे होने के अवसर पर कॉंस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया के सभागार, नई दिल्ली में सिखों के 10वें गुरू आदरणीय श्री गुरू गोविन्द सिंह के जीवन–दर्शन पर एक विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

उम्मीद है कि यह विशेषांक गुरू गोविन्द सिंह जी के जीवन–दर्शन के विभिन्न आयामों को रचनात्मक स्वरूप में प्रस्तुत करेगा।

मैं इस प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूँ।

जोहार!

(हेमन्त सोरेन)

Kanke Road, Ranchi - 834 008 (Jharkhand)
Tel.: 0651-2280886, 2280996, 2400233 Fax.: 0651-2280717, 2400232
E-mail: chiefminister.jharkhand19@gmail.com

जीतन राम मांझी
JITAN RAM MANJHI

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

मंत्री
सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम
भारत सरकार
Minister of
Micro, Small & Medium Enterprises
Government of India

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि केवल सच पत्रिका के 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर दिल्ली के कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ़ इंडिया के सभागार में सिखों के 10वें गुरु श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के जीवन, उनके त्याग, बलिदान एवं शिक्षाओं पर आधारित विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी केवल एक महान संत एवं योद्धा ही नहीं, बल्कि भारत के आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक इतिहास के ऐसे उज्ज्वल नक्षत्र हैं, जिन्होंने अपने जीवन से धर्म, न्याय और मानवता की रक्षा का अमर संदेश दिया। उनका जीवन समर्पण, साहस, करुणा और समानता की उस भावना का प्रतीक है, जिसने भारतीय समाज को एकता और आत्मबल का मार्ग दिखाया।

उन्होंने "खालसा" पंथ की स्थापना कर प्रत्येक मनुष्य में निहित ईश्वरत्व, साहस और आत्मसम्मान का आह्वान किया। उनके आदर्श आज भी देशवासियों के लिए प्रेरणास्रोत हैं और सदैव यह संदेश देते हैं कि सत्य, त्याग और निष्ठा ही मानव जीवन का सर्वोच्च धर्म है।

इस अवसर पर, मैं केवल सच पत्रिका के सभी सदस्यों को इस प्रेरणादायी पहल के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह विशेषांक आने वाली पीढ़ियों को गुरु गोबिन्द सिंह जी के आदर्शों से प्रेरित करेगा और राष्ट्रभावना को सुदृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

(जीतन राम मांझी)

दिनांक :17नवम्बर, 2025

2nd Floor, Kartavya Bhavan-3, Kartavya Path, New Delhi-110001, Ph. : 011-24011271, 011-24011272
E-mail : min-msme@nic.in

गजेन्द्र सिंह शेखावत
Gajendra Singh Shekhawat

सत्यमेव जयते

संस्कृति मंत्री एवं पर्यटन मंत्री
भारत सरकार
Minister of Culture and
Minister of Tourism
Government of India

17 NOV 2025

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि सिख धर्म का सबसे पवित्र धाम श्री हरमंदिर साहिब (स्वर्ण मंदिर) भारत के पंजाब राज्य के अमृतसर नगर में स्थित है। यह स्थान न केवल आध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि मानव सेवा, समानता, समर्पण एवं त्याग की महान परंपरा का प्रतीक भी है। विश्वभर के लोग यहाँ शांति, एकता और सद्भाव का संदेश प्राप्त करने के लिए आते हैं। सिख धर्म की स्थापना गुरु नानक देव जी ने 15वीं शताब्दी में मानव कल्याण और धार्मिक सौहार्द की भावना से की थी। उन्होंने समाज को सत्य, करुणा, ईमानदारी, परिश्रम तथा सेवा का मार्ग दिखाया। उनके पश्चात् सिख गुरुओं ने इस पवित्र परंपरा को आगे बढ़ाया और समाज को अनुशासन, साहस तथा मानवता की दिशा में प्रेरित किया। दसवें गुरु, गुरु गोविंद सिंह जी, ने सिख धर्म के उत्थान, राष्ट्र की रक्षा तथा मानवाधिकारों की सुरक्षा के लिए अद्भुत योगदान दिया। उनके चारों साहिबजादों ने अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध डटकर वीरतापूर्वक संघर्ष किया तथा धर्म की रक्षा हेतु अपने प्राण न्योछावर कर दिए। उनके इन अतुलनीय बलिदानों का स्मरण करते हुए प्रतिवर्ष 21 दिसंबर से 27 दिसंबर तक 'शहीदी सप्ताह' मनाया जाता है। यह सप्ताह हमें धर्म, त्याग, वीरता और कर्तव्यनिष्ठा की अमूल्य सीख देता है। सिख गुरुओं द्वारा दिए गए उपदेश "एक ईश्वर की भक्ति, मानव सेवा, सत्य का पालन, भाईचारा और सदाचार" आज भी समाज को एक सही दिशा प्रदान करते हैं। इन शिक्षाओं में निहित जीवन-मूल्य हमें न केवल एक बेहतर इंसान बनने के लिए प्रेरित करते हैं, बल्कि समाज और राष्ट्र के प्रति हमारी जिम्मेदारियों का भी बोध कराते हैं। अतः आप सभी से निवेदन है कि गुरु साहिबानों की महान शिक्षाओं को अपने दैनिक जीवन में अपनाएँ। सत्य, साहस, अनुशासन, परिश्रम और सेवा जैसे मूल्य आपके व्यक्तित्व को सशक्त बनाएँगे और आपको समाज के प्रति अपना योगदान देने के लिए प्रेरित करेंगे।

मैं, दसवें गुरु, 'गुरु गोविंद सिंह जी' के विशेषांक हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वन्दे मातरम् !

(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

Ministry of Culture: Room No. 501, 'C' Wing, Shastri Bhavan, New Delhi-110001
Tel : 91-11-23386765, 23381539, Fax : 91-11-23385115, E-mail : office-hcm@gov.in
Ministry of Tourism: 301, Transport Bhawan, Parliament Street, New Delhi-110 001
Tel.: +91-11-23710431, 23717969, Fax : +91-11-23731506

संजय सेठ
SANJAY SETH

सत्यमेव जयते

रक्षा राज्य मंत्री
भारत सरकार
Minister of State for Defence
Government of India

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि 'केवल सच टाइम्स' द्वारा दसवें सिख गुरु श्री गुरु गोविंद सिंह जी के जीवन, शिक्षाओं और प्रेरणादायक आदर्शों पर आधारित विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

गुरु गोविंद सिंह जी का जीवन त्याग, वीरता, करुणा और मानवता का अद्भुत उदाहरण है। उन्होंने समाज में समानता, धर्म और न्याय की स्थापना के लिए अपने जीवन का प्रत्येक क्षण समर्पित किया। उनके उपदेश आज भी सम्पूर्ण मानव समाज के लिए प्रेरणा-स्रोत हैं और देश की एकता तथा अखंडता के प्रतीक बने हुए हैं।

'केवल सच टाइम्स' का यह प्रयास न केवल गुरु साहिब के उपदेशों के प्रसार का माध्यम बनेगा, बल्कि यह नई पीढ़ी को उनके आदर्शों पर चलने की प्रेरणा भी देगा।

मैं इस पवित्र और प्रेरणादायक पहल के लिए 'केवल सच टाइम्स' परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ और कामना करता हूँ कि यह विशेषांक समाज में गुरु गोविंद सिंह जी के संदेशों को जन-जन तक पहुँचाने में सफल हो।

गुरु गोविंद सिंह जी के उपदेश हमें सदा धर्म, सत्य और मानवता के मार्ग पर अग्रसर रहने की प्रेरणा देते रहें - यही मेरी मंगलकामना है।

शुभकामनाओं सहित,

(संजय सेठ)

दिनांक: 14 नवम्बर, 2025

Offie: 114-A, South Block, New Delhi-110011, Tel.: 011-23792128, 011-23794621, Fax : 011-23016255, E-mail : mos-defence@gov.in
Resi.: 02 Jantar Mantar Road, New Delhi-110001, Tel: 011-23310353, 011-21400882

बी. एल. वर्मा
उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण एवं
सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

B. L. VERMA
MINISTER OF STATE FOR
CONSUMER AFFAIRS, FOOD AND PUBLIC DISTRIBUTION &
SOCIAL JUSTICE AND EMPOWERMENT
GOVERNMENT OF INDIA

No. 95 /VIP/MOS/(SJ&E)/2025

दिनांक : 10 नवंबर 2025

संदेश

मैं **"केवल सच"** पत्रिका के 20वें स्थापना वर्ष के इस पुनीत अवसर पर सम्पादक मंडल एवं सभी पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। समाज में सत्य, सद्भाव और जागरूकता के प्रसार में इस पत्रिका का योगदान सराहनीय है।

इस अवसर पर 10वें गुरु, **श्री गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज** के जीवन एवं उपदेशों पर प्रकाशित विशेषांक का प्रकाशन अत्यंत प्रशंसनीय पहल है। गुरु गोविन्द सिंह जी ने अपने अदम्य साहस, त्याग, निष्ठा और न्यायप्रियता के माध्यम से मानवता के कल्याण का जो संदेश दिया, वह आज भी हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। उन्होंने धर्म, राष्ट्र और मानवता की रक्षा के लिए अपने सम्पूर्ण जीवन को समर्पित किया।

गुरु गोविन्द सिंह जी को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके दिखाए मार्ग पर चलकर राष्ट्र निर्माण में योगदान दें। मैं **"केवल सच"** पत्रिका की निरंतर प्रगति और उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि यह पत्रिका इसी तरह समाज में सकारात्मकता प्रेरणा का संचार करती रहेगी।

(बी. एल. वर्मा)

कार्यालय (CA,F&PD) : कृषि भवन
डॉ० आर.पी. रोड, नई दिल्ली-110001
दूरभाष : 011-23070650, 23070651

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

कार्यालय (SJ&E) : 623, ए.विंग, शास्त्री भवन,
डॉ० आर.पी. रोड, नई दिल्ली-110001
दूरभाष : 011-23072192, 23072193

रवनीत सिंह
RAVNEET SINGH

सत्यमेव जयते

राज्य मंत्री
खाद्य प्रसंस्करण उद्योग एवं
रेल मंत्रालय
भारत सरकार
MINISTER OF STATE
FOOD PROCESSING INDUSTRIES
AND RAILWAYS
GOVERNMENT OF INDIA

I/103082/2025
18/11/2025

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है की राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका 'केवल सच' सिखों के 10वे गुरु 'श्री गुरु गोविन्द सिंह जी' के जीवन पर राजधानी के नई दिल्ली के कॉंस्टीटूशन क्लब के सभागार में एक विशेषांक का प्रकाशन कर रही है।

मुझे आशा है की श्री गुरु गोविन्द सिंह जी का यह विशेषांक हमारे लिए प्रेरणादायक साबित होगा और देश के सभी युवाओं के लिए गुरु गोविन्द सिंह जी के जीवन से प्रेरित होकर दया, करुणा, त्याग, बलिदान और साहस की सीख प्रदान करेगा।

मेरी प्रकाश्य अंक के लिए हार्दिक शुभकामनाएं है।

(रवनीत सिंह)

श्री ब्रजेश मिश्र जी
संपादक सह प्रबंधकर्ता
सदस्य - प्रेस सलाहकार समिति
बिहार विधान परिषद,
पूर्वी अशोक नगर, रोड नं -14,
मकान नं – 14/28 , कंकड़बाग
पटना – 800020, बिहार

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय, 204 - पंचशील भवन, अगस्त क्रान्ति मार्ग, नई दिल्ली-110 049
Ministry of Food Processing Industries, 204 - Panchsheel Bhavan, August Kranti Marg, New Delhi-110 049
Phone: 011-2649 1254 **Fax:** 011-2649 1256.
E-mail: mos-fpi@nic.in; ravneet.bittu@sansad.nic.in
निवास : 28, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद रोड़, क्नॉट पेलेस, नई दिल्ली - 110 001
Resi.: 28, Dr. Rajendra Prasad Road, Connaught Place, New Delhi - 110 001 | **Phone:** 011-2378 2535

अवधेश नारायण सिंह
सभापति
बिहार विधान परिषद्

सत्यमेव जयते

Awadhesh Narain Singh
Chairman
Bihar Legislative Council

Lt. No./पत्रांक ....   Dt./दिनांक ....

शुभकामना संदेश

यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका "केवल सच" अपने 20वें स्थापना वर्ष पर सिखों के दशवें गुरू आदरणीय श्री गुरू गोविंद सिंह जी के जीवन पर आधारित एक विशेषांक प्रकाशित करने जा रही है।

पाटलीपुत्र की धरती पर जन्मे दशमेश गुरू गोविंद सिंह जी एक निर्भिक योद्धा, महान दार्शनिक और प्रख्यात कवि थे जिन्होंने अपनी मातृभूमि और अपनी संस्कृति की मान-मर्यादा की रक्षा के लिए जीने और मर मिटने की प्रेरणा दी। उनका जीवन प्रेम, सदाचार, क्षमा, सहनशीलता और सौम्यता का संदेश देता है । वे भक्ति और शक्ति के अद्वितीय संगम थे।

मैं सिखों के गौरवशाली इतिहास तथा दया, करूणा, त्याग, बलिदान और साहस की प्रतिमूर्ति श्री गुरू गोविंद सिंह जी पर आधारित विशेषांक के प्रकाशन के अवसर पर "केवल सच" पत्रिका के संपादक सहित सभी सदस्यों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं ।

10/12/25
(अवधेश नारायण सिंह)

3, देशरत्न मार्ग, पटना - 800 001
3, Deshratan Marg, Patna - 800 001
Tel.: 0612-2215819, 2215245 (O)
Fax : 2215683, 2215617, Mob.: 9431018630

डॉ० प्रेम कुमार
अध्यक्ष
बिहार विधान सभा

सत्यमेव जयते

Dr. Prem Kumar
Speaker
Bihar Legislative Assembly

पत्रांक: **दिनांक :**

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि केवल सच पत्रिका अपने 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर दशम पातशाह 'श्री गुरू गोविन्द सिंह' जी की पुण्य स्मृति में उनके जीवन पर एक विशेषांक का प्रकाशन करने जा रही है।

श्री गुरू गोविन्द सिंह जी ने अपने अद्वितीय साहस, त्याग और धर्मनिष्ठा से न्याय, समानता तथा मानवता की जो ज्योति प्रज्वलित की, वह आज भी सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रेरणास्रोत है। गुरू जी के जीवन-वृत से यह संदेश मिलता है कि अन्याय और अत्याचार के विरूद्ध सत्य के मार्ग पर डटे रहना ही सच्ची सेवा और सच्ची भक्ति है। उनके द्वारा स्थापित आदर्शों-निडरता, करूणा, परोपकार और सामूहिक कल्याण-को अपनाकर ही समाज में सद्भाव, शांति और बंधुत्व को सुदृढ़ किया जा सकता है।

इस अवसर पर, मैं प्रकाशन और 'केवल सच' से जुड़े सभी लोगों को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ तथा कामना करता हूँ कि श्री गुरू जी की कृपा से हमारे राज्य तथा देश के सभी नागरिकों के जीवन में साहस, सद्बुद्धि, आपसी एकता और समृद्धि का प्रकाश फैले।

(डॉ० प्रेम कुमार)

Address: 3, Circular Road, Patna.
Phone : 0612-2217856, 2217082 (O), 0612-2215858 (R), Mob-9473400422
Fax No: 0612-2217373
E-mail : drpremkrbjp1955@gmail.com

विजय कुमार सिन्हा
VIJAY KUMAR SINHA

उप मुख्यमंत्री
बिहार सरकार
Deputy Chief Minister
Government of Bihar

पत्रांक.................................... दिनांक 05-12-2025

—: शुभकामना संदेश :—

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि **''केवल सच''** हिन्दी मासिक पत्रिका अपने 20वें स्थापना वर्ष के पुनित अवसर पर नई दिल्ली के **कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया** के सभागार में सिखों के 10वें गुरू आदरणीय **''श्री गुरू गोविन्द सिंह''** के जीवन पर एक विशेषांक प्रकाशित करने जा रही है। गुरू गोविन्द सिंह ने दया, करूणा, त्याग, बलिदान और साहस के साथ राष्ट्र के प्रति समर्पण के भाव पर बल दिया। सिखों के गौरवशाली इतिहास के साथ वर्त्तमान समय में उनके सेवा भाव का लोहा पूरा विश्व मानता है। सिख धर्म के गुरूओं के विजय गाथा को **केवल सच** के विशेषांक में प्रकाशित होने से युवाओं में शौर्य और संकल्प शक्ति को नई प्रेरणा मिलेगी। साथ ही नई–पीढ़ी के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

मैं उक्त विशेषांक के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामना प्रकट करता हूँ।

(विजय कुमार सिन्हा)

सेवा में,

श्री ब्रजेश मिश्र
संपादक–सह–प्रबंधकर्त्ता
केवल सच।

कार्यालयः राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग, बिहार, मुख्य सचिवालय, पटना–800015 Office- Revenue and Land Reforms Department, Bihar, Patna, Main Secretariat, Patna-800015
दूरभाष (Phone) : 0612–2217355 (का०), Email : ministercell@gmail.com

श्रवण कुमार
شرون کمار

मंत्री
ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

पत्रांक.....................

दिनांक 12/12/25

शुभकामना संदेश

यह अत्यन्त ही प्रसन्नता की बात है कि हिन्दी मासिक पत्रिका "केवल सच" के 20 वें स्थापना वर्ष के पुनित अवसर पर भारत देश की राजधानी नई दिल्ली के "कॉस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया" के सभागार में सिखों के में 10वें गुरू **"गुरू गोविन्द सिंह"** जी के जीवन पर एक विशेषांक का प्रकाशन कर रही है।

दसवें सिख गुरु गोविंद सिंह का जन्म 22 दिसंबर 1666 को पटना, बिहार में हुआ था। पाटलीपुत्र की धरती पर जन्में गुरु गोविन्द सिंह और मुगलों की सेना में कई बार तीव्र संघर्ष हुए थे। भंगानी का युद्ध गुरु गोबिन्द सिंह द्वारा लड़े गए सबसे प्रारंभिक और सबसे महत्वपूर्ण युद्धों में से एक माना जाता है।

यदि हम इतिहासकारों की मानें तो गुरु नानक देव ने 1506 में भारत के पूर्वी भागों से होकर अपनी पहली (उदासी, आध्यात्मिक यात्रा) के दौरान बिहार के कम से कम छह जिलों सासाराम, मुंगेर, पटना, राजगीर, बोधगया और गया का दौरा किया था। सिख अपने धर्म को गुरमत (पंजाबी: "गुरु का मार्ग") कहते हैं। सिख परंपरा के अनुसार सिख धर्म की स्थापना गुरु नानक जी (1469-1539) ने की थी और उसके बाद नौ अन्य गुरुओं ने इसका नेतृत्व किया। दसवें गुरु श्री गोविंद सिंह जी के चार पुत्रों ने जो धर्म की रक्षा के लिए शहादत दी थी। इस शहादत को नमन करते हुए 21 दिसंबर से 27 दिसंबर तक शहीदी सप्ताह के रूप में मनाया जा रहा है।

बिहार प्रदेश में धर्म एवं अध्यात्म को नगरी का गौरवशाली इतिहास रहा है।

मैं **"केवल सच"** के श्री ब्रजेश मिश्र, संपादक सह प्रबंधकर्ता, सदस्य, प्रेस सलाहकार समिति, बिहार विधान परिषद, पटना एवं इनके पूरी टीम को बधाई देते हुए सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

(श्रवण कुमार)

कार्यालय - मुख्य सचिवालय, पटना-800015, आवास : 12ए, बेली रोड, पटना-800015
दूरभाष/फैक्स : 0612-2205331 (का॰), 2215472 (आ॰), मोबाईल : 9471006315
ई-मेल : sharwankumarmla@gmail.com

मदन सहनी
मंत्री
समाज कल्याण विभाग
बिहार, पटना

बिहार सरकार

Madan Sahni
Minister
Social Welfare Department
Bihar, Patna

पत्रांक 38 (म०) | दिनांक 10-12-2025

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हो रही है कि 21 दिसम्बर 2025 को **'केवल सच'** हिन्दी मासिक पात्रिका के 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर **'सिखों के 10वें गुरू श्री गुरू गोविन्द सिंह जी'** के जीवन पर **विशेषांक'** प्रकाशन कर रहा है तथा उल्लेखनीय कार्य करने वाले कर्मयोगियों को **"गुरू गोविन्द सिंह केवल सच सम्मान–2025 "** से सम्मानित किया जायेगा।

"केवल सच" पत्रिका के 20वें स्थापना वर्ष के अवसर पर **" गुरू गोविन्द सिंह केवल सच सम्मान–2025"** में राष्ट्र के लिए उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित होने वाली प्रतिभाओं को मैं अपनी ओर से हार्दिक बधाई देता हूँ। पत्रिका के सभी प्रतिनिधियों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ सम्प्रेषित करता हूँ।

मै आपके कार्यक्रम एवं स्मारिका के प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूँ।

10.12.2025
(मदन सहनी)

सेवा में,

श्री ब्रजेश मिश्र,
संपादक–सह–प्रबंधकर्त्ता,
केवल सच,
राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका।

कार्यालय : मुख्य सचिवालय, पटना-800015, आवास-7 पोलो रोड, पटना
दूरभाष/फैक्स : 0612-2215045, 2215048 • E-mail : ministrysamajkalyan.bihar@gmail.com

राम कृपाल यादव
मंत्री
कृषि विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

RAM KRIPAL YADAV
MINISTER
Agriculture Department
Government of Bihar

पत्रांक : ....363........ दिनांक : ...15-12-2025

।। शुभकामना संदेश।।

मुझे यह जानकर बेहद खुशी हुई कि 'केवल सच' पत्रिका द्वारा सिखों के 10वें गुरू आदरणीय श्री गुरू गोविन्द सिंह के जीवन पर एक विशेषांक का प्रकाशन किया जाना है जो एक प्रशंसनीय कार्य है।

सिख धर्म के 10वें गुरू श्री गुरू गोविन्द सिंह जी का जीवन त्याग, धर्मनिष्ठा और मानवता की रक्षा का अनुपम उपहार है। गुरू गोविन्द सिंह जी ने अन्याय, अत्याचार और अधर्म के विरूद्ध संघर्ष करते हुए समाज को साहस, समानता और आत्मसम्मान का मार्ग दिखाया। उनका संदेश आज भी हमें राष्ट्र, समाज और मानवता के प्रति अपने कर्त्तव्यों का बोध कराता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह विशेषांक पाठकों को गुरू गोविन्द सिंह जी के जीवन दर्शन से प्रेरणा प्रदान करेगा तथा युवा–पीढ़ी में देश भक्ति, साहस और सामाजिक समरसता की भावना को सुदृढ़ करेगा।

'केवल सच' पत्रिका विशेषांक के प्रकाशन के लिए प्रकाशन मंडल को मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

रामकृपाल यादव
(राम कृपाल यादव)

कार्यालय : विकास भवन, न्यू सचिवालय, बेली रोड, पटना–800015 Vikas Bhawan, New Secretariat, Bailey Road, Patna-800015
कृषि भवन, मीठापुर, पटना–800001 Krishi Bhawan, Mithapur, Patna-800001
दूरभाष : 0612–2231212 (विकास भवन) 0612–2217102 (कृषि भवन)
ई–मेल : agri.ministerbihar@gmail.com

डॉ० दिलीप कुमार जायसवाल
मंत्री
उद्योग विभाग, बिहार सरकार

बिहार सरकार

Dr. Dilip Kumar Jaiswal
Minister
Department of Industries, Govt. of Bihar

पत्रांक 1427/मं० दिनांक 08.12.25

-: शुभकामना संदेश :-

यह प्रसन्नता की बात है कि **'केवल सच'** परिवार द्वारा हिन्दी मासिक पत्रिका—'केवल सच पत्रिका' के **20वें स्थापना वर्ष** के अवसर पर सिखों के 10वें गुरू, **श्री गुरू गोविन्द सिंह जी** के जीवन पर **'विशेषांक'** का प्रकाशन किया जा रहा है। इस विशेषांक के माध्यम से सुधि पाठकजन को श्री गुरू गोविन्द सिंह के जीवन और संदेशों से रू-ब-रू होने का अवसर प्राप्त होगा, जो बिहार के गौरवशाली इतिहास से परिचित कराने का प्रशंसनीय प्रयास है।

आशा है, आगामी विशेषांक में भारत के गौरवशाली अतीत में सिख धर्म, परम्परा एवं गुरूओं के आदर्शों से अवगत होकर समाज में सेवाभाव एवं राष्ट्रीयता की भावना का संदेश प्रवाहित होगा। विश्व के प्रसिद्ध महापुरूषों में से एक श्री गुरू गोविन्द सिंह के संदर्भ में उनके विचारों एवं विश्व को दिए गए उनके योगदान से पाठकों को परिचित कराने का यह प्रयास अत्यन्त सराहनीय है।

मैं केवल सच परिवार को इस प्रयास के लिए **हार्दिक शुभकामनाएँ** देता हूँ तथा **'गुरू गोविन्द सिंह विशेषांक'** के सफल प्रकाशन की **कामना** करता हूँ।

(डॉ॰ दिलीप कुमार जायसवाल)

Address : Industries Department, 3rd Floor, Vikas Bhawan, New Secretariat, Patna- 800015
Office Phone :- 0612-2215431 (o), Office Fax+Phone : 0612-2215430 Residential Office No :- 0612-2233544, Mobile No.:- 9955551111/9931111117
Email :- drdkmlc@gmail.com, Officeofdilipjaiswal@gmail.com & minister.ind-bih@gov.in

अशोक चौधरी
मंत्री
ग्रामीण कार्य विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

: 0612-2547189 (का.)
0612-2217234 (आ.)
: + 91 9386594300
आवास : 2, पोलो रोड, पटना

पत्रांक : 42/अ० दिनांक : 12/12/2025

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि "केवल सच" द्वारा गुरु गोविन्द सिंह जी के 10वें प्रकाश पर्व पर विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। गुरु गोविन्द सिंह जी का जीवन साहस, त्याग, सेवा और मानवता के उच्च आदर्शों का अनुपम प्रतीक है।

यह विशेषांक समाज में प्रेरणा, जागरूकता और सद्भाव का संदेश फैलाने में अवश्य सफल होगा—इसी विश्वास के साथ मैं सम्पादकीय टीम एवं पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

(अशोक चौधरी)

कार्यालय : पंचम तल, विश्वेश्वरैया भवन, नेहरू पथ (बेली रोड), पटना-800015
rwdminister@gmail.com | @Ashokchoudhary

सुनील कुमार
मंत्री
शिक्षा विभाग
बिहार सरकार

बिहार सरकार

कार्यालय : कमरा सं०-43,
विकास भवन, पटना-15
दूरभाष सं० : 0612-2204904 (का०)
फैक्स : 0612-2215836
आवास : 26/A, हार्डिंग रोड, पटना
0612-2215771 (आवास)

पत्रांक : M-48 दिनांक : 10/12/25

शुभकामना–संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि ***'केवल सच'*** पत्रिका द्वारा ***"गुरु गोविंद सिंह"*** विषय पर विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है। दसवें सिख गुरु, ***गुरु गोविंद सिंह जी*** का जीवन अदम्य साहस, न्याय, समता, राष्ट्र–निष्ठा और आध्यात्मिक चेतना की अनुपम मिसाल है। यह विषय अपने आप में अत्यंत प्रेरणादायी है और निश्चित रूप से समाज में वीरता, त्याग, समरसता तथा राष्ट्रीय मूल्यों को सुदृढ़ करेगा।

'केवल सच' द्वारा इस विशेषांक के माध्यम से गुरु गोविंद सिंह जी के आदर्शों, उनके प्रेरक जीवन–चरित और उनके अविस्मरणीय योगदान को जन–जन तक पहुँचाने का जो सार्थक प्रयास किया जा रहा है, वह निस्संदेह प्रशंसनीय है। मुझे विश्वास है कि उनकी गौरवमयी परंपरा से प्रेरणा लेकर युवा पीढ़ी राष्ट्र–निर्माण में और अधिक सक्रिय, संवेदनशील तथा समर्पित भूमिका निभाएगी।

इस अवसर को और भी ऐतिहासिक बनाता है कि ***'केवल सच'*** पत्रिका अपना 20वाँ स्थापना दिवस भी मना रही है। दो दशकों की यात्रा में पत्रिका ने सामाजिक सरोकारों, रचनात्मक लेखन तथा जन–जागरूकता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है, जो अत्यंत सराहनीय है।

मैं **'केवल सच'** परिवार को इस महत्वपूर्ण अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि यह विशेषांक न केवल बिहार बल्कि पूरे देश के पाठकों के लिए प्रेरणा, ऊर्जा और ज्ञान का मूल्यवान स्रोत सिद्ध होगा।

(सुनील कुमार)

दीपक प्रकाश
मंत्री,
पंचायती राज विभाग,
बिहार सरकार

बिहार सरकार

Deepak Prakash
Minister
Department of Panchayati Raj
Government of Bihar

पत्रांक: 1155

दिनांक : 10/12/2025

शुभकामना संदेश

''**केवल सच**'' पत्रिका निष्पक्ष रूप से विषयवस्तु को आमजनों के समक्ष जिस प्रकार से प्रकाशित कर रही है, वह निश्चय ही प्रशंसनीय एवं प्रेरक है।

व्यक्तिगत तौर पर यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि दिनांक 21 दिसम्बर, 2025 को **''गुरू गोविन्द सिंह विशेषांक''** का प्रकाशन होने जा रहा है।

इस अवसर पर अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मयोगियों को **'' गुरू गोविन्द सिंह केवल सच सम्मान–2025''** से सम्मानित किये जाने का भी कार्यक्रम प्रस्तावित है।

''केवल सच'' पत्रिका के 20वाँ स्थापना वर्ष के अवसर पर ''सिखों के दसवें गुरू '' **गुरू गोविन्द सिंह केवल सच सम्मान–2025''** का आयोजन किया जा रहा है। ''**गुरू गोविन्द सिंह विशेषांक**'' के विमोचन पर संपादक मण्डल एवं पत्रिका के सभी प्रतिनिधियों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ सम्प्रेषित करता हूँ।

Deepak Prakash
10/12/2025.
(दीपक प्रकाश)

कार्यालयः पंचायती राज विभाग, नया सचिवालय, विकास भवन, बेली रोड, पटना–800015
दूरभाष–0612–2215088, ई–मेल–ministerprdbihar@gmail.com

राजेश कुमार, भा०प्र०से०
आयुक्त, कोशी प्रमंडल,
सहरसा।

बिहार सरकार

–: शुभकामना संदेश :–

यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि 10वें सिख गुरू गोविंद सिंह महाराज जी के जीवन पर आधारित एक विशेषांक का प्रकाशन ''केवल सच'' पत्रिका के 20वें स्थापना दिवस के अवसर पर हो रहा है।

हम सब जानते हैं कि 10वें सिख गुरू, गुरू गोविंद सिंह का जन्म 22 दिसम्बर, 1666 को पटना बिहार में हुआ था। पाटलिपुत्र की धरती पर जन्म लिए गुरू गोविन्द सिंह जी का मुगलों की सेना से कई बार लड़ाई हुई। जिसमें भंगानी का युद्ध गुरू गोविन्द सिंह द्वारा लड़े गए सबसे महत्वपूर्ण युद्धों में से एक माना जाता है। उनके पुत्रों ने भी देश के लिए लड़कर बलिदान दे दिया। ऐसे जान की बाजी लगाने वाले बहादुर इतिहास में कम ही मिलते हैं। गुरू गोविन्द सिंह जी का कहना था **''सवा लाख से एक लड़ाऊ, चिड़ियन ते मैं बाज तुड़ाऊं, तबै गुरू गोविन्द सिंह नाम कहाऊं''** । ये बोल भारत की वीर परम्परा के प्रतीक हैं।

सन् 1699 ई0 में वैसाखी के दिन गुरू गोविंद सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की।

आशा है उनके महान व्यक्तित्व और कृतित्व के विभिन्न पहलुओं को भी विशेषांक में शामिल करने में ''केवल सच'' पत्रिका सफल होगा।

मेरी हार्दिक शुभकामना है कि भारत की राजधानी दिल्ली स्थित कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इण्डिया के सभागार में विशेषांक का अनावरण मील का पत्थर साबित होगा।

धन्यवाद।

Raje K.
(राजेश कुमार, भा.प्र.से.)
आयुक्त,
कोशी प्रमंडल, सहरसा।

मनोज कुमार
भा.पु.से.
पुलिस उप-महानिरीक्षक
कोशी क्षेत्र, सहरसा

सत्यमेव जयते

टेली. : 06478 - 223688 (R)
06478 - 222494 (O)
मोबाईल : 9431822959 (O)
9973711111 (P)
ई-मेल : digkoshi-bih@nic.in

पत्रांक- 3933

दिनांक : 03/12/25

गुरू गोविंद सिंह जी की पावन जयंती के शुभ अवसर पर मैं मनोज कुमार भा0पु0से0 पुलिस उप–महानिरीक्षक, कोशी क्षेत्र, सहरसा आप सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाऍ देता हूँ। यह दिवस ना केवल सिख समुदाय के लिए, बल्कि पूरे भारत वर्ष के लिए अत्यंत प्रेरणादायी है, गुरु गोविंद सिंह जी ने अपने जीवन, सिद्धान्तों एवं अद्म्य साहस से मानवता को एक ऐसा मार्ग दिखाया जो आज भी हमारे राष्ट्रीय चरित्र का आधार है।

गुरू गोविंद सिंह जी ना केवल एक धार्मिक गुरू थे, बल्कि वे महान विचारक, नीतिकार, कवि, संत, सैनिक और अद्‌भुत राष्ट्र नायक थे। उन्होंने अन्याय और अत्याचार के विरूद्ध जिस अदम्य इच्छाशक्ति से संघर्ष किया, यह हमें संदेश देती है कि सत्य और धर्म की रक्षा के लिए साहस, त्याग और दृढ़ता अनिवार्य है। इनके दूरदर्शी नेतृत्व में सिख पंथ को निरंतर एक नयी शक्ति और धार मिली। इन्होंने मानवता के कल्याण और धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए ऐतिहासिक पहल की थी, जो भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास को नयी दिशा प्रदान किया।

गुरू गोविंद सिंह जी ने अपने चार साहबजादों के बलिदान सहित अपने सम्पूर्ण जीवन को राष्ट्र और मानवता की सेवा के लिए समर्पित किया। उनका प्रत्येक संदेश – चाहे वह अन्याय के विरूद्ध खड़े होने का हो या कमजोरों की रक्षा का आज की पीढ़ी के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है।

इस पवित्र अवसर पर हम सभी को उनके महान जीवन से प्रेरणा लेकर यह संकल्प लेना चाहिए कि हम समाज में शांति, सद्‌भावना, समानता एवं नैतिकता को बढ़ावा देंगे।

आशा है उनके महान व्यक्तित्व और कृतित्व के विभिन्न पहलुओं को भी विशेषांक में शामिल करने में "केवल सच" पत्रिका सफल होगा।

मैं कामना करता हूँ कि गुरू गोविंद सिंह जी की दिव्य कृपा से हमारे देश में सौहार्द, प्रगति, भाईचारा और एकता का प्रकाश और अधिक उज्ज्वलित हो। उनके आदर्श हमें निरंतर शक्ति प्रदान करते रहें और हम राष्ट्र के उत्थान एवं मानवता की सेवा में सदैव तत्पर रहे।

गुरू गोविंद सिंह जी की जयंती की हार्दिक शुभकामनाएँ। जय हिंद।

Manoj
03/12/25
(मनोज कुमार)
पुलिस उप–महानिरीक्षक,
कोशी क्षेत्र, सहरसा।

S. K. MANDAL GROUP OF INSTITUTIONS, PATNA
Road No-3, East Patel Nagar, Near Gandhi Murti, Patna-800023
0612-2283169, 9060642412, 9431242412
krishna 54002@gmail.com www.skmgi.in

Ref. 328/2025 Date: 15-12-2025

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि **"केवल सच"** पत्रिका के 20वें स्थापना दिवस के अवसर पर दिल्ली के कांस्टीट्शन क्लब ऑफ इंडिया, नई दिल्ली के सभागार में **"केवल सच"** पत्रिका द्वारा सिख पंथ के अमर पथप्रदर्शक, दशम गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के दिव्य जीवन, अतुलनीय त्याग, अप्रतिम शौर्य एवं कालजयी उपदेशों पर आधारित विशेषांक का प्रकाशन भारतीय सांस्कृतिक-आध्यात्मिक चेतना के संरक्षण एवं प्रसार की दिशा में एक अत्यंत गौरवपूर्ण, प्रेरणास्पद एवं दूरदर्शी पहल है। यह विशेषांक न केवल गुरु जी के महान आदर्शों को जन-जन तक पहुँचाता है, बल्कि समाज में धर्म, न्याय, समानता, मानवता और राष्ट्रधर्म के मूल्यों को सुदृढ़ करने का भी सशक्त माध्यम बनता है।

इस उत्कृष्ट, सार्थक एवं जनहितकारी प्रयास हेतु केवल सच पत्रिका परिवार हार्दिक बधाई एवं साधुवाद का पूर्णतः अधिकारी है। ईश्वर से कामना है कि पत्रिका सत्य, संस्कार और सामाजिक जागरूकता के इस प्रकाश को निरंतर प्रज्वलित करती रहे तथा राष्ट्र निर्माण में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती रहे।

(एस० के० मंडल)
अध्यक्ष

S.K. MANDAL GROUP OF INSTITUTIONS
CHAIRMAN
PATNA

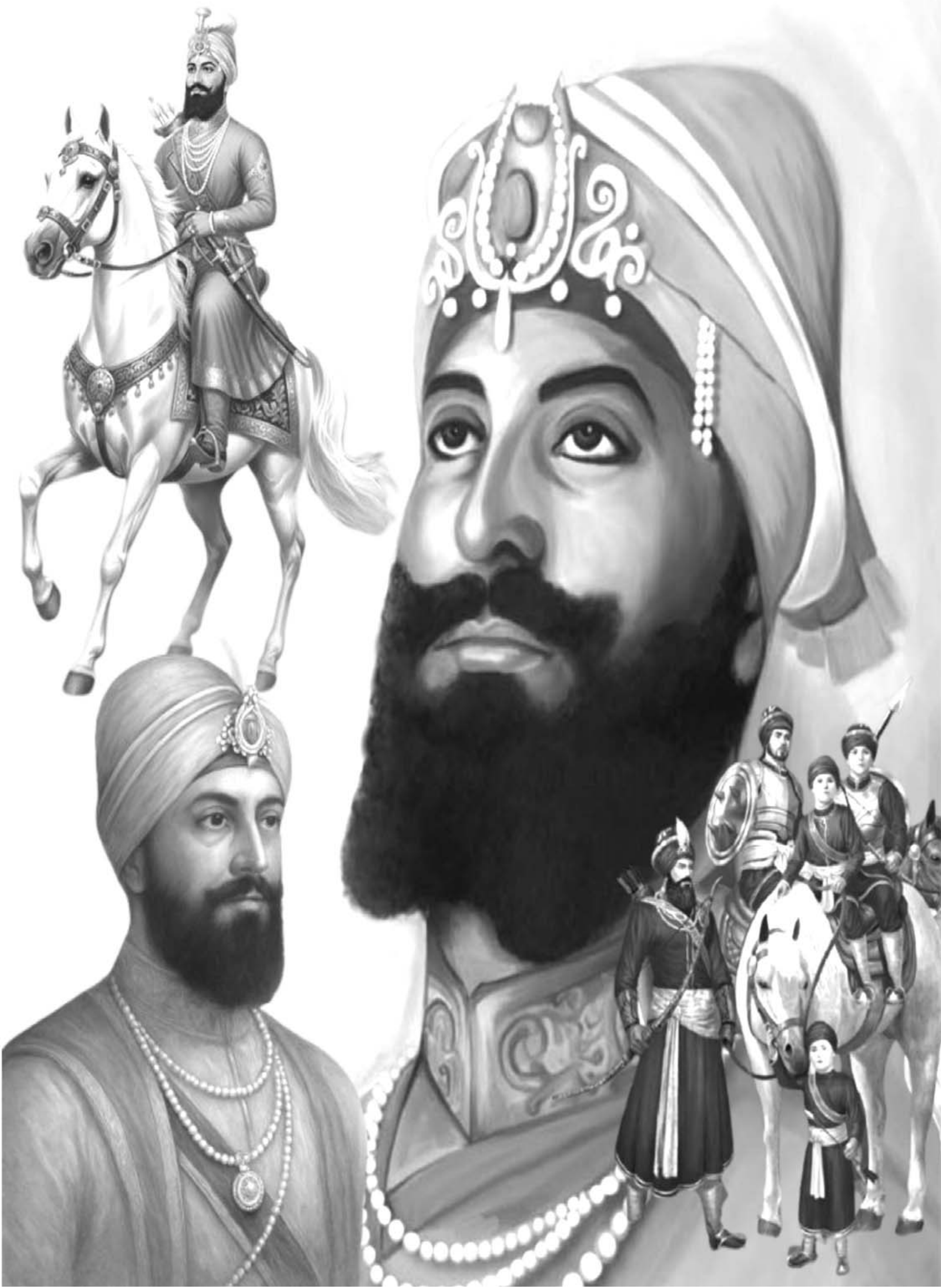

धर्म-न्याय की रक्षा में

साहिबजादों की कुर्बानी, गुरू गोबिंद सिंह का बलिदान

सरहिंद के नवाज वजीर खान ने दोनों साहिबजादों बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह को खुले आसमान के नीचे कैद कर दिया था, माता गुजरी भी साथ थीं। पूस की सर्द रात में चारों ओर से खुले ऊंचे बुर्ज पर भी माता गुजरी जी अपने दोनों छोटे साहिबजादों को धर्म की रक्षा के लिए सिर न झुकाने और धर्म न बदलने का ही पाठ पढ़ाती रहीं। यही सीख देकर माता गुजरी जी नन्हे साहिबजादों को वजीर खान की कचहरी में भेजती थीं। वजीर खान ने कचहरी में दोनों साहिबजादों से धर्म बदलने के लिए कहा पर उन्होंने ***'जो बोले सो निहाल, सत श्री अकाल'*** के जयकारे लगा कर धर्म बदलने से मना कर दिया था। यह सुन कर वजीर खान गुस्से में आ गया और दोनों साहिबजादों को जिंदा दीवार में चुनवाने का आदेश दे दिया। तारीख थी 26 दिसंबर 1705। एक पिता के जीवित रहते उनके पुत्रों की निर्मम हत्या हो जाये, उस पिता पर क्या बीतती होगी; इसे बयां करना मुश्किल होगा किन्तु धर्म और न्याय के लिए गुरू गोबिंद सिंह जी ने अपने चारों पुत्रों अजीत सिंह, जुझार सिंह, जोरावर सिंह, फतेह सिंह का बलिदान दे दिया और उनके वियोग में गुरू जी की माता गुजरी जी ने अपने प्राण त्याग दिये। गुरू जी ने न सिर्फ पुत्रों का ही बलिदान दिया बल्कि इससे पूर्व उनके पिता गुरू तेग बहादुर सिंह जी, जो सिखों के 9वें गुरू थे, कश्मीरी पंडितों पर मुगलों के अत्याचार और जबरन धर्म परिवर्तन को लेकर खिलाफत करते हुए गुरू गोबिंद सिंह जी के कहने पर युद्ध छेड़ दी थी और क्रूर मुगल शासक औरंगजेब ने गुरू तेग बहादुर जी का सर कलम करने का आदेश दे दिया। वही एक पुरानी कहावत है कि 'घर के भेदी लंका ढ़ाये'। बता दें कि पहाड़ी राजाओं ने खालसा के विरोध में गुरू गोबिंद सिंह जी की हत्या की साजिश रची और औरंगजेब से गुरू जी को रास्ते से हटाने की मिन्नते की। औरंगजेब के सवा लाख सिपाहियों के साथ मात्र 40 सिखों ने गुरू गोबिंद सिंह के नेतृत्व में युद्ध किया। तभी से कहा जाने लगा **''सवा लाख से एक लड़ाऊं, चिड़ियन ते मैं बाज तुड़ाऊं, तबै गुरु गोबिंद सिंह नाम कहाऊं।''** गौरतलब हो कि गुरू गोबिंद सिंह ने धर्म की रक्षा के लिए 'पंच प्यारे' को बनाया और 'खालसा' का निर्माण किया। खालसा के तहत प्रत्येक सिखों को पांच 'क' को अमल करना था, जिनमें केश (बिना कटे बाल), कड़ा (स्टील का कंगन), कंघा (कंघी), कृपाण (तलवार) और कच्छेरा (सैन्य अंतर्वस्त्र)। गुरू गोबिंद सिंह जी ने 'खालसा' के निर्माण के बाद सारी घटनाओं को एक ग्रंथ में समाहित किया, जिसे आदि ग्रंथ कहा गया और उसी वक्त गुरू गोबिंद सिंह जी द्वारा कहा गया कि अब हमोर बाद इस आदि ग्रंथ को ही अपना 11वाँ गुरू माना जाये। बता दें कि क्रूर औरंगजेब की मृत्यु के बाद हुई उत्तराधिकार की लड़ाई में उसके पुत्र शहजादा मुअज्जम ने अपने भाइयों के खिलाफ लड़ाई में गुरु गोबिंद सिंह की मदद माँगी। गुरु ने कुलदीपक सिंह के नेतृत्व में मुअज्जम के भाई आजम से लड़ने के लिए सिख लड़ाकों का एक जत्था भेजा। जून, 1707 में आगरा के पास जजाऊ में हुई लड़ाई में आजम मारा गया और मुअज्जम मुगलों की गद्दी पर बैठा। गद्दी पर बैठने के बाद मुअज्जम ने अपना नाम बदल कर बादशाह बहादुर शाह रख लिया। अपने जीवन के अंतिम पड़ाव मे गुरु गोबिंद सिंह गोदावरी नदी के किनारे बसे शहर नांदेड़ में थे। उनके सुरक्षाकर्मियों को आदेश थे कि उनसे मिलने आने वाले किसी व्यक्ति को रोका न जाए।'' 20 सितंबर, 1708 की शाम जब वो प्रार्थना के बाद अपने बिस्तर पर आराम कर रहे थे, दो युवा पठानों अताउल्ला खाँ और जमशेद खाँ ने उनके तंबू मे प्रवेश किया। गुरु को अकेला पाकर दोनों ने उनके पेट पर छुरे से वार किया। उन दोनों को वजीर खाँ ने भेजा था। बाद में साल 1709 में गुरु गोविन्द सिंह के बच्चों की हत्या का बदला लिया गया। 1709 में बंदा बहादुर ने सरहिंद के एक कस्बे 'समाना' पर हमला किया और इस दौरान सरहिंद के किसानों ने उन्हें घोड़े और धन उपलब्ध कराया। समाना पर हमला करने की वजह ये थी कि 34 साल पहले गुरु तेगबहादुर का सिर कलम करवाने वाला और गुरु गोबिंद सिंह के लड़कों को मारने वाला व्यक्ति वजीर खान उसी शहर में रह रहा था।' 22 मई 1710 को हुई लड़ाई में बंदा बहादुर के भाई फतह सिंह ने वजीर खान को मार गिराया। बहरहाल, दिसंबर सिख धर्म में बलिदानों और विरासत का महीना है । दसवें गुरु श्री गोविंद सिंह जी के चार पुत्रों ने जो धर्म की रक्षा के लिए शहादत दी थी। इस शहादत को नमन करते हुए 21 दिसंबर से 27 दिसंबर तक शहीदी सप्ताह के रूप में मनाया जाता है और भारत सरकार ने 26 दिसंबर 2022 को गुरु गोविंद सिंह के छोटे बच्चों की शहादत की याद में 'वीर बाल दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की थी। अंततः पूरा आलेख में दी जानकारी शहीदी सप्ताह को लेकर समर्पित हैं, जिनमें गुरू गोबिंद सिंह जी के शाहस, वीरता, दयालुता, संघर्ष और बलिदान को दर्शाया गया है। यह विचार करना प्रासंगिक होगा कि मानव इतिहास के इतिहास में गुरु गोबिंद सिंह जी से ज्यादा प्रेरणादायक जीवन जीने वाला कोई व्यक्ति नहीं है! आज इस महान शख्स को लेकर राष्ट्रीय हिन्दी पत्रिका **'केवल सच'** शहीदी विशेषांक को प्रकाशित कर रही है, जिसे पत्रिका के संयुक्त संपादक **अमित कुमार** ने विभिन्न स्त्रोतों के माध्यम से 10वें गुरू, गुरू गोबिंद सिंह जी पर विशेष आलेख तैयार की है, प्रस्तुत है उसके अंश :-

इतिहास में गुरु गोबिंद सिंह की छवि एक लंबे छरहरे, बेहतरीन कपड़े पहनने वाले और कई तरह के हथियारों से सुसज्जित रहने वाले शख्स की है। तस्वीरों में उनके बाएं हाथ पर हमेशा एक सफेद बाज और पगड़ी में एक कलगी लगी दिखाई जाती है. 19 साल की उम्र तक उन्होंने अपने-आप को आने वाले समय के लिए तैयार किया. इस बीच उनको संस्कृत और फारसी पढ़ाई गई. हिंदी और पंजाबी उन्हें पहले से ही आती थी. उन्होंने घुड़सवारी करना और बंदूक चलाना भी सीखा. उन्होंने चार भाषाओं में कविताएं लिखना शुरू कर दिया. कभी-कभी वो एक ही कविता में चारों भाषाओं का इस्तेमाल करते, ऐसे थे गुरू गोबिंद सिंह जी। उनके जीवन काल में एक क्षण ऐसा भी आया जब उन्हें अपने कलेजे के टुकड़ों का बलिदान करना पड़ा। बता दें कि सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी के परिवार की शहादत को आज भी इतिहास की सबसे बड़ी शहादत माना जाता है। छोटे साहिबजादों का स्मरण आते ही सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है और सिर श्रद्धा से झुक जाता है। देश में पहली बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ऐलान के बाद ही 26 दिसंबर को गुरु गोबिंद सिंह जी के छोटे साहिबजादों बाबा जोरावर सिंह जी और बाबा फतेह सिंह जी के साहस को श्रद्धांजलि देने के लिए 'वीर बाल दिवस' पूरे देश-विदेश में मनाया जाता है। गुरुद्वारा श्री फतेहगढ़ साहिब उस स्थान पर खड़ा है, जहां साहिबजादों ने आखिरी सांस ली। गुरु गोबिंद सिंह जी के परिवार की शहादत को भारतीय इतिहास की सबसे बड़ी शहादत माना जाता है। शहीदी सप्ताह, सिख कैलेंडर में दुःख और गहन श्रद्धा के साथ अंकित एक पवित्र अवधि है, जो गुरु गोबिंद सिंह जी और उनके चार पुत्रों द्वारा किए गए सर्वोच्च बलिदानों का स्मरण कराता है। मुगल सेना ने गुरु गोबिंद सिंह के पवित्र स्थान आनंदपुर साहिब पर महीनों तक घेरा बनाए रखा। मुगलों के आनंदपुर साहिब पर हमले के बाद गुरु गोबिंद सिंह जी का परिवार बिछड़ गया। छोटे साहिबजादे, बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह, माता गुजरी के साथ सरहिंद में कैद कर लिए गए। वजीर खान द्वारा धर्म परिवर्तन करने से इनकार करने पर, दोनों साहिबजादों को जिंदा दीवार में चुनवा दिया गया। 21 दिसम्बर से लेकर 27 दिसम्बर तक सिख शहीदी सप्ताह मनाते हैं।

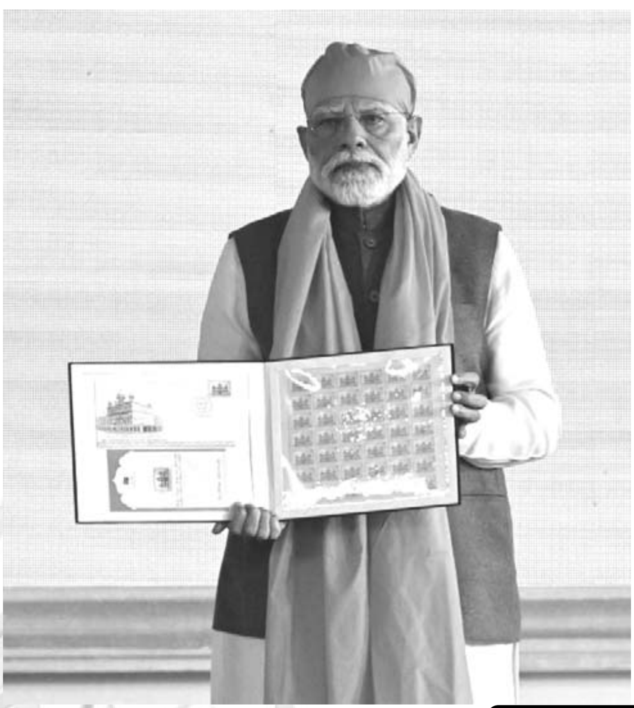

सर्वविदित है कि गुरु गोविन्द सिंह सिक्खों के दसवें और अन्तिम गुरु थे। उनका जन्म पौष, सुदी सप्तमी, संवत् 1723 विक्रमी, तदनुसार सन् 1666 ई0 में पटना (बिहार) में हुआ था। उनके पिता सिक्खों के नौवें गुरु तेगबहादुर तथा माता गूजरी थीं। उनका आरंभिक नाम गोविन्द राय था। उनकी शिक्षा-दीक्षा पटना में ही हुई। माँ ने गुरुमुखी और पिता गुरु तेग बहादुर ने उन्हें शस्त्र-शास्त्र दोनों की शिक्षा प्रदान की। गुरु गोविन्द सिंह को बिहारी और बंगला का भी ज्ञान था। गुरु गोविन्द सिंह में बचपन से ही अलौकिकता दिखायी देती थी। कश्मीरी पण्डितों को औरंगजेब ने जब मुसलमान बनाना चाहा, तो सब मिलकर गुरु तेगबहादुर के पास आनन्दपुर गये और उन्हें अपनी करुण कहानी सुनायी। उनकी बातों से गुरु तेगबहादुर मौन, उदास और दुखी हो गये। उसी समय नववर्षीय गोविन्द राय उनके पास आये। उन्होंने पिता से उनकी उदासी का कारण पूछा। पिता ने बताया, 'पंडितों पर घोर संकट है। औरंगजेब उन्हें मुसलमान बनाना चाहता है।' गोविन्दराय ने पूछा, इससे बचने का उपाय क्या है।? गुरु तेगबहुदर ने उत्तर दिया, औरंगजेब की प्रचण्ड धर्म की द्वेषाग्नि में किसी महान धर्मात्मा की आहुति ही इससे बचने का उपाय है। गोविन्दराय तुरन्त बोल उठे, आपसे बढ़कर कौन धर्मात्मा भारतवर्ष में होगा? आप ही उस अग्नि की आहुति बनिए। गुरु तेगबहादुर ने समझ लिया कि मेरा पुत्र मेरे न रहने पर गुरु-गद्दी का भार वहन कर लेगा। 1775 ई० में गुरु तेगबहादुर हँसते-हँसने दिल्ली में शहीद हुए। उनकी शहादत से सारा देश थर्रा उठा। गुरु-गद्दी का उत्तरदायित्व अल्पायु में ही गोविन्द राय के ऊपर आ पड़ा। उन्होंने उस समय शक्ति संघटन के लिए हिमालय की शरण ली और वहीं पहाड़ियों में अपना निवासस्थान बनाया तथा 20 वर्ष तक ऐकान्तिक साधना की। इस ऐकान्तिक साधना के दौरान उन्होंने कई रचनात्मक कार्य किए, जिनमें फारसी और संस्कृत के ऐतिहासिक-पौराणिक ग्रन्थों का विशद अध्ययन, हिन्दी कवियों को वीर-काव्य लिखने के लिए प्रेरित करना और स्वयं काव्य-रचना करना, घुड़सवारी और तीरन्दाजी में निपुणता प्राप्त करना प्रमुख है।

सिख धर्म के विश्वकोश के अनुसार, जिसका संपादन हरबंस सिंह जी ने किया है और जिस पर डॉ. गुरबख्श सिंह जी ने शोध किया है, माता जीतो और माता सुंदरी दो अलग-अलग व्यक्ति थे और उनमें से केवल एक का विवाह गुरु गोबिंद सिंह से हुआ था। यह धारणा कि गुरु की एक से ज्यादा पत्नियाँ थीं, उन लेखकों द्वारा फैलाई गई थी जो पंजाबी संस्कृति से अनभिज्ञ थे। बाद के लेखकों ने गुरु के एक से ज्यादा विवाहों का संकेत देने वाले उन लेखों को स्वीकार कर लिया और माना कि एक से ज्यादा पत्नियाँ रखना एक विशेषाधिकार या शाही कार्य था। उन दिनों राजा, सरदार और अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति आमतौर पर एक से ज्यादा पत्नियाँ रखते थे, जो

उनके महान और आम आदमी से श्रेष्ठ होने का प्रतीक था। एक सच्चे राजा होने के नाते, गुरु गोबिंद सिंह जी की एक से ज्यादा पत्नियाँ रखना उनकी नजर में उचित था, लेकिन गुरु गोबिंद सिंह की सिर्फ एक ही पत्नी थी। पंजाब में, विवाह से जुड़े दो और कभी-कभी तीन बड़े समारोह होते हैं, यानी सगाई (करमाई), शादी और मुकलावा। इन तीनों समारोहों में अक्सर 'गण बाजना' (गायन और नृत्य) के साथ एक बड़ा उत्सव मनाया जाता है। पहले, कई मामलों में, सगाई व्यक्ति के शिशु अवस्था से आगे बढ़ते ही कर दी जाती थी, जबकि विवाह अक्सर विभिन्न जनजातियों को एक साथ लाने या एकजुट करने के लिए आयोजित किया जाने वाला एक आयोजन होता था। इनमें से एक सबसे प्रसिद्ध विवाह रणजीत सिंह की माँ के लिए आयोजित किया गया था, जिसके परिणामस्वरूप एक अधिक सुसंगत मिस्ल इकाई (पहले से युद्धरत कबीलों का एकीकरण) का निर्माण हुआ, जिससे 12 मिस्लें अंततः महाराजा रणजीत सिंह के शासन में एकजुट हो गईं। शेक्सपियर की रोमियो और जूलियट की कहानी का भी सुखद अंत होता अगर युद्धरत परिवार एक विवाह में एकजुट हो जाते। गुरु जी की सगाई के समय, परंपरा के अनुसार, आनंदपुर साहिब में गुरु जी के लिए एक बड़ा समारोह और अन्य आनंदमय गतिविधियाँ आयोजित की गईं। दुल्हन, माता जीतो जी, लाहौर में रहती थीं, जो उस समय मुगल शासकों की राजधानी थी, जिनके गुरु जी के साथ अच्छे संबंध नहीं थे। जब विवाह समारोह का समय आया, तो गुरु जी के लिए बड़ी संख्या में सशस्त्र सिखों के साथ लाहौर जाना उचित नहीं समझा गया। इसके अलावा, इसमें बहुत अधिक यात्रा और भारी खर्च शामिल होता और इससे संगत को, खासकर गुरु जी के विवाह के साक्षी बनने की इच्छा रखने वाले युवा और वृद्ध सदस्यों को असुविधा होती। इसलिए, जैसा कि सिख इतिहास में उल्लेख है, विवाह के लिए गुरु के लाहौर जाने के बजाय, लाहौर को आनंदपुर साहिब लाया गया था। आनंदपुर से कुछ मील उत्तर में एक सुंदर स्थान को विवाह के लिए एक सुंदर शिविर के रूप में विकसित किया गया था। इस स्थान का नाम गुरु का लाहौर रखा गया। आज भी लोग आनंदपुर जाकर इस स्थान को देखने आते हैं। दुल्हन को उसके माता-पिता इसी स्थान पर लाए थे और विवाह समारोह में एक बहुत बड़ी भीड़ ने भाग लिया था। गुरु की सगाई और विवाह के समय हुए दो भव्य समारोहों ने बाहरी दर्शकों को दो विवाहों का आभास दिया। उनके ऐसा मानने का कारण भी था क्योंकि एक दूसरा नाम भी था, यानी माता सुंदरी जी। पंजाब में विवाह के बाद, ससुराल वालों द्वारा दुल्हन को एक नया स्नेहपूर्ण नाम देने की प्रथा है। माता जीतो जी को उनके सुंदर रूप और सुंदरता के कारण गुरु की माता ने सुंदरी नाम दिया था। दो नामों और दो कार्यों के कारण बाहरी लोगों को यह विश्वास हो गया कि गुरु की दो पत्नियाँ थीं। वास्तव में, गुरु की केवल एक ही पत्नी थी, जिसके दो नाम थे, जैसा कि ऊपर बताया गया है।

कुछ इतिहासकार तो यहाँ तक कहते हैं कि गुरु गोबिंद सिंह की एक तीसरी पत्नी भी थीं, माता साहिब कौर। 1699 में, जब गुरु जी ने खालसा पंथ की स्थापना की, तो उन्होंने अमृत बनाने के लिए पानी में पतासे (फूला हुआ चीनी) डालने को कहा। जहाँ गुरु गोबिंद सिंह जी को खालसा के आध्यात्मिक पिता के रूप में मान्यता प्राप्त है, वहीं माता साहिब कौर जी को खालसा की आध्यात्मिक माता माना जाता है। अमृत समारोह से अनभिज्ञ लोग गलती से यह मान लेते हैं कि माता साहिब कौर जी, गुरु गोबिंद सिंह जी की पत्नी थीं। चूँकि गुरु गोबिंद सिंह जी खालसा के आध्यात्मिक पिता तो हैं, लेकिन उनके जैविक पिता नहीं, इसलिए माता साहिब देवन जी खालसा की आध्यात्मिक माता हैं। माता साहिब देवन खालसा की आध्यात्मिक माता हैं, लेकिन गुरु गोबिंद सिंह की पत्नी नहीं। पंजाबी संस्कृति और अमृत

समारोह की अज्ञानता के कारण, कुछ लेखकों ने गुरु गोबिंद सिंह के जीवन में वर्णित इन तीन महिलाओं के नामों को उनकी तीन पत्नियों के नाम समझ लिया। इस गलतफहमी का एक और कारण यह है कि माता साहिब देवन के माता-पिता, जैसा कि कुछ सिख इतिहासग्रंथों में उल्लेख है, उनका विवाह गुरु गोबिंद सिंह से करने का निश्चय कर चुके थे। जब यह प्रस्ताव आनंदपुर में चर्चा के लिए लाया गया, तब तक गुरु जी पहले ही विवाहित हो चुके थे। इसलिए, गुरु जी ने कहा कि चूँकि वह पहले से ही विवाहित थे, इसलिए वह दूसरी पत्नी नहीं रख सकते। लड़की के माता-पिता के सामने दुविधा यह थी कि, प्रस्ताव सार्वजनिक हो जाने के बाद, कोई भी सिख गुरु की मंगेतर से विवाह करने को तैयार नहीं होगा। गुरु जी ने उन्हें आनंदपुर में रहने की अनुमति दे दी, लेकिन उन्हें अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार नहीं किया। सवाल यह उठा कि चूँकि ज्यादातर औरतें बच्चे पैदा करने की चाहत रखती हैं, तो वह बिना शादी के कैसे बच्चा पैदा कर सकती है। गुरु ने बताया कि, 'वह एक महान पुत्र की 'माँ' बनेगी जो हमेशा जीवित रहेगा और पूरी दुनिया में जाना जाएगा।' लोगों को उनके कथन का गूढ़ अर्थ तभी समझ में आया जब गुरु ने माता साहिब देवन से अमृत में मिठास घोलने के लिए पतासे लाने को कहा, जो खालसा पंथ के जन्म के साथ हमेशा के लिए जुड़ गए। इसलिए, अज्ञानतावश कुछ लेखक माता साहिब देवन को गुरु गोबिंद सिंह की सांसारिक पत्नी मानते हैं।

गौरतलब है कि गुरू गोबिंद सिंह की जीवनी को समझने से पहले उन 10 गुरूओं को जानना जरूरी है, जिन्होंने लोगों में अपने नाम की अमिट छाप छोड़ी। 10 गुरूओं में प्रथम गुरू गुरूनानक रहे और आखिरी गुरू गोबिंद सिंह जी। इन 10 गुरूओं पर विस्तार से जानते हैं:-

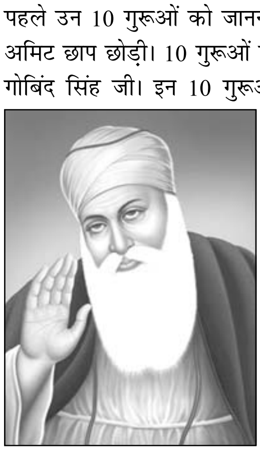

☞ **गुरुनानक जी :-** खत्री (व्यापारी) जाति के सदस्य और निरक्षर से कोसों दूर, नानक कोई आम संत नहीं थे, फिर भी उन्होंने अपने बाहर और भीतर की हर चीज में ईश्वर की उसी भावना का अनुभव किया जैसा कि उनके द्वारा स्थापित आंदोलन के अन्य लोगों ने किया था। उनका जन्म पंजाब में हुआ था, जो तब से सिख धर्म का केंद्र रहा है। नानक ने कई भजनों की रचना की, जिन्हें पाँचवें सिख गुरु, गुरु अर्जन देव ने 1604 में आदि ग्रंथ में संकलित किया। इन ग्रंथों के रचयिता नानक ही थे, इसमें कोई संदेह नहीं है और यह भी निश्चित है कि उन्होंने पूरे भारत में तीर्थ स्थलों की यात्रा की थी। इसके अलावा बहुत कम जानकारी उपलब्ध है। उनके जीवन की कहानी पौराणिक कथाओं की कल्पित उपज है। जन्म-साखियाँ, जो 1539 में गुरु की मृत्यु के 50 से 80 वर्ष बाद रची गईं, हालाँकि उनमें पाई गई सामग्री का केवल एक छोटा सा अंश ही तथ्यात्मक माना जा सकता है। पहली जन्म-साखियों का श्रेय नानक के आजीवन साथी, भाई बाला (1466-1544) को दिया जाता है, जिन्होंने गुरु के जीवन का एक ऐसा वृत्तांत रचा जो चमत्कारों और अद्‌भुत कहानियों से भरा था। 19वीं शताब्दी के अंत तक, बाला संस्करण ने सिख विद्वानों के बीच गंभीर बेचैनी पैदा करना शुरू कर दिया था, जिन्हें तब से एक अधिक तर्कसंगत संस्करण, जिसे बाद में 'बाला' के रूप में जाना जाता है, जिससे उन्हें काफी राहत मिली। पुरातन परंपरा, लंदन में खोजी गई थी, जहाँ यह ईस्ट इंडिया कंपनी के पुस्तकालय के लिए एक उपहार के रूप में आई थी। हालाँकि इसमें भी काल्पनिक तत्व थे, लेकिन इसमें बाला संस्करण की तुलना में चमत्कारिक कहानियाँ बहुत कम थीं और यह गुरु नानक की यात्राओं का अधिक विश्वसनीय विवरण प्रस्तुत करता

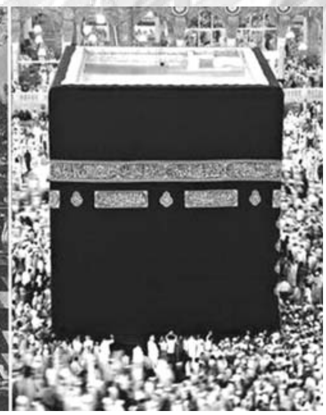

है। कवि भाई गुरदास (1551-1637) के एक प्रवचन के संदर्भों से पूरित होने पर, पुरातन गुरु नानक के जीवन का एक संतोषजनक विवरण प्रदान करता प्रतीत होता है। इस संस्करण के अनुसार, नानक ने पाँच यात्राएँ कीं, कम्पास के चारों दिशाओं में से प्रत्येक में एक, उसके बाद पंजाब के भीतर एक। उन्होंने पहले पूर्व की ओर और फिर दक्षिण की ओर यात्रा की और श्रीलंका पहुँचे। इसके बाद वे उत्तर की ओर हिमालय की गहराइयों में गए, जहाँ उन्होंने सिद्धों के रूप में जाने जाने वाले नाथ गुरुओं से शास्त्रार्थ किया, जिनके बारे में माना जाता है कि उन्होंने योग के अभ्यास से अमरता प्राप्त कर ली थी। पश्चिम की उनकी यात्रा उन्हें बगदाद, मक्का और मदीना ले गई। इसके बाद वे पंजाब में रावी नदी के दाहिने किनारे पर स्थित करतारपुर गाँव में बस गए। दक्षिणी पंजाब का दौरा करने के बाद, एक वफादार शिष्य को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करने के बाद, करतारपुर में उनकी मृत्यु हो गई। नानक की मक्का यात्रा की कथा से पुरातन परंपरा की पवित्रता का स्पष्ट चित्रण होता है। शहर में प्रवेश करने के बाद, नानक अपने पैरों को मेहराब (मस्जिद में वह जगह जो काबा की दिशा दर्शाती है) की ओर करके लेट गए। एक क्रोधित काजी ने उन्हें वहाँ पाया और उनसे स्पष्टीकरण माँगा। जवाब में, नानक ने उनसे अपने पैरों को मेहराब से दूर खींचने को कहा। काजी ने ऐसा ही किया और पाया कि जहाँ भी उन्होंने नानक के पैर रखे, वहाँ मेहराब हिल गया। इस कथा का सार यह है कि ईश्वर सर्वत्र है, किसी विशेष दिशा में नहीं। एक और लोकप्रियप्राचीन कथा नानक के पूर्वी भारत में 'नारियों द्वारा शासित भूमि' की यात्रा से संबंधित है। नानक के वफादार गायक और यात्रा साथी, मरदाना, भोजन माँगने के लिए आगे बढ़े, लेकिन उनमें से एक महिला ने उन्हें भेड़ बना दिया। जब नानक वहाँ पहुँचे, तो उन्होंने उस महिला के सिर पर एक कलश रख दिया और मरदाना को 'वाहि गुरु' (गुरु की स्तुति) कहने का निर्देश देकर उसे उसके मूल रूप में वापस कर दिया। इसके बाद महिलाओं ने उन दोनों पर हर तरह के भयानक जादू-टोने का प्रयास किया, लेकिन असफल रहीं। जब नारियों द्वारा शासित भूमि की रानी, नूर शाह, नानक को लुभाने की अपनी कोशिश में विफल रहीं, तो महिलाओं ने अंततः हार मान ली।

नानक निश्चित रूप से नाथों के प्रशंसक नहीं थे, जो स्पष्टतः धर्मांतरण के लिए उनसे प्रतिस्पर्धा करते थे। जन्म-साखी के उपाख्यानों में नानक और सिद्धों के बीच शास्त्रार्थ को काफी प्रमुखता दी गई है, जिसमें नानक हमेशा अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त करते हैं। इसके विपरीत, उन्होंने सिद्धों के संदेश को स्वीकार किया। संतों ने इसे अत्यंत आकर्षक और सुंदर भजनों में अभिव्यक्त किया। उन्होंने सिखाया कि सभी लोग आत्मा के पुनर्जन्म के अधीन हैं और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति का एकमात्र और पर्याप्त साधन ईश्वरीय नाम का ध्यान है। नानक के अनुसार, नाम संपूर्ण सृष्टि को समाहित करता है ख्रआस्थावान के बाहर की हर चीज और उसके

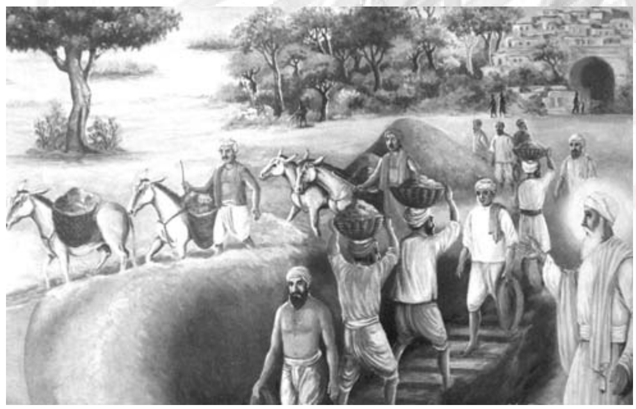

भीतर की हर चीज। ईश्वर की कृपा से, या अकाल पुरख (नानक द्वारा ईश्वर के लिए लिखे गए नामों में से एक) द्वारा दिव्य शब्द सुनकर, और उस शब्द को स्वीकार करने का निर्णय लेकर, आस्तिकनाम सिमरन या नाम का ध्यान। इस साधना के माध्यम से, वह धीरे-धीरे नाम के विविध संकेतों को समझने लगता है और मुक्ति के साधन क्रमशः प्रकट होते हैं। रहस्यमय अनुभव के निरंतर उच्चतर स्तरों पर चढ़ते हुए, आस्तिक को शांति और आनंद की बढ़ती हुई अनुभूति का आशीर्वाद प्राप्त होता है। अंततः सच खंड (सत्य का निवास) तक पहुँच जाता है और आस्तिक अकाल पुरुष के साथ पूर्ण और पूर्ण एकता की स्थिति में पहुँच जाता है। सिखों का मानना है कि जिस आवाज' से आस्तिक के भीतर शब्द उच्चारित होता है, वह शाश्वत आत्मा की होती है गुरु। चूँकि नानक ने नाम सिमरन का अनुष्ठान किया था,

इसलिए शाश्वत गुरु ने देह धारण की और उनके भीतर निवास किया। नानक की मृत्यु के बाद, शाश्वत गुरु, नानक के प्रत्येक उत्तराधिकारी में, क्रमशः अवतरित हुए और गुरु गोबिंद सिंह की मृत्यु के साथ, यह सिखों के पवित्र धर्मग्रंथ, गुरु ग्रंथ साहिब में प्रतिष्ठित हो गए।

☞ **गुरु अंगद जी :-** 1539 में नानक की मृत्यु हो गई, उन्होंने सबसे पहले गुरु अंगद (1504-52) को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। मूल रूप से लहिना के नाम से जाने जाने वाले अंगद हिंदू देवी दुर्गा के उपासक थे। जब वे एक दल का नेतृत्व कर रहे थे और ज्वालामुखी (भारत के हिमाचल प्रदेश राज्य में इसी नाम के एक कस्बे में स्थित एक मंदिर) के पवित्र स्थल की ओर जा रहे थे, तो वे करतारपुर से गुजरे और नानक के भजनों की सुंदरता से तुरंत प्रभावित हो गए। इसके बाद भावी गुरु अपने नए गुरु के प्रति पूरी तरह से वफादार हो गए और उनके व्यवहार ने नानक को यह विश्वास दिला दिया

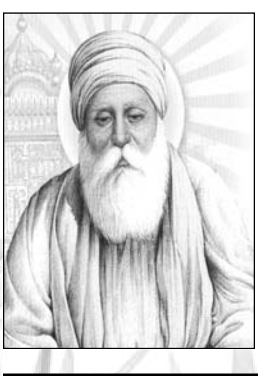

कि वे गुरु के दोनों पुत्रों की तुलना में अधिक उपयुक्त उत्तराधिकारी होंगे। एक पूर्णतः आज्ञाकारी शिष्य, अंगद ने नानक की शिक्षाओं में कोई नवीनता नहीं लाई और उनके नेतृत्व का काल घटनाहीन रहा।

☞ **गुरु अमर दास जी :-** जब अंगद की मृत्यु हुई, तो गुरु की उपाधि अमर दास (1479-1574) को मिली, जो दूसरे गुरु के प्रति अपनी पूर्ण निष्ठा के लिए जाने जाते थे। परंपरा के अनुसार, अमर दास एक वैष्णव थे जिन्होंने अपना जीवन एक गुरु की तलाश में बिताया था। गंगा नदी की यात्रा के दौरान, उन्होंने अंगद की पुत्री को नानक का एक भजन गाते हुए सुना, जिसके बाद उन्होंने सिख बनने का फैसला किया। अमर दास, जो गुरु बनने के समय 73 वर्ष के थे, ने उस समय पंथ की जिम्मेदारी संभाली जब यह अपने शुरुआती वर्षों के पहले प्रवाह के बाद स्थिर हो रहा था। कई सिख पंथ में पैदा हुए थे, और नानक के अधीन धर्म की विशेषता वाला उत्साह और जोश खत्म हो गया था। सिखों को अपने धर्म में दृढ़ करने के लिए अनुष्ठान आवश्यक थे, अमर दास ने एक पवित्र कुआं खोदने का आदेश दिया (बावली), जिसे उन्होंने एक के रूप में नामित किया। तीन त्यौहार दिवस (बैसाखी, माघी और दिवाली) बनाए ; तथा पवित्र भजनों का एक ग्रंथ संकलित किया, जिसे 'बैसाखी' कहा जाता है, गोइंदवाल पोथियाँ।

☞ **गुरु रामदास जी :-** चौथे गुरु, गुरु राम दास (1534-81), गुरु अमर दास के दामाद थे। उन्हें संभवतः शहर के संस्थापक के रूप में जाना जाता है। अमृतसर, जो सिख धर्म की राजधानी और सिखों के पवित्र तीर्थस्थल का स्थान बन गया। हरमंदिर साहिब (जिसे बाद में स्वर्ण मंदिर के नाम से जाना गया), सिख धर्म का प्रमुख पूजा स्थल। उन्होंने मंजी की जगह मसंद (विकर), जिन्हें परिभाषित की देखभाल का प्रभार सौंपा गया था, संगतें (मण्डलियाँ) थीं और जो साल में कम से कम एक बार गुरु को सिख समुदाय की रिपोर्ट और उपहार भेंट करती थीं। भजन-गायन में विशेष रूप से कुशल गुरु रामदास

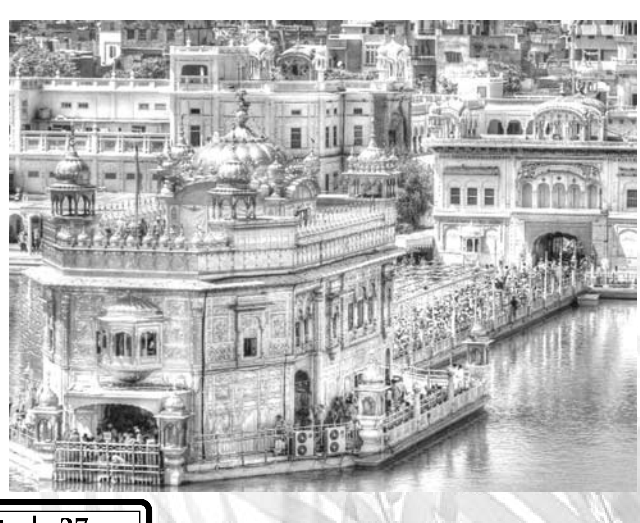

ने इस प्रथा के महत्व पर जोर दिया, जो आज भी सिख पूजा का एक महत्वपूर्ण अंग है। खत्री जाति के एक सदस्य औरसोढ़ी परिवार में राम दास ने अपने पुत्र अर्जन को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया और उसके बाद के सभी गुरु उनके प्रत्यक्ष वंशज थे।

☞ **गुरु अर्जन देव जी :-** गुरु अर्जन (1563-1606) के सबसे बड़े भाई, पृथी चंद, अपने भाई की नियुक्ति के प्रति स्पष्ट रूप से शत्रुतापूर्ण थे और बदले में अर्जन के इकलौते पुत्र हरगोबिंद को जहर देने का प्रयास किया। पृथी चंद और उनके अनुयायियों ने उन भजनों का भी प्रसार किया, जिनके बारे में उनका दावा था कि वे पूर्ववर्ती गुरुओं द्वारा लिखे गए थे। इससे प्रेरित होकर अर्जन ने भजनों का एक प्रामाणिक संस्करण संकलित किया, जो उन्होंने भाई गुरदास को अपना लेखक बनाकर किया और गोइंदवाल पोथी को मार्गदर्शक के रूप में लिया। परिणामस्वरूप आदि ग्रंथ, एक पूरक संस्करण के रूप में, गुरु ग्रंथ साहिब बन गया। यह आस्था का आवश्यक ग्रंथ बना हुआ है और सिख हमेशा इसके प्रति गहरा सम्मान दिखाते हैं और जब भी उन्हें मार्गदर्शन, सांत्वना या शांति की आवश्यकता होती है, तो वे इसकी ओर रुख करते हैं। अर्जन के जीवनकाल में पंथ ने लगातार धर्मांतरण किया, खासकर जाट कृषक जाति के लोगों में। पंजाब का मुगल शासक धर्म के विकास को लेकर चिंतित था और सम्राट जहाँगीर, जहाँगीर के विद्रोही पुत्र खुसरो के प्रति अर्जन के कथित समर्थन की अफवाहों से प्रभावित था। मुगलों ने गुरु अर्जन को गिरफ्तार कर लिया और उन्हें यातनाएँ देकर मार डाला। हालाँकि, अपनी मृत्यु से पहले, उन्होंने अपने पुत्र-छठे गुरु, हरगोबिंद को हमेशा हथियार रखने का आग्रह किया।

गुरु हरगोविंद जी :- छठे गुरु, गुरु हरगोबिंद (1595-1644) की नियुक्ति, एक सख्त धार्मिक पंथ से एक ऐसे पंथ में परिवर्तन का प्रतीक है जो धार्मिक और लौकिक दोनों था। अर्जन द्वारा अपने पुत्र को दिए गए आदेश को बाद में मीरी/पीरी (लौकिक अधिकार/आध्यात्मिक अधिकार) कहा गया। हरगोबिंद अभी भी गुरु थे और इस तरह उन्होंने अपने पांच पूर्ववर्तियों द्वारा स्थापित पैटर्न को जारी रखा। दूसरे शब्दों में, वह एक पीर या आध्यात्मिक नेता थे, लेकिन वह अपने लोगों के मीर या सरदार भी थे, जो हथियारों के बल पर अत्याचार से उनकी रक्षा के लिए जिम्मेदार थे। गुरु और पंथ की नई स्थिति की पुष्टि हरगोबिंद के कार्यों से हुई और यह अमृतसर की वास्तुकला में परिलक्षित हुई। हरमंदिर साहिब, पीरी का प्रतीक, एक इमारत है जिसके रूप में जाना जाता है अकाल तख्त, मीरी का प्रतीक। इस प्रकार, जब हरगोबिंद हरमंदिर साहिब और अकाल तख्त के बीच खड़े हुए और दो तलवारें बाँधीं, तो संदेश स्पष्ट था, उनके पास

आध्यात्मिक और लौकिक, दोनों तरह की सत्ता थी।

हरगोबिंद ने पंजाब में मुगल सेनाओं के साथ रुक-रुक कर युद्ध किया। ऐसी चार झड़पों के बाद, वह अमृतसर से हट गए और शिवालिक पहाड़ियों की तलहटी में स्थित कीरतपुर पर कब्जा कर लिया। यह उनके लिए कहीं अधिक उपयुक्त स्थान था क्योंकि यह मुगल प्रशासन के प्रत्यक्ष नियंत्रण वाले क्षेत्र से बाहर था। 1644 में अपनी मृत्यु तक वे वहीं रहे। उनकी मृत्यु से पहले, यह प्रश्न उठा कि उनका उत्तराधिकारी कौन होगा। हालाँकि यह निश्चित था कि उत्तराधिकारी उनका कोई वंशज होगा, यह स्पष्ट नहीं था कि उनके बच्चों या पोते-पोतियों में से कौन उनकी जगह लेगा। हरगोबिंद की तीन पत्नियाँ थीं, जिनसे उन्हें छह बच्चे हुए। सबसे बड़ा पुत्र, गुरदित्त, जो स्पष्ट रूप से इस पद के लिए उनका पसंदीदा था, उनसे पहले ही मर चुका था, और शेष पाँचों में से कोई भी इस पद के लिए उपयुक्त नहीं लग रहा था। गुरदित्त का बड़ा पुत्र, धीर मल को इसलिए

अस्वीकार कर दिया गया क्योंकि उन्होंने जालंधर जिले में अपनी गद्दी से बादशाह शाहजहाँ के साथ गठबंधन कर लिया था। इसका मतलब था कि गुरदित्त के छोटे बेटे, हर राय, सातवें गुरु बनेंगे। लेकिन धीर मल रूढ़िवादी पंथ के लिए मुश्किलें खड़ी करते रहे और कई सिखों को अपने अनुयायी बना लिया। उन्होंने यह भी दावा किया कि उनके पास गुरु अर्जन देव द्वारा रचित पवित्र ग्रंथ है और उन्होंने इसका इस्तेमाल अपने एकमात्र वैध गुरु होने के दावे को पुष्ट करने के लिए किया।

☞ **गुरु हर राय जी :-** गुरु हर राय (1630-61) का काल अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण रहा। वे कीरतपुर से वापस शिवालिक पहाड़ियों में चले गए और सिरमौर में एक छोटे से दल के साथ बस गए। वहाँ से वे कभी-कभी पंजाब के मैदानों में सिखों से मिलने और उन्हें उपदेश देने आते थे। इस दौरान कई मसंदों ने उनकी खूब सेवा की, जो उन्हें सिखों के बारे में समाचार और पंथ के खर्चों के लिए धन भेंट करते थे। हालाँकि, शांति का यह दौर ज्यादा समय तक नहीं चला। गुरु हर राय को मुगलों से उन्हीं समस्याओं का सामना करना पड़ा जो गुरु अर्जन देव को हुई थीं। मुगल गद्दी के सफल दावेदार औरंगजेब ने अपने बड़े भाई दारा शिकोह को हराकर दिल्ली में अपना कब्जा जमा लिया। फिर उसने हर राय को संदेश भेजा कि वह अपने बेटे को छुड़ा ले। दारा शिकोह के प्रति हर राय के कथित समर्थन के लिए राम राय को बंधक के रूप में रखा गया था। औरंगजेब स्पष्ट रूप से भावी गुरु को मुगल तरीकों से शिक्षित करना और उन्हें मुगल सिंहासन का समर्थक बनाना चाहता था। इस खोज की सफलता को दर्शाने वाले एक प्रकरण में, औरंगजेब ने एक बार राम राय से आदि ग्रंथ में एक अपमानजनक पंक्ति की व्याख्या करने के लिए कहा, जिसमें दावा किया गया था कि 'मिट्टी के बर्तन, मिट्टी मुसलमानों की हैं या मृत मुस्लिम शरीर से बने हैं' राम राय ने जवाब दिया कि शब्दों की गलत नकल की गई है। मूल पाठ 'मिट्टी बेईमान' की होना चाहिए था, जो कि अविश्वासी लोगों के शरीर से बनी धूल है। जब यह उत्तर हर राय को बताया गया, तो उन्होंने राम राय को फिर कभी न देखने का इरादा घोषित किया। क्योंकि उन्होंने गुरु नानक के शब्दों को बदलने का गंभीर अपराध किया था, राम राय कभी भी गुरु नहीं बन

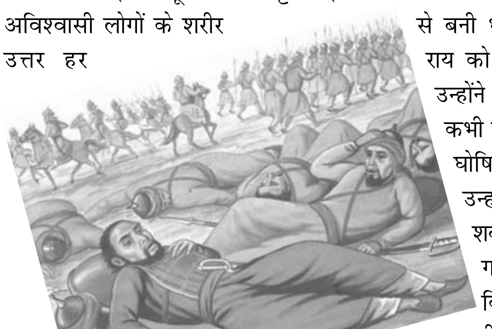

सके।

☞ **गुरुहरि कृष्ण जी :-** औरंगजेब ने गुरु हरि कृष्ण (1656-64) को शिवालिक पहाड़ियों से दिल्ली बुलाया। दिल्ली में रहते हुए, हरि कृष्ण को चेचक हो गया, जो घातक साबित हुआ। अपनी मृत्यु से पहले, उन्होंने 'बाबा बकाले' शब्द कहे, जिससे उनके अनुयायियों को उनके उत्तराधिकारी, बाबा (बूढ़े व्यक्ति) की पहचान का संकेत मिला, जो बकाला गाँव में रहते थे। हरि कृष्ण का आशय तेग बहादुर की पहचान करना था, जो बकाला में रहते थे और गुरु हरगोबिंद की दूसरी पत्नी के पुत्र और गुरु हरि कृष्ण के दादा के सौतेले भाई थे।

☞ **गुरु तेग बहादुर जी :-** जैसे ही ये शब्द प्रसिद्ध हुए, कई आशावान लोग उपाधि लेने के लिए बकाला पहुँचे। सिख परंपरा के अनुसार, एक व्यापारी माखन शाह समुद्र में एक भयंकर तूफान में फँस गया था और अपनी परेशानी में उसने सिख गुरु को 501 स्वर्ण मोहरें (सिक्के) देने का प्रण किया, अगर उसे बचा लिया जाए। तूफान थमने के बाद, जीवित बचे व्यक्ति ने पंजाब की यात्रा की और यह जानकर कि गुरु बकाला में रहते हैं, वह वहाँ गया। उसने पाया कि गुरु हरि कृष्ण की मृत्यु के बाद कई लोगों ने उपाधि का दावा किया था। उसने उन सभी की परीक्षा लेने का निश्चय किया और प्रत्येक दावेदार के सामने दो स्वर्ण मोहरें रख दीं। अंततः वह तेग बहादुर के पास पहुँचा, जिन्होंने उससे अपने वादे का शेष भाग माँगा। छत पर पहुँचकर, माखन शाह

ने घोषणा की कि उसे सचमुच सच्चे गुरु मिल गए हैं।

गुरु तेग बहादुर (1621–75) का काल दो कारणों से महत्वपूर्ण है। पहला यह कि तेग बहादुर द्वारा रचित कई भजनों को गुरु गोबिंद सिंह ने गुरु अर्जन द्वारा मूल रूप से बनाए गए संग्रह में शामिल कर लिया था; तब से यह ग्रंथ बंद कर दिया गया था और तब से आदि ग्रंथ अक्षुण्ण बना हुआ है। दूसरा कारण तेग बहादुर की मृत्यु के तरीके से संबंधित है। सिख परंपरा के अनुसार, उन्हें गिरफ्तार किया गया था। कश्मीरी ब्राह्मणों को इस्लाम में धर्मांतरित करने के मुगल प्रयासों के खिलाफ उनकी सहायता करने के लिए मुगल अधिकारियों द्वारा उन पर आरोप लगाया गया। धर्मांतरण या मृत्यु में से एक विकल्प दिए जाने पर, उन्होंने दूसरा विकल्प चुना और तुरंत उनका सिर कलम कर दिया गया। इस फाँसी के एक प्रत्यक्षदर्शी सिख ने गुरु तेग बहादुर के कटे हुए शरीर को उठाया और सम्मानजनक अंतिम संस्कार सुनिश्चित करने के लिए उसे दिल्ली के बाहर अपने घर ले गया। किसी को संदेह न हो, इसके लिए उसने अपने पूरे घर में आग लगा दी और गुरु के शरीर के साथ उसका भी अंतिम संस्कार कर दिया। इस बीच, तीन बहिष्कृत सिखों ने गुरु का कटा हुआ सिर सुरक्षित कर लिया और उसे गुप्त रूप से आनंदपुर ले गए। इस सेवा के कारण उन्हें और उनके सभी उत्तराधिकारियों को रंगरेता सिख कहलाने का अधिकार मिला, जो गुरु के बहिष्कृत अनुयायियों का एक सम्मानित समूह था। आनंदपुर पहुँचकर, उन्होंने जोरदार विलाप के बीच कटा हुआ सिर प्रस्तुत किया।

☞ **गुरु गोबिंद सिंह जी :-** 1675 में गुरु गोविंद सिंह सिखों के दसवें गुरु बने थे। उन्हें ये पदवी पिता गुरु तेग बहादुर के निधन के बाद मिली थी। वे एक महान योद्धा, कवि, भक्त एवं आध्यात्मिक नेता थे। गुरु गोविंद सिंह के दरबार में 52 कवि, लेखकों की उपस्थिति थी, इसीलिए उन्हें 'संत सिपाही' भी कहा जाता था। वे भक्ति और शक्ति के अद्वितीय संगम थे। सन् 1699 में बैसाखी के दिन उन्होंने खालसा पंथ की स्थापना की, जो सिखों के इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है। गुरु गाविंद सिंह ने सिखों की पवित्र ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब को पूरा किया तथा उन्हें गुरु रूप में सुशोभित किया। बिचित्र नाटक को उनकी आत्मकथा माना जाता है। यही उनके जीवन के विषय में जानकारी का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है। यह दसम ग्रंथ का एक भाग है। दसम ग्रंथ, गुरु गोबिंद सिंह की कृतियों के संकलन का नाम है। उन्होंने मुगलों या उनके सहयोगियों (जैसे, शिवालिक पहाड़ियों के राजा) के साथ 14 युद्ध लड़े। धर्म के लिए समस्त परिवार का बलिदान उन्होंने किया, जिसके लिए उन्हें 'सर्वस्वदानी' भी कहा जाता है।

बताते चले कि गुरु गोबिंद सिंह सिर्फ नौ साल के थे जब उनके पिता गुरु तेग बहादुर का कटा हुआ सिर अंतिम संस्कार के लिए आनंदपुर साहब लाया गया था। उनके पिता की शहादत ने जीवन भर उनके नजरिए को प्रभावित किया। इतिहास में गुरु गोबिंद सिंह की छवि एक लंबे छरहरे, बेहतरीन कपड़े पहनने वाले और कई तरह के हथियारों से सुसज्जित रहने वाले शख्स की है। तस्वीरों में उनके बाएं हाथ पर हमेशा एक सफेद बाज और पगड़ी में एक कलगी लगी दिखाई जाती है। 19 साल की उम्र तक उन्होंने अपने-आप को आने वाले समय के लिए तैयार किया। गुरु गोबिंद सिंह को पहली चुनौती उनके पड़ोसी पहाड़ी राज्य बिलासपुर के राजा भीम चंद से मिली। भीम चंद को गुरु गोबिंद सिंह का लोगों के बीच लोकप्रिय होना नागवार गुजरा। राजा इसलिए भी नाराज हो गया था क्योंकि एक बार

गुरु ने उन्हें अपना हाथी देने से इनकार कर दिया था। उन्होंने आनंदपुर पर हमला कर दिया जिसमें उनकी हार हुई। "सिख धर्म में हिंदू धर्म के विपरीत सभी जातियों को समान महत्व दिया गया था, लिहाजा ऊँची जाति के सामंतवादी सोच रखने वाले लोगों से उनका टकराव लाजिमी था। पड़ोसी राज्यों के सरदारों को ये बात बिल्कुल पसंद नहीं आ रही थी क्योंकि आने वाले समय में जनतांत्रिक सिख मूल्य उनके सामंतवादी अधिकारों के लिए खतरा साबित हो सकते थे।" सन् 1685 में गुरु गोबिंद सिंह ने पड़ोसी सिरमौर राज्य के राजा मेदिनी प्रकाश की मेजबानी कबूल कर ली। वो वहाँ तीन सालों तक रहे, इसके बाद उन्होंने अपने रहने के लिए यमुना नदी के किनारे एक जगह चुनी जिसका नाम था पंवटा। यहीं उनके सबसे बड़े बेटे अजीत सिंह का जन्म हुआ। यहां उनको एक बार फिर लड़ाई का सामना करना पड़ा। इस बार भीम चंद और फतेह शाह की संयुक्त सेना ने उन पर हमला किया। ये लड़ाई पंवटा से छह मील दूर भंगानी में हुई। इस लड़ाई में भी इन राजाओं की हार हुई और लोगों को पता चल गया कि गोबिंद सिंह कितने ताकतवर हैं।

सन् 1699 की शुरुआत में उन्होंने सभी सिखों को संदेश दिया कि वे बैसाखी के मौके पर आनंदपुर में जमा हों। भीड़ के सामने ही उन्होंने अपनी म्यान से तलवार निकाली और ऐलान किया कि ऐसे पाँच लोग सामने आएं जो धर्म की रक्षा के लिए अपनी जान कुर्बान कर सकते हों। सबसे पहले लाहौर के दयाराम आगे आए। गुरु उनको बगल के एक तंबू में ले गए। उनके बाद हस्तिनापुर के धरमदास, द्वारका के मोहकम चंद, जगन्नाथ के हिम्मत और बीदर के साहिब चंद आगे आए। तंबू के बाहर जनता उत्सुकता से उनके बाहर आने का इंतजार करती रही, गुरु की तलवार से खून टपकता देख लोगों को लगा कि उन्हें मार दिया गया है। थोड़ी देर बाद गुरु गोबिंद सिंह इन पाँचों लोगों के साथ बाहर आए। इन पाँचों ने केसरिया रंग के कपड़े और पगड़ी पहनी हुई थी। तब जाकर वहाँ मौजूद लोगों को अहसास हुआ कि गुरु ने उनको मारा नहीं था। वो उनके साहस की परीक्षा ले रहे थे। गुरु ने इन पाँचों लोगों को 'पंज प्यारे' का नाम दिया। उन्होंने एक कड़ाहे में जल भरकर उसमें शक्कर डाल कर अपनी कृपाण से मिलाया और उन पाँचों लोगों को एक कटोरे में पीने को दिया। ये पाँचों लोग अलग-अलग हिंदू जातियों के थे। इसका सांकेतिक अर्थ ये था कि इस जल को पीकर वो जाति विहीन खालसा के सदस्य हो गए हैं। उन सबके हिंदू नाम बदलकर उन्हें उपनाम 'सिंह' दिया गया। बता दें कि खालसा, गुरु द्वारा स्थापित शुद्ध और पुनर्गठित सिख समुदाय गोबिंद सिंह द्वारा 30 मार्च, 1699 (बैसाखी दिवस; खालसा सिख प्रत्येक वर्ष 13 अप्रैल को इस संप्रदाय का जन्मोत्सव मनाते हैं) को स्थापित किया गया था। उनकी घोषणा के तीन आयाम थे। इसने सिख समुदाय के भीतर अधिकार की अवधारणा को पुनर्परिभाषित किया; इसने एक नया दीक्षा समारोह और आचार संहिता प्रस्तुत की; और इसने समुदाय को एक नया धार्मिक और राजनीतिक दृष्टिकोण प्रदान किया। खालसा शब्द का प्रयोग दीक्षित सिखों के समूह और सभी सिखों के समुदाय, दोनों के लिए किया जाता है। प्रारंभिक सिख समुदाय तीन स्तरों के प्राधिकार द्वारा आकारित था- मसंद (गुरु के प्रतिनिधि) स्थानीय सभाओं के लिए जिम्मेदार थे; गुरु सक्रिय केंद्रीय प्राधिकारी थे; और सिख धर्मग्रंथों में दर्ज प्रकट वचन प्रतीकात्मक आधार का काम करते थे। खालसा की स्थापना के साथ, मसंदों का अधिकार समाप्त हो गया। उनसे अपेक्षा की जाती थी कि वे या तो समुदाय के अन्य सदस्यों के समान सदस्य बनें या समुदाय छोड़ दें।

खालसा के 5 'क'

- ☞ केश (बिना कटे बाल)
- ☞ कड़ा (स्टील का कंगन)
- ☞ कंघा (कंघी)
- ☞ कृपाण (तलवार)
- ☞ कच्छेरा (सैन्य अंतर्वस्त्र)

गोविंद सिंह ने एक नया दीक्षा संस्कार भी शुरू किया । जिसे आमतौर पर कहा जाता है अमृत पाहुल (अमृत समारोह)। लेकिन इसे खंडे की पाहुल (शाब्दिक रूप से, "दोधारी तलवार का समारोह") के रूप में भी जाना जाता है, यह प्रकट शब्द की परिवर्तनकारी शक्ति में विश्वास पर केंद्रित था। शब्द का पाठ किया गया था जबकि दीक्षा के लिए पानी को दोधारी तलवार से हिलाया गया था। प्रत्येक सिख जो समारोह में शामिल हुआ, वह खालसा का सदस्य बन गया, उसे सिंह ("शेर") नाम दिया गया और उससे आचार संहिता (राहित) का कठोर पालन करने की अपेक्षा की गई, जिसका प्रतीक पांच चीजें पहनना था- केश (लंबे बाल), कंघा (एक कंघी), कच्छा (एक जोड़ी निकर), कर्हा (एक स्टील का कंगन) और किरपान (एक तलवार)। इन वस्तुओं के नाम पंजाबी अक्षर से शुरू होते हैं और इस प्रकार इन्हें पाँच 'क' के रूप में जाना जाता है। अंत में उन्होंने नए तरह के अभिवादन की शुरुआत की, ***वाहे गुरुजी का खालसा, वाहे गुरु जी की फतह।*** अपने तीसरे पहलू में, खालसा ने एक ठोस राजनीतिक

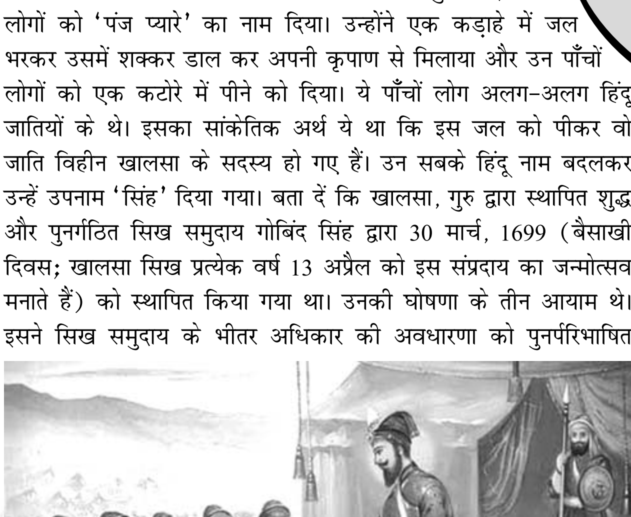

गुरु गोविंद सिंह का सबसे प्रसिद्ध नारा है ***'सवा लाख से एक लड़ाऊं, चिड़ियन ते मैं बाज तुड़ाऊं, तबै गुरु गोबिंद सिंह नाम कहाऊं'।*** यह नारा उनकी वीरता, साहस और नेतृत्व की क्षमता को दर्शाता है, जिसमें वे बताते हैं कि वे एक को सवा लाख से भी लड़वा सकते हैं और चिड़ियों से भी बाज जैसे शक्तिशाली को तुड़वा सकते हैं। एक और प्रसिद्ध नारा ष्वाहे गुरु दा खालसा, वाहे गुरु दी फतेहष है, जो खालसा पंथ से जुड़ा है।

☞ **वीरता और साहस का प्रतीकः** यह नारा दर्शाता है कि गुरु गोविंद सिंह की शक्ति और प्रेरणा से एक अकेला व्यक्ति भी बहुत से लोगों का सामना कर सकता है।

☞ **खालसा पंथ का संबंधः** यह नारा खालसा पंथ के संस्थापक के रूप में उनकी पहचान और उनके सिद्धांतों के प्रति निष्ठा को भी व्यक्त करता है।

☞ **अन्य प्रसिद्ध उद्धरणः** गुरु गोविंद सिंह ने ष्वाहे गुरुजी का खालसा, वाहे गुरुजी की फतेहष जैसे अन्य महत्वपूर्ण नारे भी दिए हैं, जो खालसा वाणी का हिस्सा हैं।

एजेंडा अपनाया-पंजाब में सिख समुदाय के शासन (खालसा राज, 'ईश्वर का राज्य') को साकार करने का संकल्प। इन तीन परस्पर जुड़े आयामों ने खालसा संस्था को पिछली तीन शताब्दियों में सिख पहचान को आकार देने में शायद सबसे शक्तिशाली शक्ति बना दिया है। शुरुआत में एक पुरुष संस्था, यह अब महिलाओं (जो कौर 'राजकुमारी' नाम धारण करती हैं) के लिए भी खुली है, हालाँकि खालसा का अधिकार अभी भी पुरुषों के हाथों में है। दिगर बात है कि शिवालिक पहाड़ियों के राजपूत शासक इस क्षेत्र में बढ़ते सिख प्रभाव को लेकर चिंतित थे। वे बिलासपुर के राजा (राजा) के अधीन एकजुट हुए, जिनके क्षेत्र में आनंदपुर स्थित था, गुरु को बाहर निकालने के लिए। 1700 और 1704 के बीच बार-बार हमलों के बावजूद, उनके प्रयास विफल रहे। उन्होंने अंततः सम्राट औरंगजेब से सहायता मांगी, जिसने लाहौर के गवर्नर और सरहिंद (पंजाब का एक शहर) के फौजदार (पुलिस अधिकारी) को सुदृढीकरण प्रदान करने का आदेश दिया। साथ में, उन्होंने मई 1705 में आनंदपुर की ओर कूच किया और घेराबंदी की। गुरु गोबिंद सिंह ने खालसा को पुनर्गठित सिख सेना की मार्गदर्शक भावना बनाने के बाद, दो मोर्चों पर सिखों के दुश्मनों के खिलाफ कदम बढ़ाया :-एक सेना मुगलों के खिलाफ और दूसरी पहाड़ी जनजातियों के खिलाफ। हमलावरों ने अंततः उन्हें सुरक्षित मार्ग प्रदान किया और अपने वादे को पूरा करने के लिए कुरान की शपथ ली। उनके वचन पर विश्वास करते हुए, गुरु और उनके अनुयायियों ने दिसंबर 1705 की एक रात आनंदपुर खाली कर दिया। हालाँकि, जैसे ही सिख वहाँ से निकले, पहाड़ी सरदारों और मुगल सैनिकों की संयुक्त सेना ने अपनी शपथ तोड़ दी और हमला कर दिया। इसके बाद हुई अफरा-तफरी में, कई सिख मारे गए और गुरु की कई संपत्तियाँ, जिनमें बहुमूल्य पांडुलिपियाँ भी शामिल थीं, नष्ट हो गई।

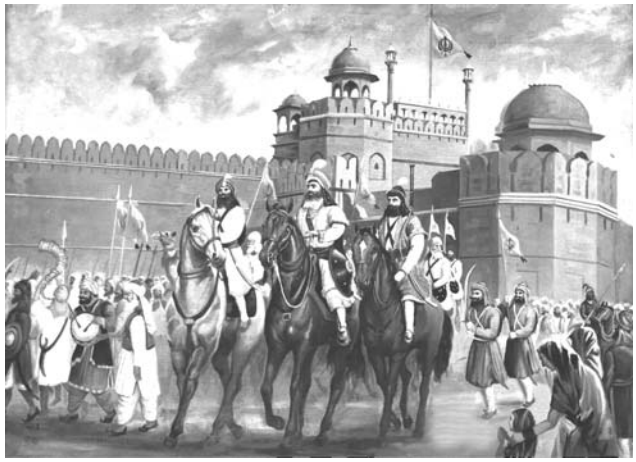

सन् 1701 से 1704 के बीच सिखों और पहाड़ी राजाओं के बीच झड़पें होती रहीं। आखिर बिलासपुर के राजा भीम चंद के बेटे और वारिस अजमेर चंद ने दक्षिण जाकर औरंगजेब से मुलाकात की और गुरु गोबिंद सिंह को रास्ते से हटाने के लिए मदद माँगी। औरंगजेब ने गुरु को एक पत्र भेजा जिसमें लिखा, "आपका और मेरा धर्म एक ईश्वर में यकीन करता है। हम दोनों के बीच गलतफहमी क्यों होनी चाहिए? आपके पास मेरी प्रभुसत्ता मानने के अलावा कोई चारा नहीं है जो मुझे अल्लाह ने दी है। अगर आपको कोई शिकायत है तो मेरे पास आइए। मैं आपके साथ एक धार्मिक व्यक्ति की तरह बर्ताव करूँगा। लेकिन मेरी सत्ता को चुनौती मत दें वर्ना मैं खुद हमले का नेतृत्व करूँगा।" इसका जवाब देते हुए गुरु गोबिंद सिंह ने लिखा, "दुनिया में सिर्फ एक सर्वशक्तिमान ईश्वर है, जिसके मैं और आप दोनों आश्रित हैं। लेकिन आप इसको नहीं मानते और उन लोगों के प्रति भेदभाव करते हैं, उन्हें नुकसान पहुंचाने की कोशिश करते हैं जिनका धर्म आपसे अलग है। ईश्वर ने मुझे न्याय बहाल करने के लिए इस दुनिया में भेजा है। हमारे बीच शांति कैसे हो सकती है जब मेरे और आपके रास्ते अलग हैं।" इसके बाद औरंगजेब ने दिल्ली, सरहिंद और लाहौर के अपने गवर्नरों को आदेश दिए कि गुरु पर नियंत्रण करने के लिए अपने सारे सैनिकों को लगा दें। आदेश में कहा गया कि पहाड़ी राजाओं के सैनिक भी मुगल सेना के साथ लड़ेंगे और गुरु को औरंगजेब के सामने पेश करेंगे। गुरु गोबिंद सिंह लगभग 40 सिखों और अपने दो बड़े बेटों के एक छोटे समूह के साथ आनंदपुर से 25 मील (40 किमी) दूर चमकौर में भागने में कामयाब रहे।

पीछा करने वाली सेनाओं ने उन्हें पकड़ लिया। 7 दिसंबर 1705 को चमकौर के युद्ध में गुरु के बेटे अजीत सिंह और जुझार सिंह लगभग सभी सिखों के साथ मारे गए। केवल पांच सिख बच गए और उन्होंने खालसा के भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए गुरु से भाग जाने का आग्रह किया। तीन अनुयायियों के साथ, गुरु ने पंजाब के एक क्षेत्र मालवा के जंगलों में शरण ली। खाली किए गए आनंदपुर में, गुरु के दो छोटे बेटों, जोरावर सिंह और फतेह सिंह, उनकी दादी माता गुजरी के साथ, उनके नौकर ने धोखा दिया और सरहिंद के फौजदार को सौंप दिया। इस समय के आसपास, गुरु ने सम्राट औरंगजेब को जफरनामा (विजय का पत्र) लिखा, उसके विश्वासघात की निंदा की और नैतिक अखंडता पर जोर दिया। जफरनामा को बाद में गुरु के दशम ग्रंथ में शामिल किया गया था। पश्चिम की ओर बढ़ते हुए, उन्होंने 29 दिसंबर, 1705 को खिद्राना में एक अंतिम मोर्चा बनाया। आगामी युद्ध में, कम संख्या में सिखों ने माई भागो (एक सिख महिला जो मुगलों के खिलाफ लड़ी थी) के नेतृत्व में पहुंचे 40 सिखों की मदद से मुगल सेनाओं को खदेड़ दिया। उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दी, और 40 मुक्ते (बचाए गए) के रूप में गुरु का आशीर्वाद प्राप्त किया। उनकी शहादत का स्थल अब मुक्तसर, ***'मुक्ति का कुंड'*** के रूप में जाना जाता है।

तय हुआ कि सरहिंद के गवर्नर वजीर खाँ के नेतृत्व में मुगल और पहाड़ी राजाओं की सेना आनंदपुर की तरफ कूच करेंगी। ये सुनते ही गुरु गोबिंद सिंह ने भाई मुखिया और भाई परसा को हुकुमनामा जारी कर घुड़सवारों, पैदल सैनिकों और साहसी युवाओं के साथ आनंदपुर पहुंचने के लिए कहा। कुरुक्षेत्र के मेले और अफगानिस्तान से घोड़ों का इंतजाम किया गया। सिपहसालारों ने सेना को चाक-चौबंद करने और खासतौर पर नए रंगरूटों को प्रशिक्षण देने, लड़ाई के लिए योजना बनाने में अपनी पूरी ताकत लगा दी। हर सैनिक ठिकाने में पर्याप्त व्यवस्था की गई ताकि संभावित घेराव से होने वाली मुश्किलों का सामना किया जा सके। गुरु ने अपनी सेना को छः भागों में विभाजित किया। पाँच टुकड़ियों को पाँच किलों की रक्षा की जिम्मेदारी दी गई और छठी टुकड़ी को रिजर्व के तौर पर रखा गया। गुरु गोबिंद सिंह ने आनंदगढ़ की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली। फतेहगढ़ की रक्षा की जिम्मेदारी उदय सिंह को मिली। मक्खन सिंह को नालागढ़ का कमांडर बनाया गया। गुरु के सबसे बड़े बेटे अजीत सिंह को केशगढ़ का इंचार्ज बनाया गया जबकि उनके छोटे भाई जुझार को लोहगढ़ की सुरक्षा का भार दिया गया। अमरदीप दहिया गुरु गोबिंद सिंह की जीवनी 'फाउंडर ऑफ द खालसा' में लिखते हैं, "गुरु ने अपने सभी जनरलों को बता दिया कि मुगल सेना के संख्या में अधिक होने के कारण उनसे खुले में लड़ाई लड़ना अक्लमंदी नहीं होगी। बेहतर रणनीति ये होगी कि हम अपने किलों के अंदर रह कर उनसे लड़े।" मुगल सेनाओं ने समुद्र की लहरों की तरह गुरु गोबिंद सिंह की सेना पर हमला किया। "पाँचों किलों से सिख तोपचियों ने उस इलाके को अपना निशाना बनाया जहाँ बहुत अधिक संख्या में मुगल सैनिक मौजूद थे। मुगल सैनिक खुले में लड़ रहे थे इसलिए सिख सैनिकों के मुकाबले उनका अधिक नुकसान हुआ। इसे देखते ही उदय सिंह और दया सिंह के नेतृत्व में सिख सैनिक किले से बाहर निकल आए और मुगल सैनिकों पर टूट पड़े। मुगलों के दो सिपहसालार वजीर खाँ और जबरदस्त खाँ ये देखकर दंग रह गए कि किस तरह उनकी फौज से कहीं छोटी फौज उनका इतना नुकसान कर रही है।" पहले दिन की लड़ाई की समाप्ति पर किलों की दीवारों के बाहर करीब 900 मुगल सैनिकों के शव पड़े हुए थे। अगले दिन गुरु गोबिंद सिंह खुद लड़ाई में शामिल हो गए। "गुरु अपने मशहूर घोड़े पर सवार थे। उनके घोड़े की जीन सुनहरे तारों से कढ़ी हुई थी। उनका धनुष चमकीले हरे रंग से रंगा हुआ था और उनके साफे पर

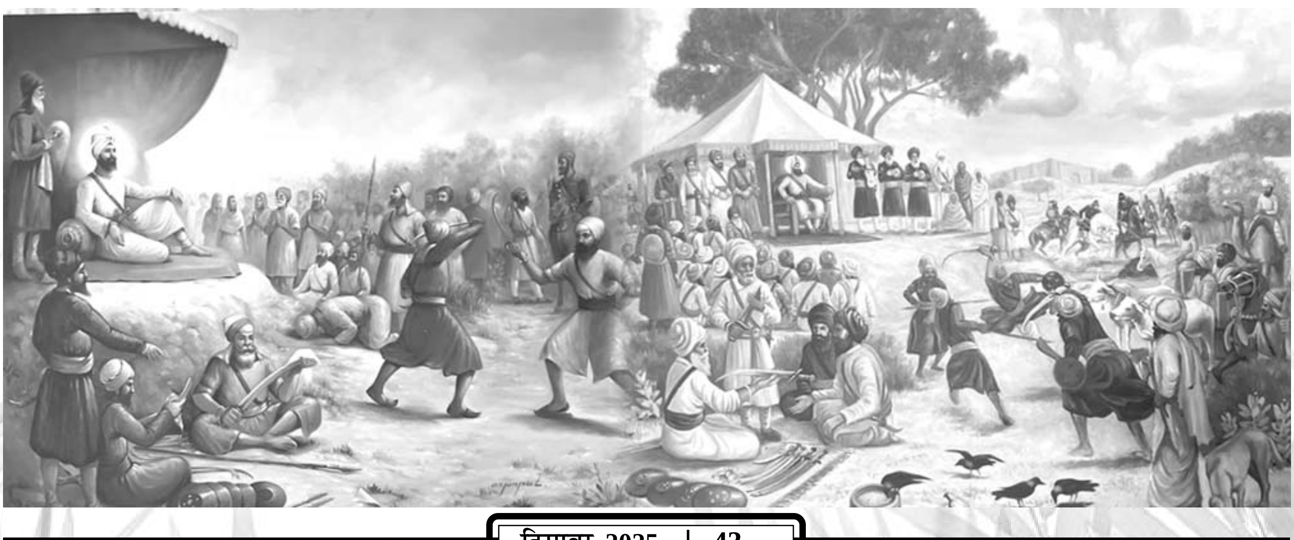

जवाहरातों से जड़ी कलगी सुबह के सूरज में चमक रही थी। गुरु के लड़ाई में भाग लेने से प्रेरित होकर उनके सैनिक भी आगे जाकर मुगलों से टक्कर ले रहे थे। राजा अजमेर चंद ने लड़ते हुए गुरु को पहचान लिया। तब वजीर खाँ और जबरदस्त खाँ ने वहीं ऐलान किया कि जो भी गुरु पर वार करेगा, उसे बड़ा ईनाम दिया जाएगा।" दूसरे दिन की लड़ाई की समाप्ति पर किले में दाखिल होने से पहले गुरु और उनके सैनिकों ने भारी तबाही मचाई थी। इसमें सैकड़ों घोड़े और मुगल सैनिक मारे गए थे। राजाओं और मुगल सैनिकों के बीच हुई बैठक में दोनों ने एक दूसरे पर पूरी ताकत से न लड़ने का आरोप लगाया। मुगलों को लग गया कि सिख सैनिकों को हराने का एकमात्र उपाय है कि उनके किलों की घेराबंदी कर उनको बाहरी दुनिया से पूरी तरह काट दिया जाए ताकि अनाज न पहुंचने के कारण भूख से परेशान होकर वो मुगलों की अधीनता मान लें। तय किया गया कि अब गुरु गोबिंद सिंह के सैनिकों पर हमला नहीं किया जाएगा बल्कि उनके किलों को चारों तरफ से घेर लिया जाएगा। उन्होंने ये भी सुनिश्चित किया कि वो सिख सैनिकों के हथियारों की पहुंच से बाहर रहें। किलों में इतना अनाज मौजूद था कि कुछ दिनों तक इस घेराबंदी का कोई असर नहीं दिखा। इस तरह दिन महीनों में बदलते गए, लेकिन मुगलों ने घेराबंदी में कोई ढील नहीं दी। मुगल सिपहसालारों को अपने सैनिकों को समझाना पड़ा कि वो धीरज रखें। वो दिन दूर नहीं जब सिखों की आपूर्ति समाप्त हो जाएगी और उन्हें हथियार डालने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। धीरे-धीरे किलों की रसद समाप्त होने लगी और सिखों को लगने लगा कि कुछ दिनों बाद उनके पास खाने के लिए कुछ नहीं रहेगा। कमांडरों की बैठक में तय हुआ कि सिख सैनिकों का एक जत्था बाहर जाकर मुगल सैनिकों के घेरे को तोड़ेगा और जितना अनाज ला सकता है अंदर लाएगा। उसी रात बाहर जाने का पहला प्रयास किया गया। मुगल सैनिकों को इसकी उम्मीद नहीं था। सिख सैनिक घेराबंदी तोड़ने में सफल हो गए और काफी सारा अनाज किले के अंदर ले आए। इसके बाद के बाहर निकलने के प्रयास कामयाब नहीं हो पाए। मुगल सैनिक सावधान हो गए और उनके बाहर निकलने के प्रयासों को सफलता नहीं मिली। कुछ दिनों बाद किलों के अंदर भुखमरी की नौबत आ गई। उस समय संगत के कुछ सदस्यों ने इस कष्ट से बचने के लिए किले से बाहर निकलने का फैसला किया। गुरु ने उन्हें रोकने की कोशिश नहीं की। मुगलों ने भी जब देखा कि बाहर निकलने वाले लोगों में अधिकतर महिलाएं, बच्चे और अधेड़ शख्स थे तो उन्होंने उन्हें रोकने की कोशिश नहीं की ताकि और सिख किले को छोड़कर बाहर आने के लिए प्रेरित हों। अजमेर चंद ने गोबिंद सिंह को एक पत्र लिखकर प्रस्ताव भेजा। पत्र में कहा गया कि अगर गुरु गोबिंद सिंह अपने साथियों को साथ आनंदपुर से निकल जाते हैं तो उन्हे जहाँ वो चाहें जाने की अनुमति होगी और वो अपने साथ बिना रोक-टोक अपना सामान ले जा सकेंगे। गुरु को इस प्रस्ताव में दाल में कुछ काला नजर आया लेकिन उनकी माँ माता गुजरी ने उन्हें मनाया कि ऐसा कर वो कई लोगों की जान बचा सकते हैं। गुरु ने कहा कि इससे पहले कि 'मैं इस प्रस्ताव को स्वीकार करूँ, मैं मुगलों और राजाओं की नेकनियती की परीक्षा लेना चाहता हूँ।' उन्होंने मुगलों को संदेश भिजवाया कि वो और उसके साथी आनंदपुर से

बाहर निकलने के लिए तैयार हैं बशर्ते उनके मूल्यवान सामान को बैलगाड़ियों के काफिले में पहले बाहर भेजा जाए। मुगलों ने तुरंत संदेश भेजा कि वो इसके लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा कि अगर जरूरत हो तो हम आपको बैलगाड़ियाँ भी भेजने के लिए तैयार हैं। "गुरु ने आनंदपुर के लोगों से अपना सारा बेकार सामान जमा करने के लिए कहा। थोड़ी देर में वहाँ पुराने जूतों, फटे पुराने कपड़ों, टूटे बर्तनों और जानवरों की हड्डियों का ढेर लग गया। इन सबको कीमती थैलों में डाल कर बैलगाड़ियों पर लादा गया। हर बैलगाड़ी पर मशाल जलाई गई ताकि लोगों का ध्यान उस पर लदे सामान पर जा सके।" बैलगाड़ियों का काफिला अँधेरी रात में किले से निकला। जैसे ही वो मुगल सेना की पहुंच के भीतर गए, उन सारे थैलों को लूट लिया गया। रातभर उन पर पहरा बैठा कर रखा गया। सुबह जब उनको खोला गया तो मुगल सैनिक ये देखकर दंग रह गए कि उन थैलों में कूड़ा-करकट भरा हुआ था। इस तरह गुरु गोबिंद सिंह ने राजाओं और मुगल सैनिकों के इरादों का भंडा फोड़ दिया। मुगलों और पहाड़ के राजाओं ने उनसे किए गए वादे का पालन नहीं किया। अंततः गुरु गोबिंद सिंह को आनंदपुर छोड़ना पड़ा। सिखों का जो पहला जत्था निकला, उसमें महिलाएं, बच्चे, गुरु की माँ और चार बेटे भी शामिल थे। वे जब एक छोटी नदी सरसा के किनारे पहुंचे, उन पर मुगल सैनिकों ने हमला बोल दिया। इस लड़ाई में गुरु गोबिंद सिंह के सबसे सक्षम कमांडर उदय सिंह मारे गए, लेकिन उन्होंने तब तक मुगलों का रास्ता रोक कर रखा जब तक गुरु गोबिंद सिंह वहां से सुरक्षित नहीं निकल गए। "इस लड़ाई में कई लोग मारे गए और कई लोग नदी के किनारे पहुंचने पर अपनों से बिछुड़ गए। इनमें शामिल थे गुरु गोबिंद सिंह की माँ और उनके दो छोटे बेटे जोरावर सिंह और फतह सिंह।" गुरु गोबिंद सिंह के अपने सैनिकों की संख्या 500 से घट कर सिर्फ 40 रह गई। वो इन सैनिकों और अपने दो बेटों के साथ चमकौर पहुंचने में सफल हो गए। मुगल सैनिक अभी भी उनके पीछे पड़े हुए थे। यहाँ हुई लड़ाई में गुरु गोबिंद सिंह के 40 सैनिकों ने अपने से संख्या में कहीं अधिक मुगल सैनिकों का बहादुरी से सामना किया, लेकिन इस लड़ाई में उनके दो बचे हुए बेटे अजीत सिंह और जुझार सिंह और 'पंज प्यारे' में शामिल मोहकम सिंह और हिम्मत सिंह मारे गए। चमकौर से बच निकलने के बाद गुरु अपने साथियों से बिछुड़ गए और मच्छीवाड़ा जंगलों में बिल्कुल अकेले हो गए, लेकिन कुछ देर बाद उनके तीन बिछड़े साथी उनसे आ मिले। ये चारों कुछ स्थानीय सिखों की मदद से किसी तरह उस स्थान से निकल पाने में कामयाब रहे। आखिर में वो जटपुरा गाँव पहुंचे जहाँ उस इलाके के मुस्लिम सरदार राय काल्हा ने उनका स्वागत किया।

बहरहाल, मुगलों ने गुरु गोविंद सिंह जी से बदला लेने के लिए सरसा नदी के किनारे हमला किया तो गुरु का परिवार उनसे बिछड़ गया था। गुरु से बिछड़ने के बाद माता गुजरी अपने रसोइए गंगू के साथ छोटे साहिबजादों बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह को लेकर उसके घर मोरिंडा चली गई थीं। गंगू ने अपने घर में माता गुजरी के पास मुहरें देखीं तो उसके मन में लालच आ गया। उसने माता गुजरी और दोनों साहिबजादों को सरहिंद के नवाब वजीर खान के सिपाहियों के हाथों पकड़वा दिया था, तब साहिबजादों बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह की उम्र सात और पांच साल ही थी। सरहिंद के नवाज वजीर खान ने दोनों साहिबजादों बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह को खुले आसमान के नीचे कैद कर दिया था, माता गुजरी भी साथ थीं। पूस की सर्द रात में चारों ओर से खुले ऊंचे बुर्ज पर भी माता गुजरी जी अपने दोनों छोटे साहिबजादों को धर्म की रक्षा के लिए सिर न झुकाने और धर्म न बदलने का ही पाठ पढ़ाती रहीं। यही सीख देकर माता गुजरी जी नन्हे साहिबजादों को वजीर खान की कचहरी में भेजती थीं। वजीर खान ने कचहरी में दोनों साहिबजादों से धर्म बदलने के लिए कहा पर उन्होंने ***जो***

सब पुत्रन के कारन वार दिए पुत चार ।
चार मुए तो क्या हुआ, जीवित कई हजार ॥

बोले सो निहाल सत श्री अकाल के जयकारे लगा कर धर्म बदलने से मना कर दिया था। इस पर वजीर खान ने दोनों को धमकी दी थी कि कल तक धर्म बदल लो या फिर मरने के लिए तैयार रहो। अगले दिन दोनों साहिबजादों को तैयार करके फिर वजीर खान की कचहरी में भेजा गया। वहां पर एक बार फिर से वजीर खान ने दोनों से धर्म बदलने के लिए कहा, लेकिन छोटे साहिबजादों ने इनकार कर दिया और एक बार फिर से जयकारे लगाने लगे। यह सुन कर वजीर खान गुस्से में आ गया और दोनों साहिबजादों को जिंदा दीवार में चुनवाने का आदेश दे दिया। तारीख थी 26 दिसंबर 1705। इन महान सपूतों को दीवार में जिंदा चुनवा दिया गया था। उन्हीं साहिबजादों की शहादत को नमन करने के लिए सिख समुदाय ने हर साल वीर बाल सप्ताह मनाना शुरू किया। इसमें 26 दिसंबर का दिन उनकी शहादत को समर्पित है। इन पूरे सप्ताह में किन-किन तारिखों को कैसे-कैसे घटना घटी थी, उसे विस्तार से समझते हैं :-

☞ **20 दिसंबर :** मुगलों ने अचानक आनंदपुर साहिब के किले पर हमला कर दिया। गुरु गोबिंद सिंह जी मुगलों से लड़ना चाहते थे, लेकिन अन्य सिखों ने उन्हें वहां से चलने के लिए कहा। इसके बाद गुरु गोबिंद सिंह के परिवार सहित अन्य सिखों ने आनंदपुर साहिब के किले को छोड़ दिया और वहां से निकल पड़े।

☞ **21 दिसंबर :** जब सभी लोग सरसा नदी को पार कर रहे थे तो पानी का बहाव इतना तेज हो गया कि पूरा परिवार बिछड़ गया। बिछड़ने के बाद गुरु गोबिंद सिंह व दो बड़े साहिबजादे बाबा अजित सिंह व बाबा जुझार सिंह चमकौर पहुंच गए। वहीं, माता गुजरी, दोनों छोटे साहिबजादे बाबा जोरावर सिंह व बाबा फतेह सिंह और गुरु साहिब के सेवक रहे गंगू गुरु साहिब व अन्य सिखों से अलग हो गए। इसके बाद गंगू इन सभी को अपने घर ले गया लेकिन उसने सरहंद के नवाज वजीर खान को जानकारी दे दी जिसके बाद वजीर खान माता गुजरी और दोनों छोटे साहिबजादों को कैद कर लिया।

☞ **22 दिसंबर :** इस दिन चमकौर की लड़ाई हुई, जिसमें सिख और मुगलों की सेना आमने-सामने थी। मुगल बड़ी संख्या में थे लेकिन सिख कुछ ही थे। गुरु गोबिंद सिंह जी ने सिखों में हौंसला भरा और युद्ध में डटकर सामना करने को कहा। इसके बाद सिखों ने मुगलों से लोहा लिया और उन्हें नाको चने चबवाए।

☞ **23 दिसंबर :** यह युद्ध अगले दिन भी चलता रहा। युद्ध में सिखों को शहीद होता देख दोनों बड़े साहिबजादों बाबा अजित सिंह व बाबा जुझार सिंह ने एक-एक कर युद्ध में जाने की अनुमति गुरु साहिब से मांगी। गुरु साहिब ने उन्हें अनुमति दी और उन्होंने एक के बाद एक मुगल को मौत के घाट उतारना शुरू किया। इसके बाद वह दोनों भी शहीद हो गए।

☞ **24 दिसंबर :** गुरु गोबिंद सिंह जी भी इस युद्ध में उतरना चाहते थे लेकिन अन्य सिखों ने अपने अधिकारों का इस्तेमाल करते हुए गुरु साहिब जो युद्ध में उतरने से रोक दिया और उन्हें वहां से जाने को कहा। मजबूरन गुरु साहिब को वहां से निकलना पड़ा। इसके बाद वह सिख मैदान में लड़ते हुए शहीद हो गए।

☞ **25 दिसंबर :** यहां से निकलने के बाद गुरु गोबिंद सिंह जी एक गांव में पहुंचे जहां उन्हें बीबी हरशरन कौर मिलीं जो गुरु साहिब को आदर्श मानती थीं। उन्हें जब युद्ध में शहीद हुए सिखों व साहिबजादों की जानकारी मिली तो वह चुपके से चमकौर पहुंचीं और शहीदों का अंतिम संस्कार करना शुरू किया जबकि मुगल यह नहीं चाहते थे। वह चाहते थे कि चील-गिद्द इन्हें खाएं। जैसे ही मुगल सैनिकों ने बीबी हरशरन कौर को देखा, उन्हें भी आग के हवाले कर दिया और वह भी शहीद हो गई।

☞ **26 दिसंबर :** सरहंद के नवाज वजीर खान ने माता गुजरी और दोनों छोटे साहिबजादों बाबा जोरावर सिंह व बाबा फतेह सिंह को ठंडा बुर्ज में खुले आसमान के नीचे कैद कर दिया। वजीर खान ने दोनों छोटे साहिबजादों को अपनी कचहरी में बुलाया और डरा-धमकाकर उन्हें धर्म परिवर्तन करने को कहा लेकिन दोनों साहिबजादों ने ***'जो बोले सो निहाल, सत श्री अकाल'*** के जयकारे लगाते हुए धर्म परिवर्तन करने से मना कर दिया। वजीर खान ने फिर धमकी देते हुए कहा कि कल तक या तो धर्म परिवर्तन करो या मरने के लिए तैयार रहो।

☞ **27 दिसंबर :** ठंडे बुर्ज में कैद माता गुजरी ने दोनों साहिबजादों को बेहद प्यार से तैयार करके दोबारा से वजीर खान की कचहरी में भेजा। यहां फिर वजीर खान ने उन्हें धर्म परिवर्तन करने को कहा लेकिन छोटे साहिबजादों ने मना कर दिया और फिर से जयकारे लगाने लगे। यह सुन वजीर खान तिलमिला उठा और दोनों साहिबजादों को जिंदा दीवार में चिनवाने का हुक्म दे दिया और साहिबजादों को शहीद कर दिया। यह खबर जैसे ही माता दादी माता गुजरी के पास पहुंची, उन्होंने भी अपने प्राण त्याग

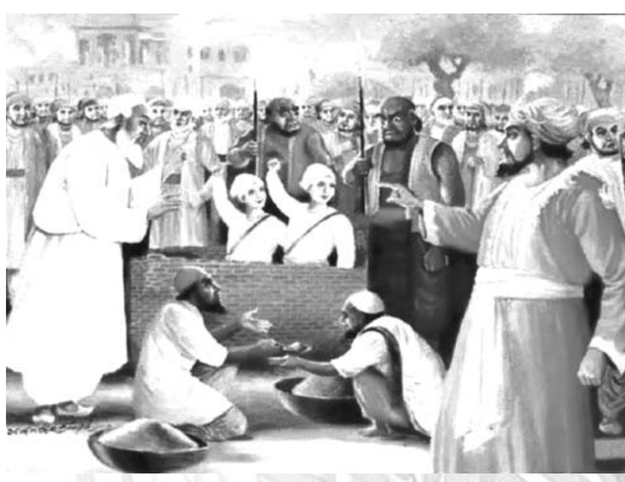

दिसंबर सिख धर्म में बलिदानों और विरासत का महीना है । दसवें गुरु श्री गोविंद सिंह जी के चार पुत्रों ने जो धर्म की रक्षा के लिए शहादत दी थी। इस शहादत को नमन करते हुए 21 दिसंबर से 27 दिसंबर तक शहीदी सप्ताह के रूप में मनाया जाता है। सिख इन दिनों को बड़े दुख और श्रद्धा के साथ याद करते हैं, दसवें गुरु गोबिंद सिंह जी के उन चार पुत्रों के प्रति जिन्होंने धर्म के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। दो बड़े पुत्र युद्ध में और दो छोटे पुत्र दीवार में चिनवा दिए गए।

☞ **बाबा अजीत सिंह :-** सबसे बड़े पुत्र, जो चमकौर के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए।

☞ **बाबा जुझार सिंह :-** दूसरे पुत्र, जो चमकौर के युद्ध में अपने बड़े भाई के साथ लड़े और शहीद हो गए।

☞ **बाबा जोरावर सिंह :-** सात और नौ वर्ष की आयु में, उन्हें इस्लाम कबूल न करने पर जिंदा दीवार में चुनवा दिया गया।

☞ **बाबा फतेह सिंह :-** सबसे छोटे पुत्र, जो 7 साल की उम्र में, अपने भाई जोरावर सिंह के साथ ही जिंदा दीवार में चुनवा दिए गए।

भारत सरकार ने 26 दिसंबर 2022 को गुरु गोविंद सिंह के छोटे बच्चों की शहादत की याद में ***'वीर बाल दिवस'*** के रूप में मनाने की घोषणा की।

दिए।

सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी के परिवार की शहादत को आज भी इतिहास की सबसे बड़ी शहादत माना जाता है। धर्म व आम जन की रक्षा के लिए दी गई इस शहादत जैसा दूसरा ही कोई उदाहरण सुनने या पढ़ने को मिलता हो। श्रद्धावान सिख नानकशाही कैलेंडर के अनुसार, 20 दिसंबर से लेकर 27 दिसंबर तक, शहीदी सप्ताह मनाते हैं। इन दिनों गुरुद्वारों से लेकर घरों तक में कीर्तन-पाठ बड़े स्तर पर किया जाता है। बच्चों को गुरु साहिब के परिवार की शहादत के बारे में बताया जाता है। साथ ही कई श्रद्धावान सिख इस पूरे हफ्ते जमीन पर सोते हैं और माता गुजरी व साहिबजादों की शहादत को नमन करते हैं। दरअसल, इसी कड़कड़ाती ठंड के बीच माता गुजरी और दोनों छोटे साहिबजादों को सरहंद के ठंड बुर्ज में खुले आसमान के नीचे कैद किया गया था।

बहरहाल, सिखों के दसवें गुरु गुरु गोविंद सिंह और उनके बेटों की शहादत का भारतीय सिख इतिहास और भारतीय संस्कृति में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। देश भर में गुरु गोविंद सिंह जी के दो छोटे साहिबजादों, ***बाबा जोरावर सिंह*** और ***बाबा फतेह सिंह*** के शहादत दिवस पर ***वीर बाल दिवस*** मनाया जाता है, उनको श्रद्धांजलि दी जाती है, जिन्होंने नन्ही उम्र में भी धर्म और सिद्धांतों की रक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया था। गुरु गोविंद सिंह जी के प्रकाश पर्व पर 9 जनवरी 2022 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने घोषणा की थी कि उनके पुत्रों साहिबजादों बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह की शहादत की याद में हर साल ***26 दिसंबर*** को वीर बाल दिवस मनाया जाएगा। तबसे यानी 26 दिसंबर 2022 से इसकी शुरुआत हुई थी।

सनद् रहे कि दोनों बच्चों और माता जी की मृत्यु की खबर जब गुरु गोविन्द सिंह तक पहुंची, वो मच्छीवाड़ा के जंगलों में थे। कहते हैं कि ये खबर सुनकर उन्होंने तीर की नोक से एक पौधा जमीन से उखाड़ा और कहा, ये घटना मुगल साम्राज्य के अंत का कारण बनेगी। ये बात कुछ हद तक सही भी साबित हुई। 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल शासन निरतंर कमजोर हो गया। वहीं सरहिंद में गुरु गोविन्द सिंह के बच्चों की हत्या ने वहां की जनता में रोष भर दिया। साल 1709 में गुरु गोविन्द सिंह के बच्चों की हत्या का बदला लिया गया। ऐसा करने वाले शख्स का नाम था ***बंदा सिंह बहादुर।*** 1709 में बंदा बहादुर ने सरहिंद के एक कस्बे 'समाना' पर हमला किया और इस दौरान सरहिंद के किसानों ने उन्हें घोड़े और धन उपलब्ध कराया। समाना पर हमला करने की वजह ये थी कि 34 साल पहले गुरु तेगबहादुर का सिर कलम करवाने वाला और गुरु गोबिंद सिंह के लड़कों को मारने वाला व्यक्ति वजीर खान उसी शहर में रह रहा था।' 22 मई 1710 को हुई लड़ाई में बंदा बहादुर के भाई फतह सिंह ने वजीर खान को मार गिराया। इस जीत के बाद बहादुर ने सरहिंद किले पर हमला करते हुए उसे मिट्टी में मिला दिया गया। बंदा बहादुर ने इसके बाद सरहिंद से सिख साम्राज्य की नींव रखी और गुरु गोविन्द सिंह के नाम के सिक्के जारी किए। इत्तेफाक ये कि खुद बंदा बहादुर को भी इस्लाम कबूल न करने के कारण ही मार डाला गया था। साल 1716 में दिल्ली में उन्हें मृत्यु दी गई थी. वीर बंदा सिंह बहादुर गुरू जी को कैसे मिले, इसे बिस्तार से जानते हैं।

विदित हो कि गुरू गोबिंद सिंह जी के साहिबजादों के बलिदान के बाद आनंदपुर से गोबिंद सिंह दक्षिणी पंजाब चले गए, जहाँ उन्होंने मुक्तसर में अपने पीछा करने वालों को परास्त किया। इसके बाद वे दमदमा चले गए, जहाँ वे 1706 तक रहे और परंपरा के अनुसार, आदि ग्रंथ के अंतिम संशोधन में व्यस्त रहे। ज्ञात हो कि नाभा में रहते हुए गुरु गोबिंद सिंह ने औरंगजेब को फारसी में एक पत्र लिखा। इसमें उन्होंने धोखे से हमला किए जाने के लिए औरंगजेब को दोषी ठहराया। जब औरंगजेब को अहमदनगर में गुरु गोबिंद सिंह का लिखा पत्र मिला तो उसने अपने दो अफसरों को लाहौर के डिप्टी-गवर्नर मुनीम खाँ के पास भेजकर कहलवाया कि वो गुरु गोबिंद सिंह के साथ समझौता कर लें। एक समय ऐसा भी आया कि गुरु गोबिंद सिंह ने औरंगजेब से मिलने का फैसला किया, लेकिन वो अभी राजपूताना ही पहुंचे थे कि उन्हें औरंगजेब की मौत का समाचार मिला। इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि औरंगजेब की मौत के बाद हुई उत्तराधिकार की लड़ाई में उसके पुत्र शहजादा मुअज्जम ने अपने भाइयों के खिलाफ लड़ाई में गुरु गोबिंद सिंह की मदद माँगी। गुरु ने कुलदीपक सिंह के नेतृत्व में मुअज्जम के भाई आजम से लड़ने के लिए सिख लड़ाकों का एक जत्था भेजा। जून, 1707 में आगरा के पास जजाऊ में हुई लड़ाई में आजम मारा गया और मुअज्जम मुगलों की गद्दी पर बैठा। गद्दी पर बैठने के बाद मुअज्जम ने अपना नाम बदल कर बादशाह बहादुर शाह रख लिया। जब वो अपने दूसरे भाई कामबख्श के विद्रोह को दबाने दक्षिण गया, तब गुरु और उनके कुछ साथियों ने भी दक्षिण का रुख किया। गुरु गोबिंद सिंह ने 1707-1708 में मुगल सम्राट बहादुर शाह के साथ नांदेड़ की यात्रा की। जब मुगल शासक गुरुओं और उनके अनुयायियों के विरुद्ध लड़ रहे थे,

खिलअत पेश करने के बाद, गुरु गोबिंद सिंह ने बादशाह को उन दो शर्तों की याद दिलाई जिन पर उन्होंने सहमति जताई थी, लेकिन बहादुर शाह ने कोई वादा नहीं किया। शायद, वह अपने दरबार के कई सिख-विरोधी तत्वों को नाराज नहीं करना चाहते थे। हालाँकि, बादशाह को फटकार लगाने के बजाय, गुरु साहिब ने उन्हें मनाने का फैसला किया। बादशाह ने गुरु साहिब से अनुरोध किया कि वे उनके साथ दक्कन, भारत के दक्षिणी प्रायद्वीप, की ओर चलें, जहाँ मुगल, वर्तमान बंबई के भीतरी इलाके में मराठों से लड़ रहे थे। साथ यात्रा के दौरान, गुरु गोबिंद सिंह ने कई मौकों पर उन्हें अपने वादों की याद दिलाई, लेकिन बहादुर शाह ने इस विषय को टाल दिया। सेना में कुछ सिख-विरोधी तत्वों ने विश्वासपात्र सिखों के साथ झगड़ा भड़काने की कोशिश की और मान सिंह नामक एक प्रमुख सिख की हत्या कर दी गई। उकसावे के बावजूद, दोनों नांदेड़ पहुँचे जहाँ गुरु साहिब ने आखिरी बार बादशाह को मनाने की कोशिश की। जब उन्होंने देखा कि वह अपने वचन से मुकर रहे हैं, तो गुरु गोबिंद सिंह ने बादशाह के मुँह पर ही कह दिया कि वह बहुत कम समय तक शासन करेंगे। अपना वचन न निभाकर, बादशाह ने अपने खाते में और भी पाप डाल दिए, जिससे मुगल वंश के पतन की प्रक्रिया शुरू हो गई। गुरु गोबिंद सिंह के वचन सत्य सिद्ध हुए और बहादुर शाह ने 1707 से 1712 तक केवल 5 वर्ष तक शासन किया और 70 वर्ष की आयु में लाहौर में अपने ही पुत्रों द्वारा निर्दयतापूर्वक उनकी हत्या कर दी गई। बहादुर शाह के बाद के शासकों, विशेषकर फर्रुखसियर ने एक सिख के सिर पर इनाम रखा। किसी भी सिख का कटा हुआ सिर लाने वाले को 10 रुपये मिलते थे। ऐसे सभी ऐतिहासिक आदेश मुगलों की दरबारी डायरी में दर्ज थे, जिसे 'दरबारी अखबार मौला' कहा जाता था। मुगल राजवंश के कुकर्मों का भट्ठा लगातार उबलता रहा और उसके बाद आने

वाले शासकों ने और भी कई पाप किए। 1857 में आखिरी शासक तक, उसके बाद आने वाले शासकों के साथ ऐसी अनसुनी घटनाएँ घटीं जो पहले कभी नहीं हुई थीं। गुरु गोबिंद सिंह शायद शुरू से ही जानते थे कि बादशाह बहादुर शाह अपना वादा नहीं निभाएँगे। अपने सिखों को मुगलों के लिए लड़ने देने की उनकी इच्छा का उद्देश्य उन्हें बड़े सैन्य संघर्षों के लिए प्रशिक्षित करना था, जिससे वे आगे चलकर उत्तर भारत के इतिहास में बड़ी भूमिकाएँ निभा सकें। यह संयोग लग सकता है, लेकिन मुगलों के खिलाफ संघर्ष जारी रखने वाले योद्धा गुरु गोबिंद सिंह को नांदेड़ में ही मिले थे, उस जगह से थोड़ी ही दूरी पर जहाँ उनकी बहादुर शाह से आखिरी मुलाकात हुई थी। योद्धा का नाम माधो दास था, जो एक बैरागी साधु थे, जिसका अर्थ है 'वह जिसने सांसारिक जीवन त्यागकर गृहस्थ जीवन जीया हो।' उन्हें सितंबर 1708 में पाहुल प्रदान किया गया। खंडा के साथ तैयार अमृत से उसी तरह बपतिस्मा दिया गया जैसे गुरु साहिब ने मार्च 1699 में पहली बार दिया था। इस प्रकार वे गुरु गोबिंद सिंह के सिख बन गए और उनका नाम गुरबख्श सिंह रखा गया, जिसका अर्थ है 'गुरु द्वारा आशीर्वाद प्राप्त।' हालाँकि उन्हें बंदा बहादुर या बंदा सिंह बहादुर के नाम से जाना जाने लगा। यह तब हुआ जब वह पहली बार गुरु गोबिंद सिंह से उनके आसन पर आरामदायक मुद्रा में बैठे हुए मिले। उन्होंने चुनौतीपूर्ण स्वर में पूछा, 'आप कौन हैं?' गुरु साहिब ने पूछा, 'क्या आप नहीं जानते कि मैं कौन हूं?' माधो दास को एहसास हुआ कि वह कौन थे और कहा, 'ओह, तो आप गुरु गोबिंद सिंह हैं।' फिर, विनम्रता के साथ, उन्होंने अपना सिर जमीन पर झुकाया और कहा, 'गुरु महाराज, मैं आपका बंदा हूं,' जिसका अर्थ है 'पुरुष दास'। इस प्रकार उन्हें 'गुरु का बंदा' कहा जाता था और जब उन्होंने पंजाब

में मुगल शासन को कुचल दिया, तो उनके अनुयायियों ने उन्हें बंदा बहादुर या बंदा सिंह बहादुर कहा।

नांदेड़ में माधो दास को खोजकर और एक बैरागी साधु की अलौकिक शक्तियों को दिशा प्रदान करके, गुरु गोबिंद सिंह ने एक उदाहरण प्रस्तुत किया। 'दुर्गम कर्म करने के लिए आपको सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना और भक्ति के माध्यम से अपने आध्यात्मिक स्वरूप को विकसित करना होगा।' गुरबख्श सिंह उर्फ बंदा बहादुर उर्फ बंदा सिंह बहादुर ने अगले सात वर्षों-1709 से 1715 के दौरान उत्तर भारत में मुगल साम्राज्य की नींव हिला दी।

अपने जीवन के अंतिम पड़ाव मे गुरु गोबिंद सिंह गोदावरी नदी के किनारे बसे शहर नांदेड़ में थे। उनके सुरक्षाकर्मियों को आदेश थे कि उनसे मिलने आने वाले किसी व्यक्ति को रोका न जाए।"20 सितंबर, 1708 की शाम जब वो प्रार्थना के बाद अपने बिस्तर पर आराम कर रहे थे, दो युवा

पठानों अताउल्ला खाँ और जमशेद खाँ ने उनके तंबू मे प्रवेश किया। गुरु को अकेला पाकर दोनों ने उनके पेट पर छुरे से वार किया। उन दोनों को वजीर खाँ ने भेजा था। गुरु को मारने के उद्देश्य का कभी पता नहीं चल पाया क्योंकि दिल के पास छुरा भोंके जाने के बावजूद गुरु गोबिंद सिंह ने एक हत्यारे को तो वहीं मार डाला। दूसरे हत्यारे को भी उनके साथियों ने जिंदा नहीं छोड़ा।" गुरु के जख्म पर उनके एक साथी अमर सिंह ने टाँके लगाए लेकिन कुछ दिनों बाद उनके टाँके खुल गए। जब बादशाह बहादुर शाह को गोबिंद सिंह पर हमले की खबर मिली तो उन्होंने अपने इटालियन चिकित्सक निकोलाओ मनूची को उपचार के लिए भेजा। लेकिन 6 अक्तूबर आते-आते गुरु को लग गया कि उनका अंत निकट है। उन्होंने अपने अनुयायियों की सभा बुलाकर ऐलान किया कि उनके बाद कोई व्यक्ति गुरु नहीं होगा और सारे सिख गुरु ग्रंथ साहब को गुरु मानेंगे। "गुरु ने दमदमा साहब में तैयार किए गुरु ग्रंथ साहब को खोलने के लिए कहा। उन्होंने उनके सामने सिर झुकाया और पाँच पैसे और एक नारियल प्रसाद के तौर पर रखे। उन्होंने चार बार गुरुग्रंथ साहब का चक्कर लगाया और फिर उनके सम्मान में अपना सिर जमीन पर झुका दिया।" वहीं पर उन्होंने घोषणा की,

"आज्ञा भई अकाल की,
तभी चलाया पंथ,
सब सिखन को हुकम है,
गुरु मान्यो ग्रंथ।"

7 अक्तूबर, 1708 को आधी रात के बाद गुरु गोबिंद सिंह ने सिर्फ 42 साल की उम्र में इस दुनिया को अलविदा कह दिया। गुरु गोबिंद सिंह की मृत्यु के बाद, गुरुशिप की संस्था समाप्त हो गई और सिखों का नेतृत्व उनके विश्वसनीय शिष्य बंदा सिंह बहादुर को दे दिया गया। बंदा सिंह बहादुर एक सिख योद्धा और खालसा सेना के कमांडर थे।

अंत में गुरु गोविंद सिंह जी के बारे में कहा जा सकता है कि इन्होने अपने चारों पुत्रों और अपनी मां के बलिदान के बावजूद धर्म और न्याय की रक्षा के लिए संघर्ष जारी रखा। उन्होंने अपने जीवन में कभी हार नहीं मानी और 'गुरु ग्रंथ साहिब' को सिख धर्म का अंतिम गुरु घोषित कर दिया। गुरु गोविंद सिंह जी का जीवन सिखाता है कि

1708 में सरहिंद के मुगल शासक नवाब वजीर खान के आदेश पर महाराष्ट्र के नांदेड़ में एक पश्तून (पठान) द्वारा छुरा घोंपकर गुरु की हत्या कर दी गई, जो सम्राट बहादुर शाह के साथ गुरु के सौहार्दपूर्ण संबंधों पर असुरक्षा से प्रेरित था। गुरु गोबिंद सिंह की मृत्यु के बाद, गुरुशिप की संस्था समाप्त हो गई और सिखों का नेतृत्व उनके विश्वसनीय शिष्य बंदा सिंह बहादुर को दे दिया गया। बंदा सिंह बहादुर एक सिख योद्धा और खालसा सेना के कमांडर थे।

धर्म, न्याय और मानवता की रक्षा के लिए किसी भी प्रकार का त्याग छोटा नहीं है। उनके बलिदान सिख समुदाय के लिए प्रेरणा हैं और हर व्यक्ति को साहस, सच्चाई और सेवा का मार्ग अपनाने का संदेश देते हैं। गुरु गोबिंद सिंह नि:संदेह सिखों के आदर्श हैं। उनके और गुरु नानक के चित्र सिख घरों में आम तौर पर पाए जाते हैं। उन्हें खालसा (एक गुरसिख) के एक सिख के लिए सर्वोच्च आदर्श माना जाता है। उनकी वीरता की प्रशंसा की जाती है, उनकी कुलीनता का सम्मान किया जाता है, उनकी अच्छाई का गहरा सम्मान किया जाता है। इसलिए, प्रत्येक खालसा सदस्य का कर्तव्य है कि वह उनके मार्ग पर चले और उनके योग्य कार्य करे।

☞ **आदि ग्रंथ :-** आदि ग्रंथ, भारत के एक धर्म, सिख धर्म का पवित्र ग्रंथ है। यह सिख गुरुओं (धार्मिक नेताओं) और विभिन्न धर्मों व जातियों के प्रारंभिक व मध्यकालीन संतों के लगभग 6,000 भजनों का संग्रह है। आदि ग्रंथ सभी गुरुद्वारों (सिख मंदिरों) में पूजा का मुख्य केंद्र है और इसे जीवित गुरु के समान सम्मान दिया जाता है। इसे सुबह विधिपूर्वक खोला जाता है और रात के लिए लपेटकर रख दिया जाता है। विशेष अवसरों पर इसका निरंतर पाठ होता है, जो 2 से 15 दिनों तक चलता है। गुरुओं के जन्मदिन या सिख शहीदों की जयंती पर, ग्रंथ को कभी-कभी जुलूस के रूप में निकाला जाता है। पुस्तक का पहला संस्करण 5वें सिख गुरु द्वारा संकलित किया गया था। अर्जुन, अमृतसर में 1604 ई. में। उन्होंने अपने और अपने पूर्ववर्तियों गुरुओं के भजनों को भी इसमें शामिल किया। नानक, अंगद, अमरदास और रामदास के भजन, और हिंदू तथा इस्लामी संतों (विशेषकर कवि कबीर) के भक्ति गीतों का एक संग्रह। 1704 ई. में, दसवें और अंतिम गुरु, गोबिंद सिंह ने अपने पूर्ववर्ती गुरु तेग बहादुर (6वें, 7वें और 8वें गुरुओं ने भजन नहीं लिखे) के भजनों को जोड़ा और आदेश दिया कि उनकी मृत्यु के बाद ग्रंथ गुरु का स्थान लेगा। पुस्तक मूल मंत्र (मूल प्रार्थना) से शुरू होती है, जो सत्य के रूप में ईश्वर की प्रकृति की घोषणा

तख्त एक फारसी शब्द है जिसका अर्थ है सिंहासन' या 'अधिकार का आसन।'
सिख धर्म में पाँच तख्त हैं जिन्हें सर्वोच्च लौकिक और आध्यात्मिक केंद्र माना जाता है :-

☞ पंजाब के अमृतसर में अकाल तख्त।
☞ पंजाब के आनंदपुर साहिब में तख्त केशगढ़ साहिब।
☞ तख्त दमदमा साहिब, तलवंडी साबो, पंजाब।
☞ तख्त पटना साहिब, पटना, बिहार।
☞ तख्त हजूर साहिब, नांदेड़, महाराष्ट्र।

पाँच तख्तों में से चार गुरु गोबिंद सिंह की विरासत से गहराई से जुड़े हैं । तख्त पटना साहिब उनका जन्मस्थान है, जबकि तख्त केशगढ़ साहिब वह स्थान है जहाँ उन्होंने 1699 में खालसा पंथ की स्थापना की थी। तख्त दमदमा साहिब तलवंडी साबो में बिताए उनके महीनों की याद दिलाता है , जहाँ उन्होंने आदि ग्रंथ को अंतिम रूप दिया था। अंत में, महाराष्ट्र के नांदेड़ में तख्त हजूर साहिब वह स्थान है जहाँ उन्होंने अपने अंतिम दिन बिताए और 1708 में उनका अंतिम संस्कार किया गया।

अकाल तख्त, अमृतसर

तख्त श्री केशवगढ़ साहिब जी

तख्त श्री दमदमा साहिब गुरूद्वारा

पटना साहिब गुरूद्वारा

है, उसके बाद जपजी (पाठ), सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक द्वारा लिखित सबसे महत्वपूर्ण सिख धर्मग्रंथ है। भजनों को संगीत के तरीके (रागों) के अनुसार व्यवस्थित किया जाता है जिसमें उन्हें गाया जाना है। भाषा ज्यादातर पंजाबी या हिंदी है, जिसमें मराठी, फारसी और अरबी शब्द शामिल हैं। गुरु गोबिंद सिंह की मृत्यु के बाद उनके भजनों और अन्य लेखों को दसम ग्रंथ के रूप में एक पुस्तक में संकलित किया गया।

✯ **पंज तख्तः सिख धर्म के पाँच पवित्र तीर्थस्थल :-** सिख धर्म में पाँच गुरुद्वारों का धार्मिक महत्व माना जाता है। इन पाँच गुरुद्वारों को पंज तख्त कहा जाता है, जिसका अर्थ है पाँच सिंहासन तीर्थस्थल हैं। सिख धर्म के सभी लोगों के लिए जीवन में एक बार सभी पांच तख्तों की यात्रा करना महत्वपूर्ण माना जाता है। यहां 5 पंज तख्तों की सूची दी गई है:-

☞ **अकाल तख्त, अमृतसर :-** अकाल तख्त (अमर का सिंहासन) सिखों की सर्वोच्च राजनीतिक संस्था है, जिसकी स्थापना छठे सिख गुरु, गुरु हरगोबिंद ने 1606 में की थी। अमृतसर के प्रसिद्ध स्वर्ण मंदिर परिसर में स्थित, अकाल तख्त सिखों के पाँच तख्तों में से एक है। ये तख्त सिख समुदाय के बीच शक्ति और अधिकार के केंद्र हैं, और जत्थेदार, जो उनके सर्वोच्च प्रवक्ता हैं, का स्थान भी हैं। अकाल तख्त राजनीतिक संप्रभुता और न्याय का प्रतीक है, जहाँ सिख लोगों की आध्यात्मिक और सांसारिक चिंताओं का समाधान और परीक्षण किया जा सकता है।

☞ **तख्त श्री केसगढ़ साहिब जी, आनंदपुर-साहिब :-** तख्त श्री केसगढ़ साहिब जी एक प्रसिद्ध गुरुद्वारा है जो आनंदपुर साहिब के ठीक मध्य में स्थित है और देश के सबसे प्रतिष्ठित सिख संस्थानों में से एक है। यह सत्ता के पाँच सर्वोच्च पदों (तख्तों) में से एक है। इसकी नींव 1689 में रखी गई थी और यहीं खालसा पंथ का जन्म हुआ था। गुरु गोबिंद सिंह जी ने 1699 में बैसाखी के पावन दिन यहीं खंडे दी पाहुल की दीक्षा दी थी। इस पवित्र तीर्थस्थल का स्थानीय लोगों के बीच बहुत महत्व है।

☞ **तख्त श्री दमदमा साहिब गुरुद्वारा, भटिंडा :-** पंजाब के बठिंडा में स्थित, तख्त श्री दमदमा साहिब, सिख धर्म के पाँच तख्तों में से एक है। तख्त, जिन्हें लौकिक सत्ता के आसन भी कहा जाता है, सिख धर्म में महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल हैं। चर्चा का विषय वह स्थान है जहाँ दसवें सिख गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी ने सिखों के पवित्र ग्रंथ, गुरु ग्रंथ साहिब जी को एकत्रित और स्थापित किया था। तख्त, जिन्हें लौकिक सत्ता के आसन भी कहा जाता है, सिख धर्म में महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल हैं। चर्चा का विषय वह स्थान है जहाँ दसवें सिख गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी ने सिखों के पवित्र ग्रंथ, गुरु ग्रंथ साहिब जी को एकत्रित और स्थापित किया था। यह ग्रंथ ही एकमात्र ऐसी चीज है जिसकी सिख पूजा करते हैं। किसी व्यक्ति, चित्र या मूर्ति की नहीं, बल्कि केवल गुरु ग्रंथ साहिब जी की, पवित्र ग्रंथ की, जो सिख गुरुओं और कुछ अन्य लोगों के भजनों, शिक्षाओं और उपदेशों का संकलन है। श्री दमदमा साहिब को नवंबर 1966 में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति द्वारा सिख धर्म के चौथे तख्त और अप्रैल 1999 में भारत सरकार द्वारा सिख धर्म के पाँचवें तख्त के रूप में मान्यता दी गई थी। गुरु गोबिंद सिंह जी इस स्थान को एक साहित्यिक केंद्र बनाना चाहते थे और उन्होंने 1706 में यहाँ लगभग एक वर्ष के अपने प्रवास के दौरान खूब पढ़ा और लिखा। वे इस स्थान पर एक साहित्यिक कुंड बनाना चाहते थे ताकि कोई भी सिख निरक्षर न रहे। यहीं पर गुरु गोबिंद सिंह जी ने गुरु ग्रंथ साहिब जी या आदि ग्रंथ का संशोधन और अंतिम रूप दिया था, जिसे मूल रूप से गुरु अर्जन देव जी ने संकलित किया था, और इसमें नौवें गुरु, गुरु तेग बहादुर जी और उनके पिता के पद भी जोड़े थे। दमदमा का अर्थ है सांस लेने और शांति पाने का स्थान, यही कारण है कि गुरु गोबिंद सिंह जी मुगलों के खिलाफ एक कठिन लड़ाई लड़ने के बाद यहां आए थे और उनके दो पुत्रों-साहिबजादा फतेह सिंह और साहिबजादा जोरावर सिंह को सरहिंद में जिंदा ईंटों में चुनवा दिया गया था, जिसे अब फतेहगढ़ साहिब के

नाम से जाना जाता है।

☞ **पटना साहिब गुरुद्वारा, पटना, बिहार :-** हरमंदिर तख्त श्री पटना साहिब, जिसे पटना साहिब गुरुद्वारा के नाम से जाना जाता है, सिख समुदाय के लिए सबसे पवित्र तीर्थस्थलों में से एक है। पवित्र गंगा के तट पर स्थित, बिहार के पटना में यह गुरुद्वारा सिखों के दसवें गुरु, श्री गुरु गोबिंद सिंह की स्मृति में बनाया गया था। गुरुद्वारा को पूर्वी भारत में सिख धर्म का केंद्र माना जाता है। यह गुरुद्वारा महाराजा रणजीत सिंह द्वारा गुरु गोबिंद सिंह जी की स्मृति में बनवाया गया था, पटना उनका जन्म स्थान है। वे सिखों के दसवें और अंतिम गुरु थे। यहाँ सिखों के कई धर्मग्रंथ देखे जा सकते हैं। यह सिखों के पाँच तख्तों या पवित्र सत्तापीठों में से एक है। पटना साहिब गुरुद्वारा सिख धर्म के कुल पाँच तख्तों में से दूसरा स्वीकृत तख्त है, जिसका अर्थ है 'अधिकार की सीट'। यहाँ हर सुबह 5:45 बजे अरदास नामक सुबह की प्रार्थना और शाम 6:00 बजे शाम की प्रार्थना की जाती है। यहाँ सभी आगंतुकों के लिए लंगर या मुफ्त भोजन सेवा प्रदान की जाती है और आगंतुकों को लंगर सेवाओं में स्वयंसेवा करने के लिए भी स्वागत किया

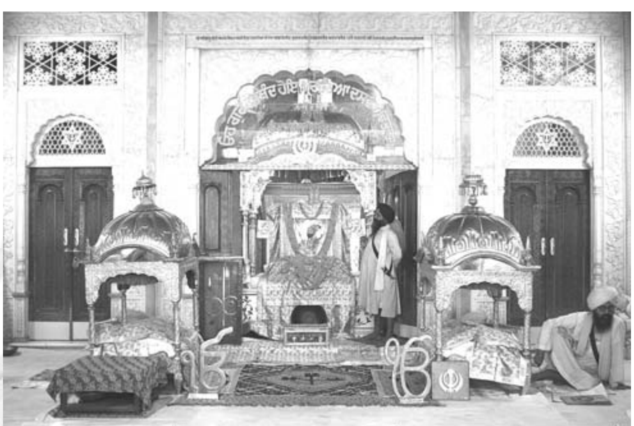

जाता है, क्योंकि इसे भगवान को भेंट माना जाता है।

☞ **तख्त सचखंड श्री हजूर अचलनगर साहिब गुरुद्वारा, नांदेड़, महाराष्ट्र :-** हजूर साहिब एक पवित्र स्मारक है, जो लौकिक सत्ता के पाँच तख्तों या सिंहासनों में से एक है। अचलनगर और तख्त सचखंड श्री हजूर साहिब के नाम से भी प्रसिद्ध, हजूर साहिब सिख तीर्थयात्रा के लिए एक प्रसिद्ध स्थान है। यहीं पर 1708 में गुरु गोबिंद सिंह ने अंतिम सांस ली थी। मंदिर या गुरुद्वारा उस स्थान के आसपास बनाया गया था जहाँ गुरु गोबिंद सिंह का अंतिम संस्कार किया गया था। गोदावरी नदी के किनारे बसा नांदेड़ महाराष्ट्र राज्य का आठवां सबसे बड़ा शहर है। और इस शहर को सबसे ज्यादा खास यह बात बनाती है कि यहीं पर सिख धर्म के 10वें और अंतिम गुरु श्री गुरु गोविंद सिंह जी का देहांत हुआ था। सिख धर्म में इस शहर की अहमियत को देखते हुए ही महाराष्ट्र सरकार ने नांदेड़ को पवित्र शहर के रूप में मान्यता प्रदान की है। जिस भूमि पर गुरु गोविंद सिंह जी ने अपने जीवन के अंतिम दिन गुजारे, उसकी धार्मिक महत्वता को ध्यान में रखते हुए राजा रणजीत सिंह ने साल 1832 से 1837 के दौरान अमृतसर में मौजूद स्वर्ण मंदिर के तर्ज पर नांदेड़ में सचखंड श्री हुजूर अबचल नगर साहिब गुरुद्वारे का निर्माण कराया। सिख धर्म में अमृतसर स्थित हरमिंदर साहिब गुरुद्वारा(स्वर्ण मंदिर) के बाद नांदेड़ के सचखंड हुजूर साहिब गुरुद्वारे को ही सबसे अधिक प्रतिष्ठित और पवित्र स्थान माना जाता है। अमृतसर के अकाल तख्त साहिब, बठिंडा के दमदमा साहिब, आनंदपुर के केशगढ़ साहिब, बिहार के पटना साहिब के साथ ही नांदेड़ के हुजूर साहिब की

गिनती भी सिख धर्म के पंज तख्त में होती है। सचखंड हुजूर साहिब गुरुद्वारे को ठीक उसी स्थान पर बनाया गया है, जहां गुरु गोविंद सिंह जी का अंतिम संस्कार किया गया था। गुरुद्वारे के अंदर आज भी गुरु गोबिंद सिंह के नश्वर शरीर के अवशेष रखे गए हैं। जिसके दर्शन करने के लिए भारत समेत दुनियाभर से लोग नांदेड़ आते हैं। इसके अलावा यहां गुरु गोविंद सिंह के कुछ हथियारों को भी अब तक सुरक्षित रखा गया है। यहां पहुंचने के बाद आप संगमरमर से बने सचखंड गुरुद्वारे और इसके परिसर की खूबसूरती को देखने के बाद इसे बस एकटक निहारते रह जाएंगे। करीब 8 एकड़ इलाके में फैले सचखंड गुरुद्वारे के परिसर में प्रवेश के लिए 40 फीट ऊंचे कुल 6 प्रवेशद्वार बने हुए हैं। आम तौर पर तो मुख्य प्रवेशद्वार के जरिए ही भक्तों की गुरुद्वारे में एंट्री होती है। लेकिन भीड़ ज्यादा होने पर परिस्थिति अनुसार बाकी के प्रवेशद्वार भी खोल दिए जाते हैं। परिसर के मध्य में बनाए गए दो मंजिला सचखंड गुरुद्वारे में जमीन से करीब 15 फीट की ऊंचाई पर पाक तख्त साहिब विराजमान हैं। गुरुद्वारे का मुख्यद्वार सोने का बना हुआ है और

गुरु गोबिंद सिंह द्वारा शबद

मित्तर प्यारे नू, हाल मुरीदां दा कहना
तुध बिन रोग रजाइयां दा ओढ़ां, नाग निवासां दे रहना
सुल सुराही खंजर प्याला, बिंग कसाइयां दा सेहना
यारादे दा साणु सथार चंगा, भट्ट खेदेयां दा रहना
प्रियतम सखा को उसके भक्तों की दशा बता दो।
तुम्हारे बिना, हमें रजाई ओढ़े हुए भी उबकाई आती है,
मानो साँप के बिल में रहना।
कुप्पी बाँह में काँटा है, प्याला कटार है, मानो कसाई के वार सहना।
प्रियतम के पास जमीन पर सोना अच्छा है; गाँव में रहना भट्टी में रहने के समान है।

-: अनुवाद : रॉबिन राइनहार्ट

यह शबद इस बात का प्रतीक है कि कैसे व्यक्ति मुश्किल समय में ईश्वर के साथ शांति पा सकता है। आधुनिक सिनेमा में, पात्र अक्सर कठिन समय में दृढ़ता दिखाने के लिए यह शबद गाते हैं।

बाकी के द्वार चांदी से बनाए गए हैं। गुरुद्वारे का मुख्य आकर्षण इसके सुनहरे गुंबद पर भी सोने का परत चढ़ी हुई है। बात गुरुद्वारे की हो और लंगर का जिक्र ना हो तो बात अधूरी ही रह जाएगी। आज सिख धर्म की दुनियाभर में सबसे ज्यादा तारीफ उनके नि:स्वार्थ लंगर सेवा के लिए ही होती है। दुनिया के किसी भी कोने में किसी भी तरह की समस्या क्यों ना हो, आपको सिख धर्म के अनुयायी वहां लंगर लगाकर भूखे लोगों को खाना खिलाते मिल ही दिख ही जाएंगे। इसलिए जब आप नांदेड़ में हो तो आपको भी कम से कम खाने-पीने की चिंता तो बिल्कुल भी नहीं करनी है। यहां पर दिन भर लंगर की सेवा अबाधित रूप से चलती रहती है। कोई भी आदमी अपना एक भी पैसा खर्च किए बगैर कभी भी किसी भी गुरुद्वारे जाकर अपना पेट भर सकता है। नांदेड़ में सचखंड गुरुद्वारे के अलावा भी बहुत सारे अन्य गुरुद्वारे हैं जिनका धार्मिक महत्व भी कुछ कम नहीं है। अगर आप नांदेड़ आए हैं, तो फिर इन गुरुद्वारों के चक्कर लगाना भी जरूरी हो जाता है। तो हम बात कर रहे हैं गुरुद्वारा लंगर साहिब, गुरुद्वारा संगत साहिब, गुरुद्वारा माल टेकड़ी साहिब, गुरुद्वारा हीरा घाट साहिब, गुरुद्वारा नगीना घाट साहिब, गुरुद्वारा बंदा घाट साहिब, गुरुद्वारा माता साहिब कौर जी, गुरुद्वारा शिकार घाट साहिब, गुरुद्वारा गोविंद बाग साहिब की। इन सभी गुरुद्वारों के दर पर जाकर वाहेगुरु के आगे माथा टेककर आप अपने हिस्से का आशीर्वाद बटोर सकते हैं। दिनभर अलग-अलग गुरुद्वारों के चक्कर

लगाने के बाद आप शाम के वक्त मुख्य गुरुद्वारे के सामने ही गोविंद बाग साहिब में लेजर शो एन्जॉय कर सकते हो। अत्याधुनिक तकनीक का इस्तेमाल कर रोज शाम 7:30 से 8:30 तक लेजर शो के जरिए सिख धर्म से जुड़े सभी 10 गुरुओं की जीवनी को दिखाया जाता है। इसके अलावा आप शाम का वक्त गोदावरी नदीं के घाट पर बैठकर भी बीता सकते हैं। नदी के समीप ही आपको गोदावरी माता और सालासर हनुमान जी मंदिर मिल जाएगा है, जिसके दर्शन का लाभ भी उठाया जा सकता है। और थोड़ी ही दूरी पर आपको शनि भगवान के भी दर्शन हो जाएंगे। रेलमार्ग के जरिए सचखंड गुरुद्वारे तक पहुंचने के लिए आपको हुजूर साहिब नांदेड़ रेलवे स्टेशन पर उतरना होगा। इस स्टेशन तक पहुंचने के लिए आपको भारत के हर होने से कोई न कोई ट्रेन मिल ही जाएगी। आप दिल्ली, मुंबई, चेन्नई या फिर कोलकाता देश के किसी भी कोने से हुजूर साहिब नांदेड़ तक जाने वाली सीधी ट्रेन पकड़ सकते हैं। अब क्योंकि नांदेड़ में स्थित सचखंड गुरुद्वारा सिख धर्मावलंबियों के लिए बेहद ही महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है। इसलिए पंजाब और नांदेड़ को जोड़ने के लिए इस रूट पर साल भर ही सचखंड एक्सप्रेस और हुजूर साहिब नांदेड़ सुपरस्टार एक्सप्रेस नाम से 2 स्पेशल ट्रेन चलाई जाती हैं। नांदेड़ स्टेशन पहुंचने के बाद आप यहां से नियमित अंतराल पर चलाई जाने वाली नि:शुल्क बस सेवा के सहारे सचखंड गुरुद्वारा जा सकते हैं। कम से कम समय में सचखंड गुरुद्वारे के दर्शन के लिए आप अपने शहर से हवाई मार्ग के जरिए भी यहां तक पहुंच सकते हैं। क्योंकि सचखंड गुरुद्वारे से निकटतम एयरपोर्ट श्री गुरु गोविंद सिंह जी हवाई अड्डा महज 4 किमी की दूरी पर ही स्थित है। हवाई अड्डे से आप एक प्राइवेट टैक्सी के जरिए आसानी सर सचखंड गुरुद्वारे तक पहुंच सकते हैं। वैसे इस हवाई अड्डे पर आप सिर्फ घरेलू एयरलाइन्स के जरिए ही पहुंच सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय एयरलाइन्स से यात्रा करते वक्त आपको नांदेड़ से करीब 250 किमी दूर इसके सबसे निकटतम यानी राजीव गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट, हैदराबाद उतरना होगा। यहां से आप प्राइवेट कैब या फिर बस के

जरिए गुरुद्वारे तक पहुंच सकते हैं।

☞ **गुरुद्वारा भंगानी साहिब, सिरमौर, हिमाचल प्रदेश :-** यह गुरुद्वारा सिखों की जीत, शक्ति और एकता का प्रतीक है। यह ठीक उसी स्थान पर बनाया गया था जहाँ राजा भीम चंद और गुरु गोबिंद सिंह के बीच भगानी की लड़ाई लड़ी गई थी। यह गुरु गोबिंद सिंह की पहली युद्ध विजय थी और वह भी बीस वर्ष की छोटी उम्र में।

☞ **गुरुद्वारा श्री हेमकुंड साहिब, चमोली, उत्तराखंड :-** हेमकुंड साहिब गुरुद्वारा उत्तराखंड के जिला चमोली में स्थित है। यह सिखों का एक प्रमुख तीर्थ स्थल है। हेमकुंड साहिब गुरुद्वारा सिखों के दसवें गुरु गोबिंद सिंह जी की तपस्थली है। साथ ही यह विश्व का सबसे ऊंचा गुरुद्वारा भी है। गुरुद्वारा करीब 15 हजार 200 फीट ऊंचे ग्लेशियर पर स्थित है। इसके बावजूद भक्त पूरी श्रद्धा के साथ कठिन यात्रा करके यहां पहुंचते हैं। इसलिए हेमकुंड साहिब गुरुद्वारा को सिख तीर्थों की सबसे कठिन तीर्थ यात्रा भी कहा जाता है। गुरु गोबिंद सिंह शिवालिक में अपनी लड़ाई के लिए डेरा डालते समय इस स्थल पर रुके थे। हेमकुंड का उल्लेख ग्रंथ साहिब के दशम ग्रंथ में मिलता है। यद्यपि हिमालय में 4,632 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है, और वर्ष के दौरान अधिकांशतः दुर्गम है, यह सिखों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है। हेम.कुंड एक संस्कृत नाम है जो दो शब्दों हेम अर्थात बर्फ और कुंड अर्थात कटोरा को मिलाकर बना है। दसम ग्रंथ के अनुसार, हेमकुंड साहिब गुरुद्वारा वह स्थल है, जहां पांडु राजा अभ्यास योग किया करते थे। हेमकुंड साहिब गुरुद्वारा उत्तर भारत की हिमालयी श्रृंखला में स्थित है। इसलिए ठंड के दौरान यहां पर श्रद्धालुओं की आवाजाही बंद रहती है। जब चारधाम यात्रा प्रारंभ होती है उसके आसपास हेमकुंड साहिब की यात्रा की शुरुआत होती है। यह गुरुद्वारा वर्ष के सिर्फ 5 महीने श्रद्धालुओं के लिए खुला रहता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, हेमकुंड साहिब गुरुद्वारा का संबंध रामायण काल से है। इस पवित्र स्थल पर पहले मंदिर था, जिसका निर्माण मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के भाई लक्ष्मण जी के द्वारा हुआ था। गुरु गोबिंद सिंह द्वारा रचित दसम ग्रंथ में इस बात का उल्लेख मिलता है कि यहां पर गुरु गोबिंद सिंह जी ने 20 वर्षों तक तपस्या की थी। गुरु से संबंधित होने की वजह से इस स्थल को गुरुद्वारा घोषित कर दिया गया। उत्तराखंड के चमोली में स्थित गुरुद्वारा हेमकुंड साहिब सिखों के लिए सबसे पवित्र स्थान है. इसकी खूबसूरती ऐसी है कि किसी का भी मन मोह ले. ऐसा माना जाता है कि यहां सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोविंद सिंह जी ने अपने पूर्व जन्म में ध्यान साधना की थी और वर्तमान जीवन जिया था. अगर हम हेमकुंड का अर्थ समझें तो इसका मतलब होता है बर्फ का कटोरा। 7 चट्टानों वाली पहाड़ी के बीच 'हेमकुंड साहिब' यह गुरुद्वारा दुनिया का सबसे बड़ा गुरुद्वारा है. कहा जाता है कि प्राचीन समय में हेमकुंड साहिब स्थल पर एक मंदिर हुआ करता था, जिसे भगवान राम और लक्ष्मण ने मिलकर बनाया था. उसी स्थान पर गुरु गोविंद साहिब ने कई वर्षों तक तपस्या और पूजा की थी. हेमकुंड की खोज तो वैसे 1930 से ही शुरू हो

गयी थी लेकिन इस जगह पर गुरद्वारे का निर्माण करीब 1935-36 तक हुआ. आज के समय में इस स्थल पर सिखों के साथ-साथ हिंदू श्रद्धालुओं की भी भीड़ लगी रहती है. आपको बता दें कि हेमकुंड साहिब की खोज के पीछे कई दिलचस्प कहानियां जुड़ी हुई हैं. यह स्थान करीब दो सदियों तक गुमनामी में रहा. इस स्थान के बारे में गुरुजी द्वारा रचित दशम ग्रंथ के एक भाग बिचित्र नाटक में बताया गया है. गुरु गोविंद सिंह जी अपने पूर्वजन्म का वृत्तांत 'बचित्र नाटक' में इस प्रकार बतलाते हैं-***''अब मैं अपनी कथा बखानो। तप साधत जिह बिध मुह आनो। हेमकुंड परबत है जहां, सपतसृंग सोभित है तहां। सपतसृंग तिह नाम कहावा, पांडराज जह जोग कमावा। तह हम अधिक तपसया साधी, महाकाल कालका अराधी। इह बिध करत तपसिआ भयो, द्वै ते एक रूप ह्वै गयो।''***

गुरुद्वारा श्री पौंटा साहिब, सिरमौर, हिमाचल प्रदेश :- यह गुरुद्वारा सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी की स्मृति में बनाया गया था। दशम ग्रंथ की रचना गुरु गोबिंद सिंह जी ने यहीं की थी। इसलिए, गुरुद्वारा दुनिया भर के सिख धर्म के अनुयायियों के बीच एक उच्च ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व रखता है। गुरुद्वारे में भक्तों द्वारा दान की गई शुद्ध सोने से बनी एक पालकी होती है। श्री तालाब अस्थान और श्री दस्तार अस्थान सिख तीर्थस्थल के महत्वपूर्ण स्थान हैं। श्री तालाब अस्थान का उपयोग वेतन वितरित करने के लिए किया जाता है और श्री दस्तार अस्थान का उपयोग पगड़ी बांधने की प्रतियोगिताओं के आयोजन के लिए किया जाता है। गुरुद्वारे से जुड़ा एक प्रसिद्ध मंदिर भी है जिसका हाल ही में गुरुद्वारा परिसर के आसपास के क्षेत्र में पुनर्निर्माण किया गया है। मंदिर देवी यमुना को समर्पित है। कवि दरबार, गुरुद्वारे के पास एक प्रमुख स्थान है गुरुद्वारा में विभिन्न राज्यों से पर्यटक आते हैं। यह स्थल यमुना नदी के तट पर स्थित है। यह गुरुद्वारा सभी के लिए लंगर (प्रसाद) परोसता है। गुरुद्वारा की विशुद्ध सुंदरता यह दर्शाती है कि ईश्वर एक है और हम सभी उसकी संतान हैं।

✯ **गुरु गोबिंद सिंह के हथियार :-** तख्त श्री केसगढ़, आनंदपुर साहिब के गर्भगृह में गुरु गोबिंद सिंह जी से जुड़े शास्त्र (हथियार) रखे हुए हैं। शाम को इन शस्त्रों को बाहर निकालकर संगत को दिखाया जाता है, जिनमें करपा बरछा (भाला), तुफांग (मस्कट), खंडा (दोधारी तलवार), सैफ (सीधी चौड़ी तलवार), कटार (पंचर छुरा) और नागिनी बरछा (1700 में आनंदपुर की लड़ाई से सांप जैसा भाला) है।

☞ **करपा बरछा :-** वर्ष 1673 में जब गुरु साहिब जी की माता जीतो जी से सगाई हुई, तो गुरु जी के ससुर चाहते थे कि बारात लाहौर जाए। हालाँकि, लाहौर जाने के बजाय, गुरु जी ने आनंदपुर साहिब के पास एक नई बस्ती बसाई और उसका नाम ***'गुरु का लाहौर'*** रखा। जब वहाँ के निवासियों ने पानी की कमी की शिकायत की, तो गुरु जी ने इसी बरसा से

जमीन पर वार किया और पानी फूट पड़ा।

☞ **ढाल :-** गुरु जी द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली दरियाई घोड़े की खाल से बनी ढाल।

☞ **रायफल :-** गुरु तेग बहादुर साहिब जी की शहादत के बाद, गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने सिखों को एक हुक्मनामा (लिखित आदेश) जारी किया कि जब भी वे आनंदपुर साहिब जाएँ, तो भेंट स्वरूप घोड़े और हथियार लेकर आएँ। परिणामस्वरूप, लाहौर के एक सिख द्वारा भेजी गई यह बंदूक (राइफल) सहित कई हथियार गुरु जी को भेंट किए गए।

☞ **शमशीर-ए-तेगा :-** गुरु गोबिंद सिंह जी की तलवार।

☞ **दाह-ए-आहिनी :-** यह हथियार मुगल सम्राट बहादुर शाह ने यह सैफ गुरु गोबिंद सिंह जी को भेंट किया था, क्योंकि गुरु जी ने बहादुर शाह को सिंहासन पर बैठने में सहायता की थी तथा युद्ध में तारा आजम को एक

गुरु गोविन्द सिंह से संबंधित ग्रन्थ 'दशम ग्रन्थ' है। दशम ग्रन्थ का विभाजन 'जापजी', 'अकाल उसतत', 'विचित्र नाटक', 'वार श्री भगउती जी की', 'ज्ञान प्रबोध', 'चौपाया', 'शब्द हजारे-रामकली', 'सवैया बत्तीस', 'शास्त्र नाममाला', 'स्त्री चरित्र', तथा 'जफरनामा' और 'हिकायन' शीर्षकों में किया गया है। 'जाप साहिब' में परमात्मा के स्वरूप का वर्णन है। 'अकाल उसतत' में अकाल पुरुष की स्तुति है। 'विवित्र नाटक' पौराणिक काव्य-रचना है। 'चण्डी चरित्र' दुर्गा-सप्तशती के आधार पर लिखा गया है। 'ज्ञान प्रबोध' में दान, धर्म एवं राजधर्म का वर्णन है। 'शास्त्र नाममाला' में शास्त्रों के नाम के माध्यम से परमात्मा का स्मरण है। चौपाई में 'दुलह दई' और 'श्वास वीर्य' राक्षस के युद्ध का वर्णन है। 'जफरनामा' सन् 1706 ई0 में औरंगजेब को लिखा हुआ पत्र है, जिसमें गुरु गोविन्दसिंह के आदर्शों की व्याख्या है। उनकी वाणी में भक्ति तथा देशप्रेम का अलौकिक वर्णन है।

तीर से मार दिया था।

✯ **गुरुद्वारा सिंह सभा :-** राजस्थान के आध्यात्मिक शहर पुष्कर में आपको गुरुद्वारा सिंह सभा मिलेगा। यह सिख मंदिर अपने सफेद गुंबद और शांतिपूर्ण वातावरण के लिए जाना जाता है। आसपास की व्यस्त सड़कों से बिल्कुल अलग। जैसे-जैसे आप करीब पहुँचेंगे, आपको भक्ति गीत बजते सुनाई देंगे। यह मंदिर 1706 में गुरु गोबिंद सिंह की पुष्कर यात्रा के सम्मान में बनाया गया है, जो इसे सिखों के लिए महत्वपूर्ण बनाता है। यह एक ऐसी जगह है जहाँ लोग प्रार्थना और चिंतन करने आते हैं। अगर आप धार्मिक नहीं भी हैं, तो भी आप यहाँ के शांत वातावरण का आनंद ले सकते हैं। पुष्कर में दर्शनीय स्थलों की यात्रा से यह एक अच्छा ब्रेक है और आपको स्थानीय संस्कृति से रू-ब-रू होने का मौका देता है। विभिन्न ऐतिहासिक अभिलेखों के अनुसार, गुरुद्वारा साहिब पुष्कर में अतीत के दो सबसे प्रसिद्ध सिख गुरुओं-गुरु गोबिंद सिंह जी और गुरु नानक देव जी ने 1706 में राजपूताना राज्यों की अपनी यात्रा के दौरान दर्शन किए थे। उस दौरान पुजारी चेतन दास ने उनकी मेजबानी की थी। सिखों के अंतिम गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जिस स्थान पर रुके थे, उसे पहले गोबिंद घाट के नाम से जाना जाता था और बाद में इसका नाम बदलकर गांधी घाट कर दिया गया। एक खोखे के नीचे स्थित एक सुंदर पत्थर की पटिया पर चार अलग-अलग लिपियों-गुरुमुखी, फारसी, देवनागरी और रोमन में गोबिंद घाट लिखा हुआ है। यहाँ एक ऐतिहासिक हुक्मनामा है, जो भोजपत्र पर अंकित है और जिसके अनुसार यह श्री गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा पुजारी चेतन दास को भेंट किया गया था और जो आज भी गुरुद्वारे के सेवारत पुजारी के पास है। सिख धर्म के धार्मिक ग्रंथ, गुरु ग्रंथ साहिब की एक हस्तलिखित प्रति भी यहाँ के मुख्य पुजारी के पास है। उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में पुष्कर में गुरु नानक साहिब जी और गुरु गोबिंद सिंह जी, दोनों के आगमन के सम्मान में एक साधारण गुरुद्वारा बनवाया गया था। बाद में मरम्मत और पुनर्निर्माण के लिए इसे तोड़ दिया गया और इसके स्थान पर एक शानदार सफेद संगमरमर का गुरुद्वारा बनवाया गया।

✯ **गुरुद्वारा सिंह सभा के पास घूमने की जगहें :-** गुरुद्वारा सिंह सभा के आस-पास घूमने की कई जगहें हैं :-

☞ **ब्रह्मा मंदिर :-** जगतपिता ब्रह्मा मंदिर के नाम से भी प्रसिद्ध, यह मंदिर पुष्कर झील के पास स्थित है। यह देश में बचे कुछ ब्रह्मा मंदिरों में से एक है और पुष्कर में घूमने लायक दुर्लभ स्थानों में से एक है। इस पूजा स्थल का निर्माण चौदहवीं शताब्दी में हुआ था। संगमरमर और पत्थर से निर्मित, इसकी वास्तुकला और भव्य लाल शिखर अद्वितीय हैं। इस पवित्र संरचना की पक्षी आकृति इसे एक विशिष्ट पहचान प्रदान करती है। पूजा स्थल के अंदर, ब्रह्मा की मूर्तियाँ गर्भगृह को सुशोभित करती हैं। विवाहित पुरुषों को गर्भगृह में प्रवेश की अनुमति नहीं है क्योंकि यह स्थान केवल तपस्वियों या संन्यासियों के लिए आरक्षित है। ब्रह्मा मंदिर दुनिया भर से भक्तों और पर्यटकों की एक विविध भीड़ को आकर्षित करता है। मंदिर के आसपास का वातावरण भक्ति और आध्यात्मिकता से ओतप्रोत है, जो शांति और स्थिरता की एक अनूठी अनुभूति पैदा करता है। कार्तिक पूर्णिमा और पुष्कर ऊँट मेले जैसे धार्मिक उत्सवों के दौरान जहाँ मंदिर में चहल-पहल रहती है, वहीं शांत समय में यह चिंतन और मनन का स्थान बना रहता है।

☞ **पुष्कर झील :-** पुष्कर झील राजस्थान के अजमेर जिले के पवित्र शहर पुष्कर में स्थित है। हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार, यह 'तीर्थ राज' है किसी जल निकाय से संबंधित तीर्थ स्थलों का राजा। पुष्कर में ब्रह्मा का सबसे प्रमुख मंदिर भी स्थित है। झील का झिलमिलाता पानी, साफ आसमान और राजसी पहाड़ियों की झलक दिखाता है, जो एक मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करता है। यह खूबसूरत झील तीन तरफ पहाड़ियों से घिरी है और चौथी तरफ विशाल रेगिस्तान का नजारा पेश करती है। आसपास की पहाड़ियों में सर्प पर्वत की 'अगस्त्य' गुफाओं जैसे कई रोचक स्थल हैं। किंवदंतियों के अनुसार, झील के पानी में विशेष शक्तियाँ हैं और इसमें डुबकी लगाने से 100 वर्षों से संचित पाप धुल जाते हैं।

☞ **गौ घाट :-** पुष्कर घाटों की भूमि के रूप में जाना जाता है। यहाँ के 52 घाटों में से, गौ घाट पर सबसे ज्यादा लोग आते हैं। यह एक विशाल घाट है जिसके चारों ओर राज बाबर मंदिर स्थित है जो इसके वातावरण को और भी मनोरम बना देता है। इस घाट पर लोग धार्मिक अनुष्ठान, विशेष रूप से दिवंगत लोगों के लिए पिंडदान, करने के लिए आते हैं। इसके अलावा, गौ घाट इसलिए भी लोकप्रिय है क्योंकि महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू और लाल बहादुर शास्त्री की अस्थियाँ यहीं झील में विसर्जित की गई थीं। गौ घाट के पास की गलियाँ चमड़े के उत्पाद, आभूषण, कलाकृतियाँ और हस्तशिल्प की छोटी-छोटी दुकानों से भरी पड़ी हैं।

☞ **वहारा घाट :-** पुष्कर के घाटों की भव्यता के बीच बसा, वराह घाट एक सुरम्य स्थल है, जो अपनी शाम की मनोरम छटा और झील के मनमोहक दृश्यों के लिए प्रसिद्ध है। हर रात भव्य आरती समारोह के आयोजन के लिए प्रसिद्ध, यह घाट एक अभयारण्य बन जाता है जहाँ आगंतुक जीवंत आकाश, शांत जल और गूंजते भजनों और प्रार्थनाओं की शांति में डूब जाते हैं। जैसे ही सूर्यास्त होता है, वराह घाट एक जीवंत केंद्र में बदल जाता है, जिसके किनारों पर खाने-पीने के स्टॉल और स्थानीय विक्रेता लगे होते हैं, जो विभिन्न प्रकार के पाक व्यंजनों और उत्तम राजस्थानी हस्तशिल्प की पेशकश करते हैं। आध्यात्मिकता, सांस्कृतिक समृद्धि और स्थानीय वाणिज्य का यह आकर्षक संगम एक अनूठा वातावरण बनाता है जो सूर्यास्त के बाद पुष्कर के असली सार को दर्शाता है। वराह घाट उन लोगों के लिए एक दर्शनीय स्थल के रूप में उभरता है जो इस सांस्कृतिक रूप से समृद्ध शहर के हृदय में एक प्रामाणिक और जीवंत

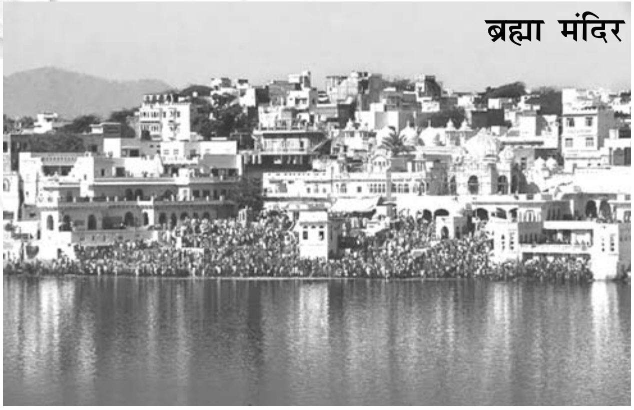
ब्रह्मा मंदिर

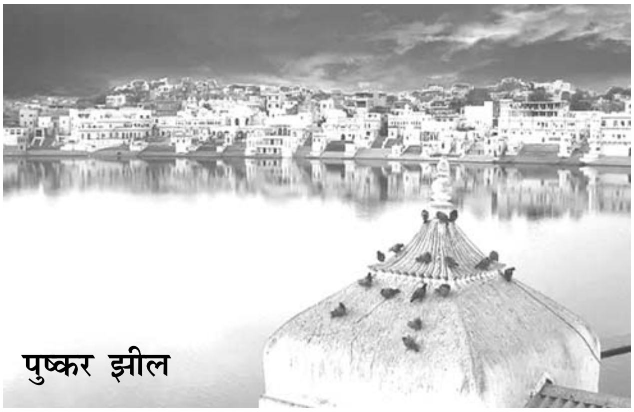
पुष्कर झील

गौ घाट

वहारा घाट

अनुभव की तलाश में हैं।

☆ **गुरुद्वारा सिंह सभा जाने का सबसे अच्छा समय :-** गुरुद्वारा सिंह सभा पुष्कर में आप अपनी सुविधानुसार और मौसम के अनुसार दिन के किसी भी समय जा सकते हैं। अगर आप एक सुखद यात्रा का आनंद लेना चाहते हैं, तो सर्दियों में यहाँ जाएँ। ऐसा इसलिए है क्योंकि राजस्थान में साल के अधिकांश समय मौसम गर्म और आर्द्र रहता है। यह उन पर्यटकों के लिए असुविधाजनक हो सकता है जो गर्मियों में गर्मी और ऊँचे तापमान के आदी नहीं होते। हालाँकि, सर्दियों के दौरान मौसम ठंडा और मध्यम रहता है, जिससे पर्यटक और यात्री मौसम की मार झेले बिना गुरुद्वारे की अपनी यात्रा का आनंद ले सकते हैं।

☆ **गुरुद्वारा सिंह सभा तक कैसे पहुँचें :-** गुरुद्वारा सिंह सभा पुष्कर शहर में स्थित है, यहां कुछ तरीके दिए गए हैं जिनसे आप बिना किसी परेशानी के पुष्कर पहुंच सकते हैं :-

☞ **हवाई जहाज से :-** हवाई मार्ग से पुष्कर शहर जाने के लिए आपको पुष्कर हवाई अड्डे की जांच करनी चाहिए। राजस्थान में, पुष्कर का निकटतम हवाई अड्डा जयपुर है। यह पुष्कर शहर से 140 किमी दूर है और दिल्ली, कोलकाता और मुंबई जैसे भारत के महानगरीय शहरों के बीच संपर्क बना सकता है। इसलिए यदि आप पुष्कर की यात्रा की योजना बना रहे हैं, तो आप जयपुर हवाई अड्डे की जांच कर सकते हैं, और हवाई अड्डे से आप स्थानीय कैब बुक कर सकते हैं। जयपुर से पुष्कर तक की इस यात्रा में लगभग 3 घंटे लग सकते हैं। दिल्ली से, तीन आम एयरलाइंस जयपुर के लिए रवाना होती हैं और उनमें से स्पाइसजेट और इंडिगो सबसे तेज हैं। स्पाइसजेट को दिल्ली से जयपुर पहुंचने में केवल 55 मिनट लगते हैं जबकि एयर इंडिया को आमतौर पर जयपुर हवाई अड्डे पहुंचने में 1 घंटे से अधिक समय लगता है। उस एयरलाइन की किराया दरें 3000 रुपये से 18000 रुपये तक होती।

☞ **ट्रेन से :-** पुष्कर का सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन अजमेर में स्थित है। यह पुष्कर से 30 मिनट की दूरी पर है और कोलकाता, मुंबई, दिल्ली, जयपुर, भोपाल और बैंगलोर जैसे महानगरों से जुड़ा हुआ है। अजमेर स्टेशन से कई स्थानीय टैक्सियाँ और बसें आपको तीर्थ नगरी पुष्कर ले जा सकती हैं। ट्रेन से यात्रा का किराया भी हवाई जहाज से कम है। ट्रेन से यात्रा करते समय पर्यटक पूरी यात्रा के दौरान खूबसूरत नजारे भी देख सकते हैं। इसलिए अगर किसी यात्री को पुष्कर पहुँचने की जल्दी है, तो वह यात्रा के लिए रेल का विकल्प चुन सकता है।

☆ **गुरू गोबिंद सिंह जी के नाम पर :-**

☞ गुरु गोबिंद सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय

☞ श्री गुरु गोबिंद सिंहजी इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी

☞ गुरु गोबिंद सिंह कॉलेज ऑफ एजुकेशन

☞ गुरु गोबिंद सिंह एजुकेशनल सोसाइटी

☞ श्री गुरु गोबिंद सिंह कॉलेज ऑफ कॉमर्स

☞ श्री गुरु गोबिंद सिंह विश्वविद्यालय अध्ययन एवं अनुसंधान विद्यालय

☞ गुरु गोबिंद सिंह की स्मारक डाक टिकट

☞ गुरु गोबिंद सिंह जी की 352वीं जयंती के अवसर पर 350 रुपये का स्मारक सिक्का जारी।

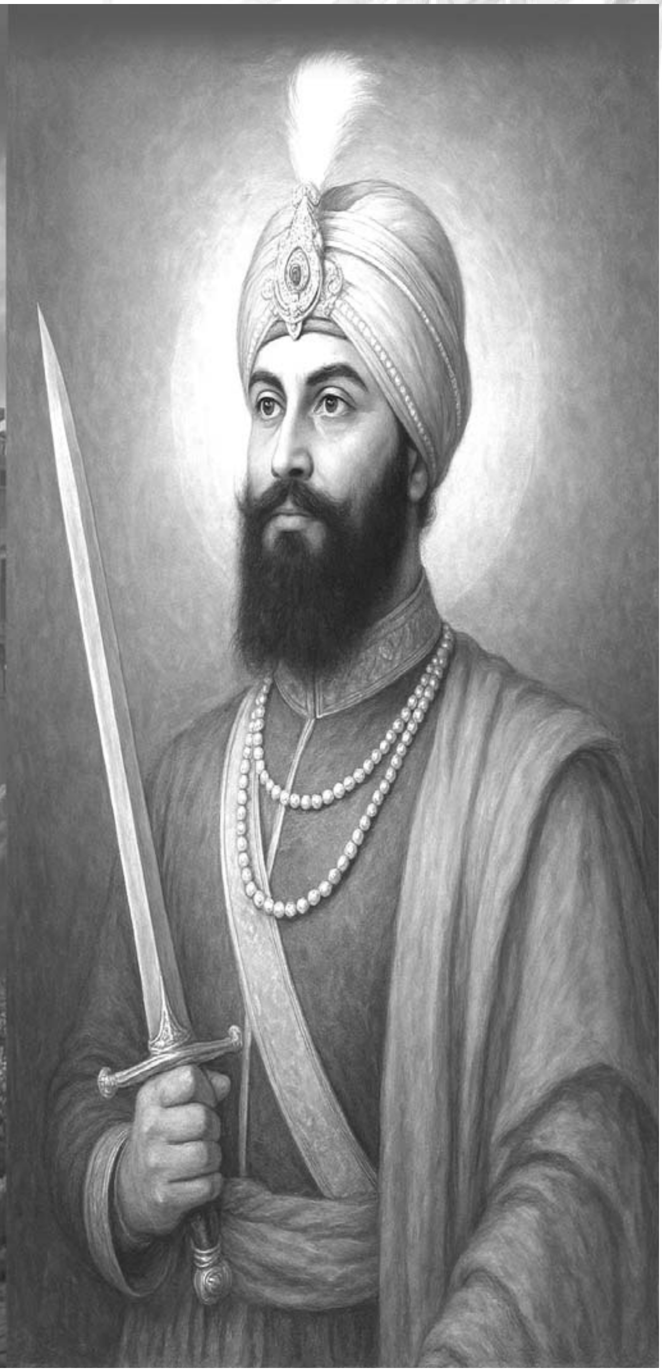

अंततः पूरा आलेख में दी जानकारी शहीदी सप्ताह को लेकर समर्पित हैं, जिनमें गुरू गोबिंद सिंह जी के शाहस, वीरता, दयालुता, संघर्ष और बलिदान को दर्शाया गया है। यह विचार करना प्रासंगिक होगा कि मानव इतिहास के इतिहास में गुरु गोबिंद सिंह जी से ज्यादा प्रेरणादायक जीवन जीने वाला कोई व्यक्ति नहीं है। उन्हें सरबंस दानी (दयालु दानी, जिन्होंने अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया), मर्द अगमरा (अद्वितीय पुरुष), शाह-ए-शहंशाह (शहंशाहों के बादशाह), बर दो आलम शाह (दोनों लोकों के शासक) आदि नामों से सम्मानित किया जाता है। यदि हम गुरु गोबिंद सिंह द्वारा किए गए कार्य पर विचार करें, अपने धर्म में सुधार लाने और अपने अनुयायियों के लिए एक नई विधि-संहिता स्थापित करने में, सभी परिस्थितियों में उनके व्यक्तिगत साहस पर; कठिनाइयों के बीच उनके दृढ़ धैर्य पर, जो दूसरों को हतोत्साहित कर देते और उन्हें अविभाज्य संकट में डाल देते और अंततः अपने शक्तिशाली शत्रुओं पर उन्हीं लोगों द्वारा अंतिम विजय पर जिन्होंने पहले उन्हें त्याग दिया था, तो हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि सिख उनकी स्मृति का सम्मान करते हैं। वे निस्संदेह एक महान व्यक्ति थे। आज पूरा सिख समुदाय गुरू गोबिंद सिंह जी का स्मरण करते हुए एक ही बात कहते हैं,

''सवा लाख से एक लड़ाऊं,
चिड़ियन ते मैं बाज तुड़ाऊं,
तबै गुरु गोबिंद सिंह नाम कहाऊं।''

● **Jagmohan Singh Gill**

Great path-finder of new horizon and Badshah-Darvesh (King and Saint), Guru Gobind Singh Ji, at Patna Sahib, his place of birth, with pomp and grandeur. Guru Ji was the embodiment of spirituality, a messiah to fight for equality among human beings, and stand up against suppression, and tyrannic brutalities, without hesitating to use the sword for this cause.

"Tahi Parkash Hamara Bhayo, Patna Shahar Vikhe Bhav Layeo", is about the birth of Guru Gobind Singh in Patna in his biography. Guru Gobind Singh did not aim to defeat enemies or captive them and grab their territories, but to create of good human beings. The beauty of Khalsa was divulged. Great nations are always known for their thoughts and deeds. Nishan Sahibs and Parchams (Flags) are the tallest of tall pillars, symbolising great courage. Religion bridges the gap between a human being and his social order. Valour is not a mere display of raising hands, but demonstration of courage with discipline in difficult times. Birth of 'Dasam-Pita' Guru Gobind Singh Ji at Patna, beacon of these great Godly and humanist messages, was a good augury for the human race.

Guru Gobind Singh's father the ninth Nanak, Guru Teg Bahadur, along with his family and large contingent of Sikhs launched a special tour espousing for the cause of 'Sarbat Da Bhalla' (welfare of the universe), towards the east of the country in the 17th century. Guru Ji reached Patna via Allahabad, Varanasi, Mirzapur and Sasaram with a sizable population of Sikhs at these places, Sangats and Dharamshalas already emerged as the places of congregation. Guru Ji's holy message concerning the Almighty spread at every corner and among the masses. Patna had already established itself as the main centre of the Sikhs in Eastern India. At that time Patna had emerged as India's most important commercial centre and was reckoned as a cosmopolitan city. Patna in 17th century was an important river-port and boasted a flourishing economy with a share in the activities of the English, Dutch and other European's East India Company. It was home to rich Sikh businessman like Deepchand (brother of famous Omichand). We are thus discussing the evolution of the capital city of Bihar from Pataliputra to Patna. This

being one of the oldest cities of country, we can divide its historical significance and background in two phases.

✯ **Earlier period of Patna before Parkash of Guru Gobind Singh Ji**.

The history of Patna starts about two thousand years before Prakash or advent of Tenth master Guru Gobind Singh Ji. It was known as Pataliputra and the capital of Magadha. The city was developed and built on a high ground in the confluence of the rivers the Ganga, the Sone, the Gandhak and the Pun-Pun. The city is marked as a symbol of the rise of Maurya and Gupta Kingdoms. Patliputra, its old name in Sanskrit, was even called Kusumpura and Pushpapura. In Greek it was referred to as Palli-Bothra and in Chinese as Paa-Lin-Fou. We also get some references in ancient mythology of the Puranic period. Emporar Ashoka's edicts sculpted on stone at Sarnath and Girnar confirm it. Chandra Gupta Maurya defeated the Greek King Selucus in Punjab and thus became the master of the entire North India. Then he spread his kingdom and extended his empire under the guidance of his spiritual and political mentor Chanakya came to be known as Magadha Empire. This was mentioned in the works of several chroniclers like Megasthenis, Hieun-Tsang, Fa-Hien etc. The city is reflected in the traditional Buddhist and Jain cultures. Many marauders attacked and ruined this city in different phases which resulted in its being completely ruined between the 11th and the 12th centuries. After the eclipse of the empire a few people lived here due to its navigable significance.

Some signs of this once thriving city are also found in the 15th Century. Guru Nanak visited this place during his first Udasi; the amazing tour to share the message of the Almighty along with the Universality of three basics Kirat Karo, Naam Jaapo and Wand Chako to human-beings among masses. According to Janamsakhis, Guru Nanak made the journey through Allahabad and Varanasi and then reached Patna. Here Guru Ji preached devout Sikhs like Salis Rai Johuri and Adharka Arora to walk the path of truth. The city's reconstruction was started during the rule of Emperor Sher Shah Suri of Afghan origin in the year 1541. He built a fort and established it as a provincial capital. The name of Patna emerged. One of the many meanings of Patna can be Pattan. In Sanskrit, Punjabi, Hindi or Latin (from Pontoon) the meaning of Pattan means the port situated on the banks of a river or the sea. In Patna there are two old Temples of Patan Devi. Patan Devi may be the goddess of people living along the banks of river. This is special trend among the Khatris. They had a whole array of images of their god or goddess as idols. They keep the idols of Kul-Devi or Kul Dewta where ever they settle and establish temples to keep them there. Behind name of Patna there may be several other reasons too.

During the period of the Emperors Akbar, Shahjahan and Aurangzeb, the city of Patna had a steady growth. Owing to its strategic location on the banks of big rivers it became a major river-port. Raja Todarmal one of nine gems or stalwarts (Navratna) in the court of Akbar, measured the land of eastern India making collection of revenue easier. He belonged to a Khatri family of Lahore. He accompanied many people from Punjab and Delhi having expertise in collection of revenue, measurement of land, administrative jobs and many other supporting activities. Most of them were Khatris.

Patna city emerged as a metropolis during the great visit of Ninth Master Guru Tegh Bahadur Ji. The people of Punjabi background (Hindu and Muslim) were present in siezable numbers. They had a good say in the market activities of Patna. In between Marufganj, Nadirganj and Chowk Bazar, the population of Khatris, including Saraswat Brahmins (Punjabi origin), was markedly found. Among them, Harimandir Galli, Jiria Tamolin Ki Galli, Hira-Nand

Shah Ki Galli, Bagh-Lodhan Galli, Kachauri Galli and some other are to be mentioned. We get many references of the presence of Salis Rai Johury and Adharka Arora in Sikh history. Bhai Gurdas in his Vaars writes about the presence of Bhai Badli Sodhi, Bhai Naval and Bhai Nihala Sabharwal in Patna, Bhai Bhanu Behl in Rajmahal and some other Sikhs during his time. During the time of Guru Tegh Bahadur, Jaita Seth, Raja Fateh Chand Maini, Rani Visambhra Devi, Pandit Shiv Dutt, Jagat Seth (then India's wealthiest banker), and possibly the family of Amirchand, who became the richest businessmen during the 18th century in the city of Calcutta, also resided along with large number of devotees having faith in Sikhism at Patna. They were recognized as the Sangat of Patna or Poorbi Sangat. Guru ji parted from with his family went further eastward to spread the message of the Lord Creator under the protection of these local Sikhs. Among those who he left behind was his mother Bebe Nanki, wife Mata Gujar+ Ji, and her brother Kirpal Chand Ji, and some other Sikhs. The new house was constructed with the permission of Guru Sahib for their stay. The same year, on the day of Poh Sudi Sapatami, year (1666 CE) Guru Gobind Singh Ji arrived in this world. At that time the Guru Teg Bahadur Sahib was at hk, preaching Gurbani.

✯ Patna: Period after the Parkash of Tenth Master Guru Gobind Singh Ji.

Early childhood of Guru Gobind Singh was spent in Patna. The Sangat of Patna looked after the family of Guru with great excitement, utmost care, respect and devotion. The early life of Guru Ji was of great astonishment. Every type of basic needs and other requirements were looked into with care. According to the belief of many historians, Guru Ji stayed here

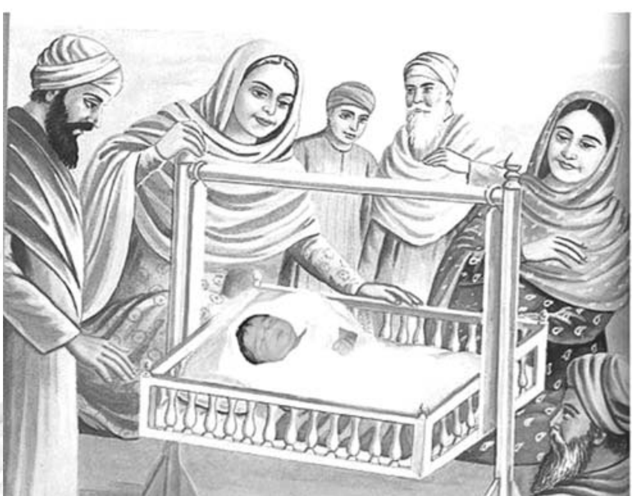

for almost six years. As per Guru Teg Bahadur Ji's wish the entire family was recalled to Anandpur Sahib. The entire Sangat of Patna bid farewell to Guru Ji and his family with moist eyes. They were not able to bear separation from their beloved Guru leaving Patna permanently. But it was a must for Tenth Master and his family had to move towards Anandpur Sahib. Among the Sangat, the country's richest banker Jagat Seth was present. He told Guru Ji that in every prominent town or city he was having his big houses with Gomastas and caretakers and urged him to stay at those stop-overs with comfort there while travelling to Anandpur Sahib. But Guru Sahib, the messenger of Almighty, had a different preference for staying amongst normal Sadh-Sangat. Guru Ji had blessed the Sangat of Patna before he started his journey further.

Patna, then a key commercial city of Bengal (Bihar at the time was part of Bengal), established direct contacts with European and Asian countries. The world's major trading peoples like the Parsis, the Armenians, the Jews, the British, the Dutch, the Danish, the French, the Portuguese, the Chinese, the Pathans, the Khojas, the Arabs and the ruler community of country the Moghuls, had trade relations with Patna. India's major merchants the Khatris, the Jains, the Marwaris, the Gujaratis, the Sindhis and several other

indigenous ones settled in Patna. It got an international status owing to its multi-national, multi-ethnic and multi-lingual flavour. In the year 1703, the name of Patna became Azimabad under the administration of Aurangzeb's grandson Azim-Us-Shaan. At that time Patna was at the height of progress. Variety of goods were imported and exported through said ships and other means of water network from different parts of the world. Various items like salt-petre, different varieties of cotton, silk, garments, opium, spices and many other products were traded. After 1757, the British got control of Patna fully, thus city developed mostly towards westward. Cantonments were constructed in Bankipore and Danapur. The population of Patna dropped sharply from the third decade of the 19th century. This was due to the emergence of a large colonial metropolitan city in Calcutta (2nd to London in the British Empire). Some of the trades shifted to hk. After the partition of Bengal, Patna became the provincial capital of Bihar. Old Patna was known as Patna City. This part is very-densely populated, with dingy and narrow lanes and bye-lanes. In the newer part of Patna there was progress. Chief administrative offices, universities, colleges, accommodation of military forces and the public, general residences and offices were developed with new infrastructure.

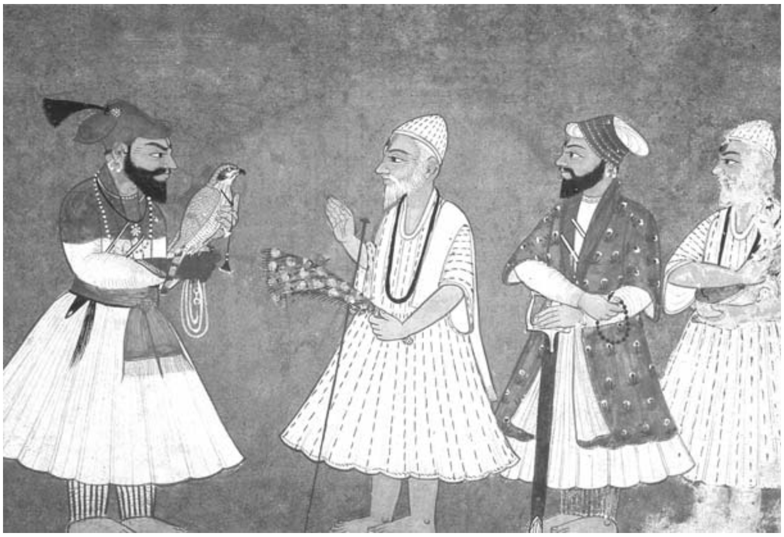

Key Sikh Centres of Patna

✮ **Historical importance or features of Patna for the Sikhs :-** Guru Nanak's visit during his Udasi created the Sangat in Patna. The impact was seen in the time of Guru Hargobind Ji, the Sixth Master. Patna became the head-quarters of the Sikh diocese of East India. In the sixth decade of the 17th century, the Ninth Master Guru Teg Bahadur Ji came to Patna with his family. Sometime later he left towards farther East, keeping his family in the safe hands of the Sikhs of Patna. Great Sant-Sipahi (saint-soldier), Badshah-Darvesh and thinker Guru Gobind Singh Ji was born in Poh Sudi Sapatami, Vikrami Samwat 1723 (December 26, 1666 CE) at Patna, bestowing it to the status of the most holy place for the Sikhs. His arrival was ordained to dispel the darkness of world prevailing at that time. Thus owing to this significance, Patna rose to a place of great heritage for the Sikhs. About two hundred years ago, the population of Sikhs in the city of Patna was about fifty thousand. Commemorating this glorious history, many Sikh shrines were built. Among them is Takht Sri Harimandir Ji, the most important one situated in the lane known as '*Harimandir Galli'*. It was also called '*Kutcha-Faru-Khan'*. Guru Gobind Singh's birth might have changed the name of this place as ***'Hari-Mandir'-Abode of the Amighty***, thus prompting renaming of the lane as '*Hari-Mandir Galli'*. **Sri Hari-Mandir** became the most important seat of Sikhs in eastern India. This house belonged to Salis Rai Johury (he received the blessings Guru Nanak). He converted this place as Dharamsala for the convenience of the general congregation. As per the Hukumnama (the order) of Guru Tegh Bahadur sent from Munger to Raja Fateh Chand Maini and other local Sikhs a new building was constructed for the residence of Guru Ji's family.

☆ **Early information of Hari-Mandir Ji :-** Mullah Ahmed Bahbahani gave details about the status of Hari-Mandir Ji in last part of the 18th century in his Merat-Ul-Ahwal Jahan-Nama about the birth place of Guru Gobind Singh Ji as maintained by the devotees. He says, "A beautiful shrine has been built at the birth place of Guru Ji known as Harimandir. This has become centre of power for the Sikhs which is also called Sangat in reverence". Other important information about this was made by famous European historian, Charles Wilkins, in his writings about his Patna visit on the 1st of March 1781. He recounted the description very minutely, underlining its different features which was published in 1788 under the title "The Sikhs and their college at Patna" in an Asiatic society research paper. He observed and provided details of built-up area of the Harimandir Ji, the daily routine of reading the holy scripture of Guru Granth Sahib and worshipping the Almighty as divine service, reciting this holy text, religious festivals and other activities. Information about the entry of the Sikhs pilgrims was given. Some other writers also gave vivid description in their writings about the Patna Sahib. In the centre of its campus an 80 foot high mast of Sal-wood was erected, covered with cloth and a religious flag was hoisted on it. This is known as **Nishan Sahib**. This tall wood was fitted in the iron pipes outside. This was an offering made by Raja Jang Bahadur of Nepal to **Takht Sahib.**

The main building of Sri Harimandir faced many calamities. At the beginning of the 19th century it was devastated by a terrible fire. Then again, Maharaja Ranjit Singh built a new Gurdwara Sahib. Sewa of buiding was started from 1839 and completed in 1841. Maharaja Ranjit Singh did not get a chance to see this newly-constructed Takht Sahib as he died during this period. Meanwhile, in 1887, with the inspiration from Mahant of Takht Sahib Bawa Sumer Singh to the Maharajas of Patiala, Jind and Faridkot, these Kingdoms supported in development and a gave new shape to periphery of campus. In 1934, entire Bihar was rocked by a devastating earthquake. Some portions of Harimandir Ji were badly damaged and developed cracks. Construction of the new building started in 1954 on the day of Kartick Purnima and completed in the year 1957, on the day of 'Poh-Sudi-Sapatami'. Sant Nischal Singh of Mandi Bahauddin of Gujarat district of western Punjab (later on his headquarters was shifted to Yamunanagar-Jagadhri espousing for the cause of 'Sarbat Da Bhalla' (welfare of the universe), owing to Partition of India) and Sant Kartar Singh of Sultanpur-Lodhi carried out this Kaar-Sewa with other associates.

Earlier the management and authority of Harimandir Ji was with its Panch with the sole authority

resting with its Mahant or Pujari. This five-member Panchs maintained liaison with the Mahant for religious, administrative, financial and other activities. Considering its historical importance the Government of India (East India Company) took over the management through Board of Revenue, Bengal under Regulation XIX of 1810. Mahant Ganda Singh got the right on 11th March, 1865 through this. Section IV of the Act gave the power to the District Judge to select the Mahant or Pujari at his discretion. Little changes or amendments took place subsequently. This system prevailed till last Sarbrahkar, Mahant Kartar Singh Bedi. A committee of fifteen members was constituted to help him till 1954. Services of Mahant or Sarbrahkar and trustees were dismissed on 14th December 1954. Again on 17th December 1956, the constitution and the byelaws were framed and approved by the District Judge, Patna, and new board of representatives was formed. It included representatives of various prominent Sikh organisations of Amritsar, Patna, Delhi and Calcutta.

Patna Sahib's income used to come from several sources including Maharaja Ranjit Singh, Chandu Lal the Prime Minister of Nizam of Hyderabad and the Maharajas of Patiala, Nabha, Faridkot and Jind kingdoms. Queen of hk and other influential and wealthy devotees made annual offerings to Patna Sahib. This donations made the running of various charitable works like regular Langar, medical dispensary, Middle and High School for both girls and boys, Guru Gobind Singh College, very smooth. A document in the office of State Central Records of 17th April 1839 reveals celebration of two Gurpurabs in a large way. The first one was only Gurpurab and the second one was Prakash Utsav of Guru Gobind Singh. As per my observation Gurpurab signifies the Avtar Purab (entering of the Holy soul in the world) of Guru Nanak. This was celebrated by Sikhs in every Gurdwara Sahib and Nanak-Panthi Deras on the day of Kartik Purnima. Such traditions are also seen today. At present some more Gurpurabs like Martyrdom day of Fifth Master Guru Arjan Dev and and Ninth Master Guru Tegh Bahadur, Baisakhi the birthday of Khalsa, Dushera, Holla Mahalla and some functions are organized with devotion and deep respect.

✯ **Sacred Historical items and documents of Patna Sahib** :- The Takht Sahib possesses very holy, historical and heritage documents and objects. Among these are signatures of Guru Gobind Singh in the holy Guru Granth Sahib. This was known as ***Bare-Sahib*** in the early days. There is childhood oil painting of Guru Gobind Singh. His sandals, gold plated wooden footwear, four arrows, a small sword, a wooden comb, two iron *Chaker* (quoits), a small *Khanda* (double-edged sword), a steel *Baghnakh Khanjer* (small dagger), a small iron *Chakri*,

round earthen pellet and a cradle in which Guru Ji slept in his childhood are all there. The memorabilia include Guru Teg Bahadur's Kharaon (sandals) made of sandalwood and Bhagat Kabir's three khaddi's (weaver's wooden stand). There are Hukumnamas (copy of orders to disciples) of the sixth Guru Hargobind Sahib, his eldest son Baba Gurditta (Baba Chand's successor), Guru Teg Bahadur Sahib, Guru Gobind Singh and of Mata Sundari (wife of Tenth Master). These are of special historical importance for the Sikh world.

✯ **Other important places of Sikhs :-** The Board of Management controls many other historical Gurdwaras including Gurdwara Gaighat, Guru Ka Bagh, Gobind Ghat, Handi Sahib and some Gurdwaras outside Patna. Guru Teg Bahadur first stayed at Gaighat while entering Patna. Here was the big house of Bhai Jaita Seth, famous confectioner and disciple of the Guru. Today the place is famous in the name of Gurdwara Gaighat which is under Alamganj police station.

Guru Teg Bahadur entered in the garden in the eastern outskirts of Patna while returning from East India and stayed there for some time. The garden was in a bad shape and desolate. This became lush green with Guru Ji's entry. The owner of the garden, Nawab Rahim Khan and Karim Khan were overwhelmed with joy. They offered the Guru the entire Garden. This is located about two kilometres further east from Poorvi Darwaja under Maal-Salami police station. On Ashok Rajpath, the main road of Patna diagonally opposite to the other side of road towards the bank of the river Ganga is situated Gurdwara Gobind Ghat. At this place renowned Pandit Shiv Dutt was able to identify Guru Gobind Singh's divine form.

Gurdwara Handi Sahib is located at Danapur on the bank of the Ganga on the western side from Patna. Guru Gobind Singh halted here for sometime while going to Anandpur Sahib along with his caravan. Here an old lady devotee, named Jamna or Pardhani served 'Khichri' to Guru ji. Today Khichri is served regularly from Langar as Prasad.

Another important Gurdwara Maini Sikh Sangat is run by the saints of Nirmala Order. Raja Fateh Chand Maini had a palace at this place. In this palace Guru Gobind Singh used to play with his companions. Raja Fateh Chand Maini had no child. Maini and his wife Rani Vishambhra Devi treated Guru Ji like their child. Today this is famous by the name Gurdwara Bal Lila. The Gurdwara Sahib was reconstructed under the leadership Nirmala Saint Ishar Singh in 1869.

This account information will be incomplete if we don't mention the Udassis or Nanakshahi 'Deras'. There are many Udassi Deras and Dharamshalas

dedicated to Guru Nanak Sahib and his son Baba Sri-Chand Ji. These Deras were patronised by rich people of different castes and creeds. Large tracts of land and big houses were donated. For more than past two centuries it continuously propagated tenets of Sikhism in their own way. Most of these Deras have become defunct now. Among them most important one was Dera of Rikabganj in the 18th century. It was known as Badi Sangat in Didar Ganj and situated to the east of Patna beside the Ganga. It was a very important Dera of East India as because 360 Deras were directly affiliated to it. Even today, a beautiful hand-written Bir of Guru Granth Sahib can be seen. Today, some local people are maintaining it. Most of the land has been grabbed by outsiders. There are such examples galore.

✯ **Contribution of some Mahants and Granthis in Sikh history and literature :-** In this context one name stands out and that is of Bhai Sukha Singh. He was the Granthi of Patna Sahib in the 18th century. He wrote the life-history of Guru Gobind Singh in beautiful poetry, known as 'Guru Bilas Patshahi Daswin'. He used to give religious sermons in Patna Sahib regularly. He was very knowledgeable and the Sikh Sangat respected him.

The most celebrated name in the 19th century would surely be of Bawa Sumer Singh. He was Mahant of Patna Sahib for nearly 20 years. His way of propagation of Sikhism was unique. He baptized many Nanak-Panthi Sikhs of East India and made them Khalsas. Bawa Sumer Singh was great grandson of Bawa Swarup Dass Bhalla, a descendent of the Third Master Guru Amardas. Bawa Ji wrote many books on Sikh Philosophy and History. He edited Faridkoti Tikka. He was held in high esteem in the Hindi literary world. He groomed great Hindi poets like Ayodhya Singh Upadhyay, 'Hariaodh' and Markande. While staying in Patna he always inspired Hindi litterateurs. Hindi poetry prospered during his tenure in Patna. On the request of the students of Bihar National College and prominent scholars of Patna he set up a literary organisation named 'Kavi Samaj' in 1893.

Noted historian L.S.S. O' Malley, I.C.S., observed in his Bihar and Orissa District Gazetteers some features of the Patna Sahib in the early 20th century, "The temple is one of the four great sacred places of the Sikhs, who visit it on pilgrimage. The pilgrims are bound to appear before the Guru Granth Saheb on the first day of entering the town, and offer ***ardas*** or ***kara parshad***, i.e., sweetmeats specially prepared for the purpose. The Mahanth of this temple must be an ***Akali pardeshi***, i.e., he must belong to the puritanical sect of ***Akalis'***, and not be a native of Patna, a salutary rule preventing the funds of the temple from becoming the hereditary perquisite of any one family".

✯ **Conclusion :-**

The **350th Parkash Utsav of Guru Gobind Singh** has been celebrated and the occasion made us feel that entire Patna city was steeped in this great heritage. *Beside the Takht Sahib and other Gurdwara Sahibs, a strong feeling of humanitarian teachings by Gurus also seemed to be emerging from different religious places like temples, mosques, churches, deras and other such*

centres. People of every religion, caste and creed were eager to bathe in the common stream flowing with thought of oneness of humanity. People came to understand the great slogan of ***Guru Gobind Singh Ji, " Manas Ki Jaat Sabhe Ek Hi Pehchanbo", i.e., Behold All Human As Of One Race***. Guru Ji's 350th Avtar Purab was celebrated in exemplary manner in Patna. ***It was a celebration of a legacies, repertoires and traditions of great religion, the teachings of which flowed through ages and generations***. Right from the beginning there was huge ocean of Sangat flowing nonstop to seek blessings of the Gurus, both in the Takht Sahib and the newly-erected replica of the Takht Sahib at Gandhi Maidan. Though officially scheduled for about a week, it was extended till the next Parkash Utsav in deference to an overwhelming response of citizens of Patna as well as those from other parts of country and abroad. ***The greatest role to make this programme a grand success was played by the Bihar Government under leader-ship of great visionary leader Sri Nitish Kumar, the Chief Minister. He took personal care to minute details and monitored the progress on a daily basis. He left no stone unturned in war-footing way to make this a grand success. Sikhs across the globe were amazed by the preparations he had organised and the level of dedication***. ***All blessed Bihar, its Government and its people who had rightfully paid tribute to the great saint, scholar and soldier who dedicated his entire family for protecting human rights and values.*** Their pious effort brought them in the list of those great people who had earlier contributed and having great role in building relationship with Sikhism in depth.

Guru Gobind Singh Ji ordered to treat Guru Granth Sahib as living Guru and to follow only 'Shabad Guru'. This philosophy brought revolution of knowledge in the world. Guru Granth Sahib has endless treasures and has an answer to every problem faced by human beings. By giving the status of 'Living Guru' to Great Granth Sahib, Guru Gobind Singh Ji has blessed entire humanity with its great benefits. In Guru Granth Sahib Creator Lord himself

✯ **REFERENCES :-**

☞ Giani Santokh Singh – Sri Guru Partap Suraj Granth
☞ Giani Gian Singh – Twarikh Guru Khalsa
☞ Pandit Tara Singh Narottam – Sri Guru Tirath Sangrahi
☞ Dr Ganda Singh – Early European Accounts of the Sikhs
☞ Dr Tirlochan Singh – Guru Tegh Bahadur 'Prophet and Martyr'
☞ Dr Balwant Singh Dhillon – Pramukh Sikh Ate Sikh Panth
☞ Dr Ved Prakash – The Sikhs of Bihar
☞ Bhai Kahan Singh Nabha – Mahaan Kosh
☞ Giani Balwant Singh Kotha Guru – Nirmal Bodh Granth
☞ Giani Fauja Singh – Nanak Panthi Sikh (Gurmat-Parkash, September-1969)
☞ Mr L.S.S. O'Malley, I.C.S. – Bihar and Orissa District Gazetteers, Patna 1924
☞ Dr Surendra Mohan – Ninteenth Century Patna
☞ Mr M. R. Kazmi and Mr M. Kumar – Historic Patna Series Volumes I & II
☞ Mr Manoranjan Ghosh – The Patliputra 1919
☞ Mr Ramji Mishra – Dastane-E-Pataliputra
☞ Industry Year Book and Directory, Calcutta-1931
☞ Jagmohan Singh Gill (writer of this article) – Early Sikhs of East India and Guru-Boli Punjabi

spreads and blends as great song, music and love equally. The art of living is best defined as an ideal way of life in Guru Granth Sahib. The celebration of 350th Parkash Utsav of Guru Gobind Singh Ji will be meaningful if we further explore ourselves, keeping in mind the Guru's teachings and the highly revered place of Patna Sahib. It is need of the hour to walk on the path laid by Guru Granth Sahib. This sacred Granth comprises collection of all cultures in the form of unique spirituality. It functions as a beacon in the dark and its philosophy always shines. *Today all of us —— Sikhs, Hindus, Muslims, Christians, Buddhists, Jains and members of other religions must follow the path of peace and co-existence collectively to live a developed and holy life.*

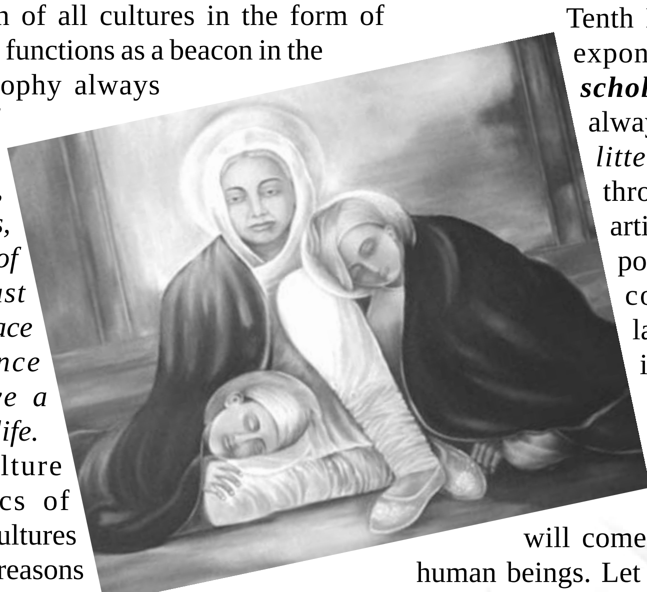

Sikh culture contains the basics of Punjabi and other cultures too. One of the main reasons of still existence and prosperity of the Gurmukhi script is due to Guru Granth Sahib. The Tenth Master himself was the greatest exponent of the culture as he was a ***scholar and multilingual poet***. He always *patronized poets, writers and litterateurs*. Culture is transmitted through communication. Writers or artists may not be vocal as those in politics or social life, but are able to convey their thoughts in the language of literature and art and inspire others. Their love is all-encompassing. A person without realizing love cannot become great or be sensitive towards society. The Almighty's blessings will come if we make the habit of loving human beings. Let us follow the ***great teachings of Dasam Patshah, "Jin Prem Kio Tin Hi Prabh Payeo", i.e., One Who Loves, Realises God.***

जनम गुरां दा पटना साहिब!

● अक्षपाद् गौतम

सिपाही संत दशमेश गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज। आज हमें जो बराबर सुनने को मिलता है, 'जो बोले सो निहाल, सत् श्री अकाल!' या फिर, 'वाहेगुरु जी की खालसा, वाहेगुरु जी की फतेह!' यह किसी एक व्यक्ति के कारण यदि संभव हो पाया तो वे, दशमे पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज ही हैं। जिस समय मुगलिया सल्तनत अपने उफान पर था उस समय उन्होंने डंके की चोट पर घोषणा की, 'जगे धर्म हिन्दू, तुरक धुंध भागे!' इस महान संत, सिख पंथ के दसवें गुरु व खालसा पंथ के संस्थापक गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज का जन्म, पौष शुक्ल सप्तमी संवत् 1723 विक्रमी, तदनुसार 22 दिसम्बर 1666 को बिहार के पटना में हुआ। गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज सिखों के दसवें और अंतिम गुरु थे। गोबिंद राय, श्री गुरू तेग बहादुर जी के बलिदान के उपरान्त 11 नवम्बर सन् 1675 को 10 वें गुरू बने। गोबिंद सिंह जी महाराज एक महान योद्धा, चिन्तक, कवि एवं आध्यात्मिक नेता थे। सन् 1699 में बैसाखी के दिन उन्होंने खालसा पंथ की स्थापना की जो सिखों के इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण दिन माना जाता है।

गुरु गोविंदजी के बारे में लाला दौलतराय, जो कि कट्टर आर्य समाजी थे, लिखते हैं 'मैं चाहता तो स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद, परमहंस आदि के बारे में काफी कुछ लिख सकता था, परंतु मैं उनके बारे में नहीं लिख सकता जो कि पूर्ण पुरुष नहीं हैं। मुझे पूर्ण पुरुष के सभी गुण गुरु गोविंदसिंह में मिलते हैं।' अतः लाला दौलतराय ने गुरु गोविंदसिंहजी के बारे में पूर्ण पुरुष नामक एक अच्छी पुस्तक लिखी है। इसी प्रकार मुहम्मद अब्दुल लतीफ भी लिखता है कि जब मैं गुरु गोविंदसिंहजी के व्यक्तित्व के बारे में सोचता हूँ तो मुझे समझ में नहीं आता कि उनके किस पहलू का वर्णन करूँ। वे कभी मुझे महाधिराज नजर आते हैं, कभी महादानी, कभी फकीर नजर आते हैं, कभी वे गुरु नजर आते हैं। गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज ने पवित्र (ग्रन्थ) गुरु ग्रंथ साहिब को पूरा किया तथा उन्हें गुरु रूप में प्रतिष्ठित किया। बचित्तर नाटक उनकी आत्मकथा है। यही उनके जीवन के विषय में जानकारी का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत भी माना जाता है। यह दसम ग्रन्थ का एक भाग है। दसम ग्रन्थ, गुरु गोबिन्द सिंह की कृतियों के संकलन है। दरअसल, सिख पंथ में किसी साकार भगवान की पूजा नहीं की जाती है। 'एक ओंकार' को अकाल पुरख की संज्ञा दी गई है। गुरुद्वाराओं में गुरुग्रंथ साहिब जी का प्रकाश किया जाता है, यानी उन्हीं की पूजा की जाती है। कुछ गुरुद्वाराओं में दशम ग्रन्थ गुरुग्रंथ साहिब जी के साथ दशम ग्रन्थ के प्रकाश का भी विधान है।

गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज ने अन्याय, अत्याचार और पापों को खत्म करने के लिए और धर्म की रक्षा के लिए मुगलों के साथ 14 युद्ध लड़े। धर्म की रक्षा के लिए समस्त परिवार का बलिदान किया, जिसके लिए उन्हें 'सरबंसदानी' (पूरे परिवार का दान करने वाला) भी कहा जाता है। इसके अतिरिक्त जनसाधारण में वे कलगीधर, दशमेश, बाजांवाले आदि कई नाम, उपनाम व उपाधियों से भी जाने जाते हैं। विश्व की बलिदानी परम्परा में अद्वितीय होने के साथ-साथ गुरु गोबिन्द सिंह एक महान लेखक, मौलिक चिन्तक तथा संस्कृत सहित कई भाषाओं के ज्ञाता थे। उन्होंने स्वयं कई ग्रन्थों की रचना की थी। वे विद्वानों के संरक्षक थे। कहां जाता है कि उन्होंने 52 कवि और साहित्य-मर्मज्ञों को अपने दरबार में संरक्षण दे रखा था। वे भक्ति तथा शक्ति के अद्वितीय संगम थे। इसीलिए उन्हें 'संत सिपाही' भी कहा जाता है। उन्होंने सदा प्रेम, सदाचार और भाईचारे का सन्देश दिया। किसी ने गुरुजी का

अहित करने की कोशिश भी की तो उन्होंने अपनी सहनशीलता, मधुरता, सौम्यता से उसे परास्त कर दिया। गुरुजी की मान्यता थी कि मनुष्य को किसी को डराना भी नहीं चाहिए और न किसी से डरना चाहिए। वे अपनी वाणी में उपदेश देते हैं, ***'भै काहू को देत नहि, नहि भय मानत आन।'*** वे बाल्यकाल से ही सरल, सहज, भक्ति-भाव वाले कर्मयोगी थे। उनकी वाणी में मधुरता, सादगी, सौजन्यता एवं वैराग्य की भावना कूट-कूटकर भरी थी। उनके जीवन का प्रथम दर्शन ही था कि ष्धर्म का मार्ग सत्य का मार्ग है और सत्य की सदैव विजय होती है।'

कई विद्वानों का मानना है कि गोबिंद राय लगभग 8 वर्षो तक पटना सिटी में रहे और पटना के स्वतंत्र चिंतन का प्रभाव उनके मन मस्तिष्क पर सदा के लिए अंकित हो गया। वैसे अधिकतर जानकारी का यह कहना है की पटना सिटी में गोविंद राय का परिवार 4 वर्ष तक ही रहा इसके बाद वर्ष 1670 में पंजाब लौट गया। मार्च 1672 में उनका परिवार हिमालय के शिवालिक पहाड़ियों में स्थित चक्क नानकी नामक स्थान पर आ गया था। चक्क नानकी ही आजकल आनन्दपुर साहिब कहलता है। यहीं पर इनकी शिक्षा आरम्भ हुई। उन्होंने फारसी, संस्कृत की शिक्षा ली और एक योद्धा बनने के लिए सैन्य कौशल सीखा। गोबिन्द राय जी नित्य प्रति आनदपुर साहब में आध्यात्मिक आनन्द बाँटते, मानव मात्र में नैतिकता, निडरता तथा आध्यात्मिक जागृति का सन्देश देते थे। आनन्दपुर वस्तुत: आनन्दधाम ही था। यहाँ पर सभी लोग वर्ण, रंग, जाति, सम्प्रदाय के भेदभाव के बिना समता, समानता एवं समरसता का अलौकिक ज्ञान प्राप्त करते थे। गोविन्द जी शान्ति, क्षमा, सहनशीलता की मूर्ति थे। इसी बीच वह दौर आया जो बालक गोबिंदराय का जीवन बदल दिया। काश्मीरी पण्डितों का एक जत्था, जबरन धर्म परिवर्तन करके मुसलमान बनाये जाने के विरुद्ध फरियाद लेकर गुरु तेग बहादुर जी के दरबार में हाजिर हुआ। जत्थे के मुखिया ने कहा कि हमारे सामने ये शर्त रखी गयी है कि है 'कोई ऐसा महापुरुष, जो इस्लाम स्वीकार नहीं कर अपना बलिदान दे सके, तो आप सब का भी धर्म परिवर्तन नहीं किया जाएगा।' उस समय गुरु गोबिंदराय मात्र नौ साल के थे। उन्होंने पिता गुरु तेग बहादुर जी से कहा, 'आपसे बड़ा महापुरुष और कौन हो सकता है!' कश्मीरी पण्डितों की फरियाद सुन उन्हें जबरन धर्म परिवर्तन से बचाने के लिए स्वयं इस्लाम न स्वीकारने के कारण 11 नवम्बर 1675 को औरंगजेब ने दिल्ली के चांदनी चौक में सार्वजनिक रूप से उनके पिता गुरु तेग बहादुर जी का सिर कटवा दिया। इसके पश्चात वैशाखी के दिन 29 मार्च 1676 को गोविन्द सिंह सिखों के दसवें गुरु घोषित हुए।

10वें गुरु बनने के बाद भी उनकी शिक्षा जारी रही। शिक्षा के अन्तर्गत उन्होनें लिखना-पढ़ना, घुड़सवारी तथा सैन्य कौशल सीखे 1684 में उन्होने 'चण्डी दी वार' की रचना की। 1685 तक वह यमुना नदी के किनारे पाओंटा नामक स्थान पर रहे। गुरु गोबिन्द सिंह की तीन पत्नियाँ थीं। 21 जून, 1677 को 10 साल की उम्र में उनका विवाह माता जीतो के साथ आनन्दपुर से 10 किलोमीटर दूर बसंतगढ़ में किया गया। उन दोनों के 3 पुत्र हुए जिनके नाम थे-जुझार सिंह, जोरावर सिंह, फतेह सिंह। 4 अप्रैल, 1684 को 17 वर्ष की आयु में उनका दूसरा विवाह माता सुन्दरी के साथ आनन्दपुर में हुआ। उनका एक बेटा हुआ जिसका नाम था अजित सिंह। 15 अप्रैल, 1700 को 33 वर्ष की आयु में उन्होंने माता साहिब देवन से विवाह किया। वैसे तो उनका कोई सन्तान नहीं था पर सिख पन्थ में उनकी भी भूमिका प्रभावशाली रहा है।

अप्रैल 1685 में, सिरमौर के राजा मत प्रकाश के निमंत्रण पर गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज ने अपने निवास को सिरमौर राज्य के पांओंटा शहर में स्थानांतरित कर दिया। सिरमौर राज्य के गजट के अनुसार, राजा भीम चंद के साथ मतभेद के कारण गुरु जी को आनंदपुर साहिब छोड़ने के लिए मजबूर किया गया था और वे वहाँ से टोका शहर चले गये। मत प्रकाश ने गुरु जी को टोका से सिरमौर की राजधानी नाहन के लिए आमंत्रित किया। नाहन से वह पांवटा के लिए रवाना हुऐ। मत प्रकाश ने गढ़वाल के राजा फतेह शाह के खिलाफ अपनी स्थिति मजबूत करने के उद्देश्य से गुरु जी को अपने राज्य में आमंत्रित किया था। राजा मत प्रकाश के अनुरोध पर गुरु जी ने पांवटा में बहुत कम समय में उनके अनुयायियों की मदद से एक किले का निर्माण करवाया। गुरु जी पांवटा में लगभग तीन साल रहे और कई ग्रंथों की रचना की।

सन 1687 में नादौन की लड़ाई में, गुरु गोबिंद सिंह, भीम चंद, और अन्य मित्र देशों की पहाड़ी राजाओं की सेनाओं ने अलिफ खान और उनके सहयोगियों की सेनाओ को हरा दिया था। विचित्र नाटक (गुरु गोबिंद सिंह द्वारा रचित आत्मकथा) और भट्ट वाहिस के अनुसार, नादौन पर बने व्यास नदी के तट पर गुरु गोबिंद सिंह आठ दिनों तक रहे और विभिन्न महत्वपूर्ण सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थानों का दौरा किया। भंगानी के युद्ध के कुछ दिन बाद, रानी चंपा (बिलासपुर की विधवा रानी) ने गुरु जी से आनंदपुर साहिब (या चक नानकी जो उस समय कहा जाता था) वापस लौटने का अनुरोध किया जिसे गुरु जी ने स्वीकार किया। वह नवंबर 1688 में वापस आनंदपुर साहिब पहुंच आ गए।

वर्ष 1695 में, दिलावर खान (लाहौर का मुगल सूबेदार) ने अपने बेटे हुसैन खान को आनंदपुर साहिब पर हमला करने के लिए भेजा। उस युद्ध में मुगल सेना हार गई और हुसैन खान मारा गया। हुसैन की मृत्यु के बाद, दिलावर खान ने अपने आदमियों जुझार हाडा और चंदेल राय को शिवालिक भेजा। हालांकि, वे जसवाल के गज सिंह से हार गए और वहीं से लौट गए। पहाड़ी क्षेत्र में इस तरह के घटनाक्रम मुगल सम्राट औरंगजेब लिए चिंता का कारण बन गए और उसने क्षेत्र में मुगल अधिकार बहाल करने के लिए सेना को अपने बेटे के साथ भेजा। इस दौरान कई लड़ाइयां

हुई। गुरु जी जीतते रहे। गुरु गोबिंद सिंह जी का नेतृत्व सिख समुदाय के इतिहास में बहुत कुछ नया ले कर आया। उन्होंने सन् 1699 में बैसाखी के दिन खालसा जो की सिख धर्म के विधिवत् दीक्षा प्राप्त अनुयायियों का एक सामूहिक रूप है, उसका निर्माण किया। दरअसल, उन्होंने सिख समुदाय के एक सभा में सबके सामने पूछा-'कौन अपने सर का बलिदान देना चाहता है?' उसी समय एक स्वयंसेवक इस बात के लिए राजी हो गया और गुरु गोबिंद सिंह उसे तम्बू में ले गए और कुछ देर बाद वापस लौटे एक खून लगे हुए तलवार के साथ। गुरु ने दोबारा उस भीड़ के लोगों से वही सवाल दोबारा पुछा और उसी प्रकार एक और व्यक्ति राजी हुआ और उनके साथ गया पर वे तम्बू से जब बहार निकले तो खून से सना तलवार उनके हाथ में था। उसी प्रकार पांचवा स्वयंसेवक जब उनके साथ तम्बू के भीतर गया, कुछ देर बाद गुरु गोबिंद सिंह सभी जीवित सेवकों के साथ वापस लौटे और उन्होंने उन्हें पंज प्यारे या पहले खालसा का नाम दिया। उसके बाद गुरु गोबिंद जी ने एक लोहे का कटोरा लिया और उसमें पानी और चीनी मिला कर दुधारी तलवार से घोल कर अमृत का नाम दिया। पहले 5 खालसा के बनाने के बाद उन्हें छठवां खालसा का नाम दिया गया जिसके बाद उन्होंने अपना नाम गुरु गोबिंद राय से गुरु गोबिंद सिंह रख दिया और सभी गुरुसिखों को नाम के आगे सिंह लगाने का आदेश दिया। उन्होंने अपने अनुयायियों को पांच ककारों का महत्व समझाया और कहा-हर गुरुपुत्रों को केश, कंघा, कड़ा, किरपान, कच्चेरा रखना अनिवार्य है। इधर 27 दिसम्बर सन् 1704 को दोनों छोटे साहिबजादे, जोरावर सिंह व फतेह सिंहजी को दीवारों में चुनवा दिया गया। जब यह हाल गुरुजी को पता चला तो उन्होंने औरंगजेब को एक जफरनामा (विजय की चिट्ठी) लिखा, जिसमें उन्होंने औरगंजेब को चेतावनी दी कि तेरा साम्राज्य नष्ट करने के लिए खालसा पंथ तैयार हो गया है।

8 मई, सन् 1705 में 'मुक्तसर' नामक स्थान पर मुगलों से भयानक युद्ध हुआ, जिसमें गुरुजी की जीत हुई। अक्टूबर सन् 1706 में गुरुजी दक्षिण में गए जहाँ पर आपको औरंगजेब की मृत्यु का पता लगा। औरंगजेब ने मरते समय एक शिकायत पत्र लिखा था। हैरानी की बात है कि जो सब कुछ लुटा चुका था, (गुरुजी) वो फतहनामा लिख रहे थे व जिसके पास सब कुछ था वह शिकस्त नामा लिखा। इसका कारण था सच्चाई। गुरुजी ने युद्ध सदैव अत्याचार के विरुद्ध लड़े, न कि अपने निजी लाभ के लिए। औरंगजेब की मृत्यु के बाद गुरुजी ने बहादुरशाह को बादशाह बनाने में मदद की। गुरुजी व बहादुरशाह से संबंध अत्यंत मधुर थे। इन संबंधों को देखकर सरहंद का नवाब वजीर खाँ घबरा गया। अत: उसने दो पठान गुरुजी के पीछे लगा दिए। इन पठानों ने गुरुजी पर धोखे से घातक वार किया, जिससे 7 अक्टूबर 1708 में गुरुजी (गुरु गोबिन्द सिंह जी) नांदेड साहिब में दिव्य ज्योति में लीन हो गए। अंत समय आपने सिक्खों को गुरुग्रंथ साहिब को अपना गुरु मानने को कहा व खुद भी माथा टेका। गुरुजी के बाद माधोदास ने, जिसे गुरुजी ने सिक्ख बनाया बंदासिंह बहादुर नाम दिया था, सरहंद पर आक्रमण किया और अत्याचारियों की ईंट से ईंट बजा दी।

✯ **गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज की रचनाएं :** - गुरु गोबिंद सिंह महाराज ने अपने हाथों से कई रचनाओं की है जिसे दशम ग्रंथ में संकलित किया गया है। दशम ग्रन्थ में प्राचीन भारत की सन्त-सैनिक परम्परा की कथाएँ हैं। गुरुजी सिंखों के दसवें गुरु होने के साथ-साथ एक महान योद्धा, कवि, भक्त एवं आध्यात्मिक नेता, मौलिक चिन्तक व संस्कृत, ब्रजभाषा, फारसी सहित कई भाषाओं के ज्ञाता भी थे। वे बाल्यकाल से ही सरल, सहज, भक्ति-भाव वाले कर्मयोगी थे। गुरु गोबिन्द सिंह जी ने अपने जीवनकाल में अनेक रचनाएँ की जिनकी छोटी छोटी पोथियां बना दीं। उनके प्रयाण के बाद उन की धर्म पत्नी माता सुन्दरी जी की आज्ञा से भाई मणी सिंह खालसा और अन्य खालसा भाइयों ने उनकी सारी रचनाओं को इकट्ठा किया और एक जिल्द में सजाया।

☞ **जाप साहिब :-** जापु साहिब या जाप साहिब, दशम ग्रन्थ की प्रथम वाणी है। यह सिखों का प्रात: की प्रार्थना है। इसका संग्रह भाई मणि सिंह ने 1734 के आसपास किया था। एक निरंकार के गुणवाचक नामों का संकलन।

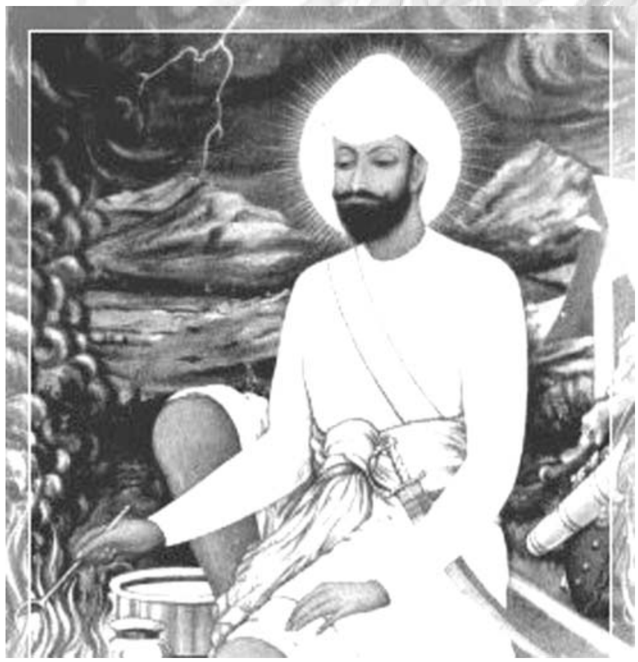

☞ **अकाल स्तुति :**- ईश्वर की सर्वव्यापकता का चित्रण करती कृति जिसमें प्रभु की तीनों भूमिकाओं (उत्पन्न करने वाला, पालन करने वाला और संहारक) का उल्लेख है।

☞ **बचित्तर नाटक :**- बचित्र नाटक या बिचित्तर नाटक गुरु गोबिन्द सिंह द्वारा रचित दशम ग्रन्थ का एक भाग है। वास्तव में इसमें कोई 'नाटक' का वर्णन नहीं है बल्कि गुरुजी ने इसमें उस समय की परिस्थितियों तथा इतिहास की एक झलक दी है और दिखाया है कि उस समय हिन्दू समाज पर पर मंडरा रहे संकटों से मुक्ति पाने के लिये कितने अधिक साहस और शक्ति की जरूरत थी।

☞ **चंडी चरित्र :**- चण्डी चरित्र सिखों के दसवें गुरु गोबिन्द सिंह जी द्वारा रचित देवी चण्डिका की एक स्तुति है। गुरु गोबिन्द सिंह एक महान योद्धा एवं भक्त थे। वे देवी के शक्ति रुप के उपासक थे। यह स्तुति दशम ग्रंथ के 'उक्ति बिलास' नामक भाग का एक हिस्सा है। गुरुबाणी में हिन्दू देवी-देवताओं का अन्य जगह भी वर्णन आता है। 'चण्डी' के अतिरिक्त 'शिवा' शब्द की व्याख्या ईश्वर के रुप में भी की जाती है। 'महाकोश' नामक किताब में 'शिवा' की व्याख्या परब्रह्म की शक्ति के रुप में की गई है। देवी के रूप का व्याख्यान गुरु गोबिंद सिंह जी यूं करते हैं :-

☞ **चंडी दी वार :**- चंडी दी वार एक वार है जो दशम ग्रंथ के पंचम अध्याय में है। इसे 'वार श्री भगवती जी' भी कहते हैं।

☞ **ज्ञान परबोध :**- राज धर्म, दंड धर्म, भोग धर्म और मोक्ष धर्म को चार प्रमुख कर्तव्यों के तौर पर इंगित करती विशिष्ट कृति।

☞ **चौबीस अवतार :**- विष्णु के चौबीस अवतारों का वर्णन है। नारायण, मोहिनी, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, रूद्र, धनवन्तरी, कृष्ण आदि चौबीस अलग-अलग अवतारों की कथाएं।

☞ **ब्रह्मा अवतार :** इस पुस्तक में ब्रह्मा के सात अवतारों का चित्रण है।

☞ **रूद्र अवतार :**- दत्तात्रेय और पारसनाथ के अवतारों पर केन्द्रित कृति।

☞ **शस्त्र माला :**- विभिन्न शस्त्रों के नाम और प्रकार का उल्लेख।

☞ **जफरनामा :**- जफरनामा अर्थात 'विजय पत्र' गुरु गोविंद सिंह द्वारा मुगल शासक औरंगजेब को लिखा गया था। जफरनामा, दसम ग्रंथ का एक भाग है और इसकी भाषा फारसी है। भारत के गौरवमयी इतिहास में दो पत्र विश्वविख्यात हुए। पहला पत्र छत्रपति शिवाजी द्वारा राजा जयसिंह को लिखा गया तथा दूसरा पत्र गुरु गोविन्द सिंह द्वारा शासक औरंगजेब को लिखा गया, जिसे जफरनामा अर्थात 'विजय पत्र' कहते हैं। निःसंदेह गुरु गोविंद सिंह का यह पत्र आध्यात्मिकता, कूटनीति तथा शौर्य की अद्भुत त्रिवेणी है।

✯ **अथ पख्याँ चरित्र लिख्यते :**- बुद्धिओं के चाल चलन के ऊपर विभिन्न कहानियों का संग्रह।

✯ **खालसा महिमा ::**- खालसा की परिभाषा और खालसा के कृतित्व।

गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज के मर्यादा का व्याप मानव मात्र के हितों की रक्षा था। इसके लिए उन्होंने अपने परिवार के साथ अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया। अंत में यह कहकर इस आलेख को पूरा करता हूं जिसमें गुरु जी ने साफ शब्दों में निडरता और संघर्ष की घोषणा की है।

''देह शिवा वर मोहि इहै,
शुभ कर्मन ते कबहूँ न टरौं।
न डरौं अरि सौं जब जाय लड़ौं, निश्चय कर अपनी जीत करौं।
अरु सिख हौं अपने ही मन कौ,
इह लालच हौं गुन तौ उचरौं।
जब आव की अउध निदान बनै, अति ही रण मै तब जूझ मरौं''

✯✯✯जो बोले सो निहाल सत् श्री अकाल॥✯✯✯

"रंगरेटा गुरु का बेटा"

बाबा जीवन सिंह जी का बलिदान

● गौतम चौधरी

खालसा पंथ के संस्थापक सिपाही संत, दशमेश, दशमे पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज को तो सब जानते हैं लेकिन उस गुरु के बेटे की चर्चा बहुत कम होती है, जिसने पंथ के लिए सब कुछ कुर्बान कर दिया। उस गुरु के बेटे का नाम भाई जीवन सिंह है। इन्हें बाबा जीवन सिंह के नाम से भी जाना जाता है। इनका जन्म 13 दिसंबर, वर्ष 1661 को पटना में ही हुआ था। बाबा जीवन सिंह एक सिख सेनापति और गुरु गोबिंद सिंह के साथी थे। सिख उन्हें गुरु तेग बहादुर का कटा हुआ सिर आनंदपुर साहिब लाने के लिए याद करते हैं, ताकि मुगलों के कब्जे में रहने के बजाय उसका अंतिम संस्कार किया जा सके।

भाई जैता का जन्म 1661 में पटना, बिहार (भारत) में सदानंद और माता प्रेमो के घर हुआ था, जो सर्वेश्वरवाद और अद्वैतवाद में पारलौकिकता और अन्तर्निहितता की समर्थक थीं। वे पटना में पले-बढ़े जहाँ उन्होंने विभिन्न हथियारों का प्रशिक्षण लिया और युद्ध कला सीखी। इसके अलावा, उन्होंने घुड़सवारी, तैराकी, संगीत और कीर्तन सीखा। जब पटना में रहने वाले सिख परिवार पंजाब लौट आए, तो भाई जैता और उनका परिवार रामदास गाँव चले गए और बाबा बुद्ध के परपोते भाई गुरदित्ता के साथ रहने लगे। बाद में, जैता ने सुरजन सिंह की बेटी बीबी राज कौर से शादी कर ली। जब सिखों के नौवें गुरु, गुरु तेग बहादुर को दिल्ली के चांदनी चौक में मुगलों ने शहीद कर दिया, तो भाई जीवन सिंह ने दो अन्य सिखों के साथ मिलकर भीड़ से उनके क्षत-विक्षत शरीर (गुरु जी का शीश) को बरामद किया और उसे गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज के पास वापस ले आए। इसके बाद गुरु गोबिंद ने उन्हें मजहबी ('वफादार') की उपाधि से सम्मानित किया और सभी मजहबी सिखों से ऊँची आवाज में कहा, 'रंगरेटे गुरु के बेटे' (रंगरेटा गुरु के पुत्र हैं)।

बाबा जीवन सिंह आनंदपुर साहिब की

निकासी के दौरान गुरु के साथ थे और उन्होंने भंगानी, नादौन, आनंदपुर साहिब, बजरूर, निर्मोहगढ़ की लड़ाई, आनंदपुर साहिब के सभी चार युद्ध, बंसाली/कलमोट, सरसा और चमकौर की लड़ाई लड़ी। भाई जीवन सिंह ने भी अपनी महान कृति श्री गुरु कथा में गुरु गोबिंद सिंह के कारनामों के बारे में लिखा है। 1704 या 1705 में उनकी मृत्यु के बाद चमकौर में गुरुद्वारा शहीद बुर्ज साहिब में उनके सम्मान में एक मकबरा बनाया गया।

भाई जैता जी (जिन्हें भाई जीवन सिंह के नाम से भी जाना जाता है) का इतिहास 'रंगरेटा गुरु का बेटा' की उपाधि से जुड़ा है। गुरु तेग बहादुर जी के शीश को मुगलों के कब्जे से निकालकर, 322 किलोमीटर की कठिन यात्रा करके, श्री गुरु गोबिंद सिंह जी तक पहुंचाना उनकी भक्ति और साहस का प्रमाण था। गुरु साहिब ने उनकी भक्ति और साहस से प्रसन्न होकर उन्हें 'रंगरेटा गुरु का बेटा' की उपाधि दी और उनके इस कार्य ने धर्म की रक्षा के लिए इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया। भाई जैता जी ने छोटी उम्र में ही गुरुओं की शिक्षाओं को आत्मसात किया और गुरु तेग बहादुर जी के प्रति गहरी भक्ति का प्रदर्शन किया।

गुरु तेग बहादुर जी की शहादत के बाद, भाई जैता जी ने मुगलों के कब्जे से उनके शीश को बड़ी बहादुरी से निकाला और श्री गुरु गोबिंद सिंह जी तक पहुँचाया। यह उनके जीवन का सबसे साहसिक कार्य था, जिसके बाद उनका नाम अमर हो गया। जब भाई जैता जी शीश लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के पास पहुँचे, तो गुरु साहिब ने उनकी भक्ति और साहस को देखकर उन्हें 'रंगरेटा गुरु का बेटा' कहा। भाई जैता जी ने श्री गुरु हरगोबिंद सिंह जी के शासनकाल में भी कई महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाईं। उन्होंने अमृतसर में पवित्र कुंड की खुदाई और हरिमंदिर के निर्माण में भी योगदान दिया। उन्होंने श्री गुरु हरगोबिंद सिंह जी के साथ युद्ध में भी भाग लिया और 16 दिसंबर 1634 को मेराज के युद्ध में वीरगति प्राप्त की।

बाबा जीवन सिंह का बिहार के साथ गहरा रिश्ता था। दरअसल, उनकी मां बिहारन थी। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि जब गुरु तेग बहादुर जी का परिवार पटना आ रहा था उनके साथ एक बेहद समझदार और साहसी सेवक, सदानंद जी भी उन लोगों के साथ पटना आ गए। सदानंद जी वाल्मीकि समाज से अपना तालुकात रखते थे लेकिन सखी में किसी प्रकार का जातीय भेदभाव न होने के कारण वे गुरु परिवार के सबसे निकटस्थ हो गए। सदानंद जी उन दिनों कुंवारे थे। इसी बीच गुरु परिवार से एक ब्राह्मण परिवार की निकटता बढ़ी। बाद में वह ब्राह्मण परिवार गुरु तेग बहादुर जी का शिष्य हो गया। इस परिवार की कन्या से सदानंद जी की शादी कराई गई। जिसे गुरु माता ने खुद नाम दिया और प्रेमो कह कर पुकारना प्रारंभ किया। मतलब यह है की गुरु गोविंद सिंह महाराज जी का तो केवल जन्म पटना की धरती पर हुआ था लेकिन बाबा जीवन सिंह का ननिहाल भी पटना में ही था। इसलिए बाबा जीवन सिंह बिहार और पटना के लिए बेहद महत्वपूर्ण हो जाते हैं। भाई जीवन सिंह जी का सिखी में अतुलनीय योगदान है। उनके त्याग और बलिदान सिख पंथ को सदा प्रकाशमान बनता रहेगा। बाबा जीवन सिंह अपना पूरा जीवन गुरू गोबिंद सिंह जी महाराज के सानिध्य में बिताया। भाई बाबा जीवन सिंह जी के दो पुत्र थे लेकिन सखी के लिए दोनों पुत्रों ने भी अपना जीवन बलिदान कर दिया। बाबा जीवन सिंह दो भाई थे एक भाई का परिवार आज भी आनंदपुर साहब में विराजमान है लेकिन बाबा जीवन सिंह अपनी कृति और बलिदान के लिए अमर होकर आज भी सिखों का मार्गदर्शन कर रहे हैं। ●

जो बोले सो निहाल, सत श्री अकाल!

गुरुमय हुई दिल्ली

● संजय कुमार सिन्हा

दिल्ली के लाल किला पर तीन दिवसीय श्री गुरु तेग बहादुर साहब जी के कार्यक्रम मनाई गई, दिल्ली सरकार ने तो 25 नवंबर को छुट्टी भी घोषित कर दिया था और पुरी सरकार इस कार्यक्रम में सहयोग किया। गुरु तेग बहादुर शहीदी दिवस, जो हर वर्ष 24 नवंबर को मनाई जाती है, भारतीय इतिहास की उस अमर गाथा का स्मरण कराता है जब धर्म की रक्षा के लिए एक महान संत ने अपना सिर सौंप दिया। यह दिन न केवल सिख समुदाय के लिए, बल्कि समस्त भारतवर्ष के लिए एक प्रेरणास्रोत है, जहां स्वाभिमान एवं अखंड राष्ट्रवादी विचारधारा की जड़ें बहुत गहरी हैं। श्री गुरु तेग बहादुर साहब की 350वीं बलिदान दिवस, 1675 ईस्वी का वह काला अध्याय, जब दिल्ली के चांदनी चौक में श्री गुरु तेग बहादुर साहब को बड़ी क्रूरता से शहीद कर दिया गया, भारतीय इतिहास की एक ऐसी घटना है जो हिंदू-सिक्खी एकता का प्रतीक बनी। राष्ट्रवाद का अर्थ केवल सीमाओं की रक्षा नहीं, बल्कि सांस्कृतिक एकता, धार्मिक सहिष्णुता और त्याग की भावना से ओत-प्रोत है। श्री गुरु तेग बहादुर जी का बलिदान सिख व हिंदू धर्म की रक्षा के लिए था, जो मुगल सम्राट क्रुरुर शासक औरंगजेब की जबरन धर्मांतरण नीति के विरुद्ध खड़ा था। यह घटना हमें सिखाती है कि राष्ट्र की रक्षा में जाति, धर्म या समुदाय का भेदभाव नहीं होता। आज, जब भारत दुनिया के पटल पर अपनी सांस्कृतिक शक्ति का प्रदर्शन कर रहा है, तब यह दिवस हमें याद दिलाता है कि असली राष्ट्रवाद त्याग और एकजुटता में निहित है।

श्री गुरु तेगबहादुर जी ने स्वयं कहा था- ***'तिलक जनेऊ जो राखे, तन मन धन सब कुछ होउ"*** अर्थात् जो तिलक और

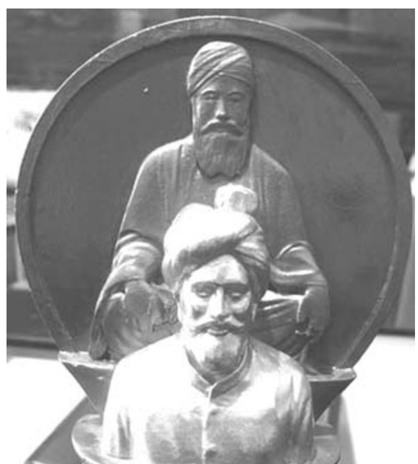

जनेऊ की रक्षा करे, उसके लिए शरीर, मन और धन सब कुछ समर्पित। सनातन के आह्वान पर श्री गुरु जी ने औरंगजेब को ललकारा और

परिणामस्वरूप उनका सिर कलम हो गया। लेकिन यह कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। भाई जैता जी, जिन्हें बाद में भाई जीवन सिंह कहा गया ने श्री गुरु जी के सिर को गोद में लपेटकर आनंदपुर साहिब की ओर प्रस्थान किया, ताकि दसवें गुरु गोबिंद सिंह जी तक वह पहुंच सके। रास्ते में मुगल सैनिकों ने पिछा करने लगा। वे गुरु जी के सिर को हथियाना चाहते थे, ताकि सिख धर्म की गरिमा को कुचल सकें। इसी संकट की घड़ी में हरियाणा के सोनीपत जिले के बधखलसा (तत्कालीन राय गढ़ी) गांव में एक साधारण जाट किसान परिवार ने इतिहास रच दिया। वह परिवार था चौधरी कुशल सिंह दहिया जी का, जिन्होंने राष्ट्र के हित में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

भारतीय इतिहास की एक ऐसी घटना है जो हिंदू-सिक्खी एकता का प्रतीक बनी। भारतीय इतिहास की उस अमर गाथा का स्मरण कराता है जब धर्म की रक्षा के लिए एक महान संत ने अपना सिर सौंप दिया। यह दिन न केवल सिख समुदाय के लिए, बल्कि समस्त भारतवर्ष के लिए एक प्रेरणास्रोत है, जहां राष्ट्रवादी विचारधारा की जड़ें गहरी हैं। जब भारत वैश्विक पटल पर अपनी सांस्कृतिक शक्ति का प्रदर्शन कर रहा है, यह दिवस हमें याद दिलाता है कि असली

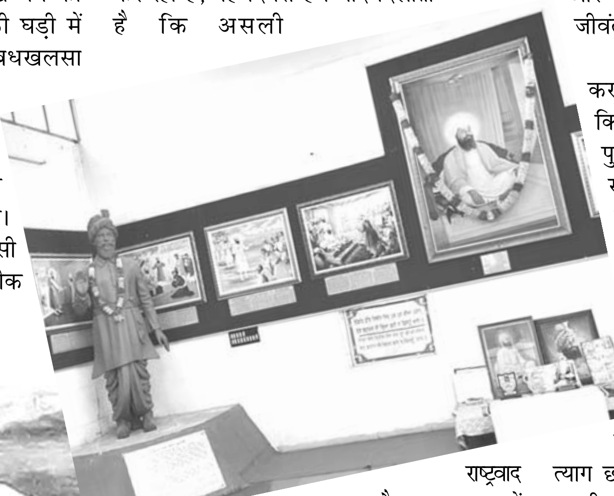

राष्ट्रवाद त्याग और एकजुटता में निहित हैं, लेकिन यह कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। कुशल सिंह दहिया, दहिया खाप के मुखिया थे, एक साहसी और धर्मनिष्ठ हिंदू जाट। उनका जन्म नाहरी गांव में हुआ था, लेकिन वे राय गढ़ी में बस गए थे। प्रकृति ने उन्हें गुरु तेग बहादुर जी से इतना मिलता-जुलता रूप दिया था कि दूर से देखने पर कोई भेद न कर सके। जब मुगल सैनिक गांव को घेर चुके थे और भाई जैता जी छिपे हुए थे, तो कुशल सिंह ने देखा कि स्थिति भयावह है। सैनिकों ने धमकी दी- या तो गुरु का सिर दो या पूरा गांव जला देगें। कुशल सिंह के मन में एक क्रांतिकारी विचार कौंधा। उन्होंने सोचा, यदि मेरा सिर गुरु जी के सिर की जगह दे दिया जाए, तो भाई जैता जी सुरक्षित निकल सकेंगे और गांव भी बच जाएगा। यह निर्णय केवल एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि पूरे परिवार का था। कुशल सिंह की पत्नी और पुत्र उनके साथ थे और इस बलिदान ने हिंदू-सिख एकता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। आज भी बधखलसा गांव में कुशल सिंह का स्मारक और संग्रहालय खड़ा है, जो इस गाथा को जीवंत रखें हुए है।

कुशल सिंह के परिवार का जिक्र करते हुए हम देखते हैं कि यह बलिदान कितना पारिवारिक था। उनके सबसे बड़े पुत्र, जिनका नाम इतिहासकारों द्वारा विभिन्न रूपों में उल्लेखित किया है। कुछ ग्रंथों में उन्हें 'रघुबीर' कहा गया है, वह उस समय युवावस्था में थे। जब कुशल सिंह ने अपना निर्णय सुनाया, तो परिवार में हड़कंप मच गया। पत्नी ने रोते हुए कहा, "स्वामी जी, यह क्या कह रहे हो? हमारा परिवार तो उजड़ जाएगा।" लेकिन कुशल सिंह ने दृढ़ता से उत्तर दिया, "माता, राष्ट्र की रक्षा में परिवार का त्याग छोटा है। गुरु जी ने हिंदू धर्म बचाया, अब हमारी बारी है।" सबसे कठिन क्षण आया जब कुशल सिंह ने अपने पुत्र को बुलाया। उन्होंने कहा, "बेटा, तू ही मेरा सिर काट, ताकि यह मुगलों को धोखा दे सके। कपास में लपेटकर भाई जैता जी को दे देना।" पुत्र स्तब्ध रह गया। उसके मन में भय, संकोच और पिता के प्रति प्रेम का द्वंद्व था। यहां बलिदान को लेकर पिता-पुत्र के बीच एक गहन बहस छिड़ गई, जो राष्ट्रवादी विचारधारा की गहराई को दर्शाती है। पुत्र ने विरोध किया, "पिता जी, मैं कैसे करूंगा यह? आपका सिर काटना तो मेरे लिए मृत्यु के समान है। मैं युवा हूं, मैं लड़ाई लड़ लूंगा मुगलों से। या सिर ही उन्हें चाहिए तो मेरा सिर क्यों नहीं या फिर कोई अन्य उपाय सोचें।"●

श्री गुरु तेग बहादुर साहब जी की शहादत के 350वीं वर्षगांठ के अवसर पर

"नौवीं पातशाही शहीदी समागम" का आयोजन

● **संजय कुमार सिन्हा**

दिल्ली के लालकिले से शुरू हुआ श्री गुरु तेगबहादुर साहब की 350 वी शहीदी दिवस जो 23 नवंबर से 25 नवंबर एवं 27 नवंबर को दिल्ली के विज्ञान भवन में नौवीं पातशाही शहीदी समागम मनाई गई और आज दिल्ली के कांस्टिट्यूशन कल्ब से सिखों के दशमे गुरु श्री गुरु गोविंद सिंह साहब जी के समान में **'गुरु गोविंद सिंह केवल सच सम्मान-2025'** कार्यक्रम आज 21 दिसंबर, 2025 को कांस्टिट्यूशन कल्ब में मनाई जा रही है। जो कि पिछले एक महीने से दिल्ली की हिन्दू सिख परंपरा की संस्कृति वाली दिल्ली की सूझबूझ वाले समझदार जनता श्री गुरु परंपरा के इतिहास को लोगों तक पहुचाने की काम कर रहे हैं, वो भी वैसे समय में जब पढ़ा-लिखा डाक्टर आंतकी दिल्ली शहर के दिल चांदनी चौक लालकिले पर 10 नवंबर को बहुत बड़ा विस्फोट कर चुका हैं।

दिल्ली के विज्ञान भवन में 27 नवंबर को नौवीं पातशाही साहिब श्री गुरु तेग बहादुर साहब जी की शहादत के 350वीं वर्षगांठ के अवसर पर "नौवीं पातशाही शहीदी समागम" का आयोजन किया गया। "साहिब श्री गुरु तेग बहादुर जी शहीदी 350वाँ साल आयोजन समिति, दिल्ली" के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में डॉ. चरन सिंह (पूर्व अध्यक्ष, पंजाब एंड सिंध बैंक) मुख्य अतिथि तथा डॉ. कृष्ण गोपाल (सह सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) मुख्य वक्ता तथा प्रो. जगबीर सिंह विशिष्ट वक्ता थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता आयोजन समिति के अध्यक्ष जस्टिस तलवंत सिंह (सेवानिवृत्त), दिल्ली उच्च न्यायालय ने की। इस समागम को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. चरन सिंह ने कहा कि श्री गुरु तेग बहादुर साहब ने अपने बलिदान से समूचे संसार को संदेश दिया है कि आध्यात्मिकता को भौतिकता का मार्गदर्शक होना चाहिए। उन्होंने मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर देने का संदेश दिया है। डॉ. चरन सिंह ने कहा कि श्री गुरु तेग बहादुर जी के बलिदान दिवस पर अयोध्या में श्री राम मंदिर का ध्वजारोहण होना हम सब की अटूट एकात्मता एवं धर्म की विजय का प्रतीक है। इस अवसर पर मुख्य वक्ता डॉ. कृष्ण गोपाल ने कहा कि श्री गुरु तेग बहादुर जी की शहादत की पृष्ठभूमि को समझने की जरूरत है। यह संघर्ष किसी भी सभ्यता के साथ समन्वय न करने वाली आक्रमणकारी विचारधारा के साथ भारतीय परंपरा के विचार का था। भारतीय विचार मानता है की हजारों मत एक साथ मिलकर रह सकते हैं। आक्रमणकारी यहां के लोगों को मतांतरित करने के उद्देश्य से आए थे। श्री गुरु नानक देव

जी ने बाबर की सेना को पापियों की बारात और उसे कसाई राजा बताया। 1669 मे औरंगजेब ने मंदिरों गुरुकुलों को ध्वस्त करने और हिंदुओं पर जजिया कर लगाने का आदेश जारी किया तब श्री गुरु तेग बहादुर जी ने इसके विरुद्ध समाज के जागरण हेतु आत्मोत्सर्ग का निर्णय किया। यहां बात औरंगजेब की नहीं बल्कि असहिष्णुता के विरुद्ध संघर्ष की है जिसकी सीख श्री गुरु परंपरा ने दी है।डॉ. कृष्ण गोपाल ने कहा कि गुरुओं की सीख है कि समाज को सभी प्रकार के भय से मुक्त होना चाहिये चाहे वह मृत्यु का ही भय हो और अत्याचार के विरूद्ध मिलकर संघर्ष करना चाहिए। डॉ कृष्ण गोपाल ने कहा की विचारधारा की वह लड़ाई आज भी जारी है जिसमें एक वर्ग किसी भी कीमत पर अपनी बात मनवाने पर अड़ा हुआ है, जबकि दूसरा वर्ग सब को साथ लेकर चलने की बात करता है। दुर्भाग्य की बात है कि औरंगजेब को महान मानने की विचारधारा इस देश में आज भी मौजूद है और उसकी महानता का गुणगान करने वाले बड़े-बड़े लोग हैं जिन्हें यह समझना चाहिए कि इतिहास को छिपाने से कुछ नहीं होगा। यही वह असहिष्णु विचारधारा है, जिसके विरुद्ध श्री गुरु तेग बहादुर जी ने अपनी शहादत दी थी। इसी असहिष्णु विचारधारा ने देश का बंटवारा कर दिया।समागम को संबोधित करते हुए प्रोफेसर जगबीर सिंह ने कहा कि आज भी श्री गुरु तेग बहादुर जी के बलिदान के बारे में जानकारी का अभाव है। उन्होंने कहा कि भारत में जन्मे सभी धर्म परंपराओं से अलग करके सिख धर्म को नहीं देखा जाना चाहिए।

आयोजन समिति के अध्यक्ष जस्टिस तलवंत सिंह ने समागम को संबोधित करते हुए कहा कि श्री गुरु तेग बहादुर जी के शहादत का दिन हमारे लिए आत्ममंथन का दिन है कि हम उनकी शहादत के संदेश को जीवन में उतरें। श्री गुरु तेग बहादुर जी के संदेशों की याद दिलाते हुए उन्होंने ऐसे भारत का निर्माण करने का संकल्प लेने की बात कही जहां वसुधैव कुटुंबकम, सर्वधर्म समभाव, वैश्विक शांति और सहिष्णुता सर्वोपरि हो।

इस शहीदी समागम की आयोजन समिति मे दिल्ली के सभी मत, पंथ, समुदायों जैसे कि वाल्मीकि समाज, संत रविदास समाज, बौद्ध समाज, जैन समाज एवं बंजरा समाज आदि की सहभागिता रही। सर्व हिन्दू समाज के लोगों ने इस कार्यक्रम के माध्यम से श्री गुरु तेग बहादुर जी महाराज के बलिदान, मानवता, धर्म रक्षा और सहिष्णुता के मूल्यों को कार्यक्रम के माध्यम से श्री गुरु तेग बहादुर जी महाराज के बलिदान, मानवता, धर्म रक्षा और सहिष्णुता के मूल्यों को स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। "साहिब श्री गुरु तेग बहादुर साहब जी'' के असहिष्णु विचारधारा के विरुद्ध संघर्ष और भारतीय परंपरा के सह-अस्तित्व संदेश पर चर्चा सर्व समाज की सहभागिता, श्री गुरु तेग बहादुर साहब जी को सामूहिक श्रद्धांजलि एक सच्ची मानवता की विश्वास एवं प्रेम है।●

बीजेपी-आरएसएस बिहार चुनाव सफलता से सीख लेकर यूपी में बना रहे व्यापक चुनावी मॉडल

● अजय कुमार (वरिष्ठ पत्रकार)

उत्तर प्रदेश में 2027 के विधानसभा चुनाव में अभी एक साल से ज्यादा समय बाकी है, लेकिन राजनीतिक गतिविधियाँ अब से ही पूरी तरह सक्रिय हो गई हैं। बीजेपी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने चुनाव की तैयारियों को लेकर तेजी से काम शुरू कर दिया है। बिहार चुनाव में मिली बीजेपी की जबरदस्त सफलता ने संघ और पार्टी दोनों को यूपी में रणनीति बनाने के लिए प्रेरित किया है। 2024 के लोकसभा चुनाव में यूपी में बीजेपी की सीटें अपेक्षा से कम रही थीं और इसके पीछे विपक्षी समाजवादी पार्टी की बढ़ती ताकत और स्थानीय मुद्दों की भूमिका थी। यही वजह है कि अब संघ और बीजेपी ने यूपी में बिहार मॉडल को लागू करने की तैयारी शुरू कर दी है। बीजेपी के संगठन महामंत्री बीएल संतोष, संघ के सरकार्यवाह अरुण कुमार और अन्य वरिष्ठ पदाधिकारियों की बैठकों में यूपी के प्रभारी मंत्रियों को निर्देश दिया गया कि वे अपने जिले में संघ के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं के साथ नियमित रूप से समन्वय बैठक करें। स्थानीय मुद्दों, विकास कार्यों और कमजोर कड़ियों की पहचान के लिए विस्तृत सूची तैयार की जा रही है, ताकि समय रहते सुधार किया जा सके। संघ अपने शताब्दी वर्ष के तहत बड़े पैमाने पर हिंदू सम्मेलनों की श्रृंखला आयोजित करने जा रहा है, जिनमें लखनऊ में प्रस्तावित विराट हिंदू सम्मेलन भी शामिल है, जो चुनावी तैयारियों का हिस्सा माना जा रहा है।

बिहार चुनाव में संघ की रणनीति बेहद प्रभावी रही। 2020 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी का वोट शेयर 42.56% था, जो 2025 में बढ़कर 48.44% तक पहुंच गया। जेडीयू का वोट शेयर 32.83% से